ISSN 2349-6614

फरवरी, 2018

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 15 अंक 12 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

रेतीले धोरों पर खुशहाली की नई इबारत

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया 16 जनवरी 2018 को शुभारंभ

समारोह में उपस्थित पेट्रोलियम मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान, मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे व अन्य।

2022 तक पूरा हो जाएगा रिफाइनरी-पेट्रो कॉम्पलेक्स

मील का पत्थर

2014 का शिलान्यास कार्यक्रम

बाडमेर के पचपदरा में शिलान्यास करती यूपीए चैयरपर्सन सोनिया गांधी, तत्कालीन मुख्यमंत्री गहलोत व अन्य अतिथि।

MARUTI SUZUKI
EXCHANGE

MARUTI SUZUKI
Way of Life!

टेक्नोय मोटर्स आपका हार्दिक स्वागत करता है ।

टेक्नॉय मोटर्स इण्डिया प्रा. लि.

1:3, स्वर्ण जयन्ती पार्क के सामने, गोवर्धन विलास, उदयपुर
फोन : 2485158, 2485738, टोल फ्री 1800 1200 616

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

फरवरी 2018
वर्ष 15, अंक 12

प्रत्यूष

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs
कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग घेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अन्दर के पृष्ठों पर...

06 सियासत

तीन तलाक पर सियासत

08 परत-दर-परत

2जी प्रॉसिक्यूशन, न घोटाला, न घपला !

16 यादों का झरोखा

लो फिर याद आ गई वो भूली दास्तां

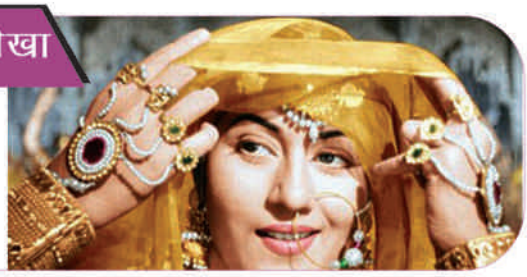

32 पाटोत्सव

नाथद्वारा के कानन वन में आनंद और मुक्ति की केसर क्यारियां

38 अजूबा

समंदर जिसमें कोई डूबता नहीं

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी , उदयपुर से प्रकाशित।

VNP
vijeta
Namkeen

Perfect rising snacks.

VIJETA NAMKEEN PRODUCTS
Main Road Bhupalpura, Udaipur-313001, Rajasthan INDIA,
Contact No. : 0294-2415817, Mob. : 09828555227
E-mail ID. : vijetanamkeen@gmail.com

A Product of
अर्चना Panch 5 mani Fragrance

अर्चना एक्टिव डिटर्जेन्ट पाउडर
कपड़े रहे एक्टिव अर्चना एक्टिव डिटर्जेन्ट के साथ

आधुनिक एवं सर्वश्रेष्ठ तकनीक का आविष्कार एक्टिव डिटर्जेन्ट पाउडर

1 Kg. वाले कट्टे में 25 पाउच
500 Gram वाले कट्टे में 40 पाउच
200 Gram वाले कट्टे में 80 पाउच

निर्माता : पंचमणी फ्रेगरेन्स

कार्यालय : ने. हा. 76, एयरपोर्ट रोड
ग्लास फैक्ट्री चौराहा, खेमपुरा की तरफ
उदयपुर-313001 (राजस्थान)

वेबसाईट : www.archanaagarbatti.com
ई-मेल : sales@archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

फोन : 0294-2492161, 2490899

व्यावसायिक पूछताछ एवं डीलरशिप हेतु आर्थिक रूप से सुदृढ़ पार्टियां (वितरक रहित क्षेत्र में) सम्पर्क करें।

मो. : +91-98290 42705, +91-99508 15555

ज्यूडिशरी की सुप्रीम कन्ट्रोवर्सी देशहित में नहीं

पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट के चार वरिष्ठ न्यायाधीशों ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कुछ बिन्दुओं पर सख्त एतराज जताया कि प्रधान न्यायाधीश विधि सम्मत दायित्व निर्वहन नहीं कर रहे हैं। आम जनता के लिए समझना कठिन है कि यह सब क्यों हुआ और इसके परिणाम क्या होंगे ? मन में यह सवाल भी कौंधा कि देश को न्याय दिलाने वाली सर्वोच्च अदालत में सब कुछ ठीक नहीं है। न्याय के इस मंदिर पर सवा अरब लोगों का विश्वास व की आस टिकी है। कुछ अपवादों को छोड़ कर यहां का फैसला निष्पक्ष माना जाता है। प्रेस कॉन्फ्रेंस घटनाक्रम के बाद पहली नजर में आम जनता को यही लगा कि एक विश्वसनीय संस्था व्यक्तिगत अहंकार या वर्चस्व की जंग का शिकार हो गई। सीजेआई के खिलाफ कार्रवाई के सवाल पर जजेज बोल उठे, यह समाज को तय करना है। इससे बड़ी विडम्बना और कोई नहीं कि शीर्ष अदालत के चार वरिष्ठ जजेज न्याय मांगने के लिए जनता के बीच खड़े नजर आएं। मीडिया को गाहे-बगाहे डांट-डपट करने वाले जजेज ने अपनी बात सबको बताने के लिए उसी का आश्रय लिया। प्रश्न उठता है कि आखिर न्याय व्यवस्था के अंदर का मामला भीतरी सुलह कोशिशों से क्यों नहीं सुलझाया और मीडिया के मार्फत जनता तक आंतरिक मामले को क्यों ले जाया गया ? आखिर जनता क्या निपटारा कर सकेगी ? क्या किसी संस्था में कोई समस्या आ जाए तो उसका समाधान सड़क पर संभव हो पाएगा ? ऐसे कई सवाल हैं जो देशवासियों की आंखों के सामने तैर रहे हैं। देश के सबसे बड़े संवैधानिक प्रमुख राष्ट्रपति हैं, जो लोकतंत्र के रखवाले भी। उनसे मिल कर सुलह-समझौते के प्रयास क्यों नहीं हुए ? आजादी के सत्तर सालों में पहली बार एक नई परम्परा डाली गई। अभी कुछ माह पहले ही पश्चिमी बंगाल हाईकोर्ट के जस्टिस कर्णन ने भी सुप्रीम कोर्ट के जजेज के विरुद्ध ऐसी ही प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी। सात जजों की संविधानिक पीठ ने इसे अनुशासनहीनता व कोर्ट की अवमानना माना, जिसमें मौजूदा प्रधान न्यायाधीश सहित हाल ही में प्रेस कॉन्फ्रेंस करने वाले चारों जज भी शामिल थे। अगर पुराना वाकया अनुशासनहीनता की संज्ञा पा गया तो 12 जनवरी की प्रेस कॉन्फ्रेंस को क्या कहा जाना चाहिए ?

यह कथानक भारतीय न्याय व्यवस्था के मूल दोष पर ले जाता है। न्यायाधीशों का चयन कॉलेजियम से ही क्यों हो ? पारदर्शी व्यवस्था से क्यों नहीं हो सकता ? प्रेस कॉन्फ्रेंस करने वाले न्यायाधीशों ने एक दिन पहले ही दो जजेज का कॉलेजियम प्रणाली से चयन किया और दूसरे ही दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की। कॉलेजियम व्यवस्था की जगह लेने के लिए केन्द्र सरकार ने छह सदस्यों का एनजेएसी बना दिया तो सुप्रीम कोर्ट ने इसे अवैध करार कर अपने अधिकार को सर्वोच्च बता दिया। संविधान में कॉलेजियम व्यवस्था का हवाला तक नहीं है। धारा 124/217 के तहत सर्वोच्च/उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों का चयन व नियुक्ति केन्द्र सरकार द्वारा किए जाने का प्रावधान है। 1993 में एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड बनाम केन्द्र सरकार के निर्णय द्वारा सुप्रीम कोर्ट ने यह अधिकार अपने हाथ में ले लिया व कॉलेजियम का गठन कर दिया। शीर्ष स्तर पर न्याय का सुविधा समूह वकीलों के अलावा किसी को व्यवस्था के भीतर प्रवेश ही नहीं करने देता, क्योंकि इतिवृत्त बताता है कि वकीलों के अलावा सर बीएन राव जैसे ख्यातनाम आईसीएस और उपेन्द्र बख्शी जैसे न्यायवेत्ता न्यायाधीश नहीं बन सके, भले ही उनका पांडित्य अद्वितीय था। प्रेस से मुखातिब चार जजेज के पत्र में ऐसा कोई बड़ा मुद्दा नहीं, जिस पर तूफान खड़ा किया जाए। पत्र के तर्कों पर ध्यान दें। ये कहते सीजेआई बराबरी वालों में प्रथम हैं, न कि कोई उच्च पदासीन व्यक्ति। सुप्रीम कोर्ट में 4 ही जज नहीं, अपितु 25 जजेज हैं। उनमे से कई को कनिष्ठ बता कर कुछ अपने को वरिष्ठ बता रहे हैं। किसी भी सिस्टम को सुचारू चलाने के लिए हर इकाई या संस्था में एक मुखिया होता है। संविधान में सीजेआई की बेहद अहम जगह है। बैंच गठित करने और केसेज का रोस्टर बनाने का अधिकार निर्विवाद रूप से प्रधान न्यायाधीश के पास है। जजेज की इस बात में जरूर दम है कि शीर्ष अदालत का कामकाज न्याय के सुनियोजित सिद्धान्तों के अनुसार हो, परन्तु यह केवल एक पर नहीं सभी न्यायाधीशों पर भी लागू है। यद्यपि न्यायाधीशों की वाजिब परिवेदनाओं पर ध्यान देना स्वतंत्र व निष्पक्ष न्यायपालिका के लिए आवश्यक है। न्याय की ढहती इमारत के लिए सरकार और वकील भी कम जिम्मेदार नहीं है। देश की अदालतों में तीन करोड़ मुकदमे पेंडिंग हैं। देरी से किया गया समाधान आखिरकार समाधान नहीं भी हो सकता। इंसाफ मांगने वालों को अदालतों और वकीलों की भूलभुलैयों के बीच कितनी वेदना और कराहट होती, यह सबको पता है। विधि आयोग 1987 से ही सुधारों के लिए चीख रहा है। पिछले 29 साल में बने 15 सीजेआई भी गुहार लगाते-लगाते थक गए। हाईकोर्टों में 44, निचली अदालतों में 25 और सुप्रीम कोर्ट में 19 फीसदी जजों की कमी है। सरकार के स्तर पर अटके इंसाफ के पहियों को सुचारू नहीं घुमाया जाएगा तो उसकी मार सबसे ज्यादा आम आदमी को झेलनी पड़ेगी। व्यस्ततम अदालतों में जज एक मुकदमे की सुनवाई पर 2.5 मिनट खर्च करते और तकरीबन पांच मिनट में एक फैसला सुनाते। जहां अदालतों में जजों की संख्या बढ़ाना वांछनीय है, वहीं न्यायालयों की व्यवस्था-उपव्यवस्था सुधारने की जरूरत है। भारत में फैमिली कोर्ट, जुवेनाइल जस्टिस कोर्ट और ग्राम न्यायालय अभी शैशवास्था में हैं। साफ है कि हम 20वीं सदी के ढांचे और 19वीं सदी की मानसिकता से 21वीं सदी की व्यवस्था चला रहे हैं। अदालतों पर देश की जनता का भरोसा कायम रखने के लिए आवश्यक है कि न्यायालयों पर कार्यपालिका का दखल और राजनीतिक दलों की गैर जरूरी टीका टिप्पणी भी बंद होनी चाहिए। न्यायाधीशों की भी बड़ी जिम्मेदारी बनती है कि वे हठधर्मिता छोड़ लोकतंत्र को मज़बूती दें।

तीन तलाक विधेयक

लोकसभा से टपका, राज्यसभा में अटका

अभी परवान न चढ़ पाई मुस्लिम औरतों की जुस्तजू, करना होगा कुछ इंतज़ार

- फिरोज अहमद शेख

केन्द्र सरकार ने आखिर मुस्लिम औरतों को बराबरी के हक देने और तीन तलाक को गैर-कानूनी बनाने के लिए लोकसभा में पेश मोदी सरकार के विधेयक पर स्वीकृति की मुहर लग गई। 28 दिसम्बर को पारित इस बिल पर चली बहस के दौरान प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस ने समर्थन तो किया, परन्तु कमियों को दूर करने की मांग भी की। कुछ क्षेत्रीय दलों ने विधेयक का विरोध किया तथा संशोधन प्रस्ताव रखे, परन्तु प्रस्तावों पर मामूली समर्थन ही मिल पाया। एआईएमआईएम के सांसद असदुद्दीन ओवैसी समेत कुछ दलों के नेताओं ने कहा कि बिल मूलभूत अधिकारों का हनन करता है। केन्द्र सरकार द्वारा प्रस्तुत इस विधेयक के अनुसार तलाक-ए-बिद्दत(एक बार में तीन तलाक) गैर-कानूनी एवं संज्ञेय अपराध होगा। आरोपी को 3 साल तक की सजा के साथ जुर्माना भी भरना होगा। यह मौखिक, ई-मेल, व्हाट्स अप, फेसबुक, एसएमएस या किसी भी माध्यम से दिए जाने वाले तीन तलाक पर लागू होगा। पीड़िता व नाबालिग बच्चे भरण-पोषण व गुजारा भत्ता मांग सकेंगे।

कानून अभी नाकुबूल

'मुसलिम महिला विवाह अधिकार सरंक्षण विधेयक-2017' को मंजूरी के लिए 3 दिसम्बर को राज्यसभा में पेश किया गया, लेकिन भारी बहस-मुबाहिस के बाद अपेक्षित संख्या बल के अभाव में पारित न हो सका। केन्द्र सरकार को उम्मीद थी कि विपक्षी दल समर्थन करेंगे, परन्तु कांग्रेस, बीजू जनता दल और तेलगू देशम सहित 17 दलों ने मांग उठाई कि विधेयक को प्रवर समिति को भेजा जाए। विपक्ष का कहना था कि यह कठोर दंड है और इसका दुरुपयोग किए जाने की आशंका ज्यादा है। तीन मुद्दों पर यह बिल राज्यसभा में अटक गया। विपक्ष का पहला तर्क था कि दुनिया में कहीं भी तलाक देने पर पति को जेल भेजने का प्रावधान नहीं। दूसरा, जब पति को जेल भेज दिया जाएगा तो गुज़ारा भत्ता कौन देगा? तीसरा, तीन साल के कारावास की सजा बेहद कड़ी हैं। संख्याबल के गणित में सरकार यहां पिछड़ गई, क्योंकि 245 सदस्यीय राज्यसभा में एनडीए के 88 सांसद हैं, जिसमें से तेलगू देशम सहित कुछ दल विपक्ष के साथ आ गए। ये साथ भी होते तो भी 35 और सांसदों के समर्थन की जरूरत थी। यानी प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस को विश्वास में लिए बिना राज्यसभा में इसका यही हश्र होना ही था और कांग्रेस इस मुद्दे पर सावधानी से आगे बढ़ने की रणनीति पर चल रही है। ट्रिपल तलाक पर भाजपा का एकमेव उद्देश्य कांग्रेस को महिला विरोधी साबित करना है। उसका मानना है कि उसके दोनों हाथों में लड्डू हैं और इसका उसे तुरन्त लाभ मिलेगा। अन्य राज्यों में भी उसकी नजर मुसलिम वोटरों पर रहेगी। मोदी सरकार चाहती है इस साल होने वाले विधानसभा चुनावों तथा अगले साल होने वाले आम चुनाव के लिए एक नया राजनैतिक मुद्दा तैयार रखा जाए। भारत में भले ही इस मुद्दे को खत्म करने पर बहस चल रही है, परन्तु पड़ोसी मुल्क समेत 22 मुस्लिम देश ट्रिपल तलाक को कब का खत्म कर चुके हैं।

शाह से शायरा तक

तीन तलाक का मुद्दा जितना चर्चित हुआ है, उतना हाल के वर्षों में शायद ही कोई दूसरा मुद्दा चर्चित हुआ हो। इसकी असली नायिका वह पहली महिला शायरा बानो है, जिसने एक बैठकी में तीन बार तलाक कहने की प्रथा, जो मुसलिम मर्दों को(खास कर सुन्नी सम्प्रदाय) फौरन एकतरफा और वापस न लिया जा सकने वाला तलाक देने का अधिकार देती है, को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। 10 अक्टूबर 2015 को दायर इस वाद को कसौटी पर जांचने-परखने के बाद दो साल बाद 22 अगस्त 2017 को सुप्रीम कोर्ट ने तीन तलाक को असंवैधानिक करार दिया। कुछ माह की ऊहापोह के बाद अन्ततः केन्द्र सरकार हरकत में आई और 15 दिसम्बर को बिल का कानूनी ड्राफ्ट तैयार किया, जिसे लोकसभा ने 28 दिसम्बर को पारित भी कर दिया। आगे की कानूनी प्रक्रिया पूरी होते ही जम्मू-कश्मीर को छोड़ कर पूरे भारत में यह लागू हो जाएगा। मुसलिम जगत की आधी आबादी के बराबरी के हक के संदर्भ में 40 साल पुरानी उस घटना और उस लौह महिला शाह बानो को याद कर लेना जरूरी है, जिसने ग़ैर-बराबरी के खिलाफ आजादी की पहली लड़ाई छेड़ी थी। उसने अप्रैल 1978 में तीन तलाक के बाद पति से गुजारा भत्ता पाने के लिए सर्वोच्च अदालत में याचिका दायर की। सात साल चले केस में सुप्रीम कोर्ट ने शाह बानो के पक्ष में फैसला सुनाया था। लेकिन अदालत द्वारा दिए फैसले को तीन दशक पहले केन्द्र में सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार ने संसद में अपने बहुमत के दम पर कुचल दिया। शाह बानो की जीत के आँसू गम की रूलाई में बदल गए। तब से अब तक शायरा बानो, ज़किया सोमन अतिया साबरी, शमीम आरा, इशरत जहां, शाइस्ता अंबर के सिवाय कोई मुस्लिम महिला आजादी और हक़ की लड़ाई लड़ने का साहस ही नहीं दिखा पाई। महिलाओं को इंसाफ दिलाने के लिए सुप्रीम कोर्ट का फैसला केन्द्र की राजीव सरकार द्वारा पलट देने के कारण पिछले तीन दशक में मुस्लिम जगत में कट्टरपंथी मौलानाओं और मज़हब के कथित सियासतदांओं के हौसले कुछ ज़्यादा ही मज़बूत हो गए। वे वक़्त-

बेवक़्त संविधान, समानता और एकता को मनचाहा रूप देकर व्याख्या करते आए हैं, जिसका ख़ामियाजा मुसलिम महिलाओं को भुगतना पड़ रहा है। आज भी मध्ययुगीन जैसे हालात हैं।

परम्पराओं के नाम पर जुल्म-जायज़ नहीं

तुरंत तीन तलाक पर सुप्रीम कोर्ट का ताज़ा फैसला मुसलिम महिलाओं के संघर्ष की जीत माना गया। वही बात प्रस्तावित कानून के बारे में कही जा सकती है। कानून बनाना फैसले को मूर्त रूप देने के लिए तो जरूरी है ही, इस तथ्य के मद्देनजर भी जरूरी है कि अदालती फैसले के बाद भी तीन तलाक प्रथा के जरिए तलाक के कोई छः दर्जन मामले सामने आए। कानून बनने पर ऐसा करना आसान नहीं रह जाएगा। हालांकि कुछ मुसलिम पैरोकार कहते हैं कि कोर्ट के फैसले और प्रस्तावित कानून में केवल इंस्टेंट तलाक यानी तलाक-ए-बिद्दत ही अस्वीकार्य है। तलाक-ए-अहसन और तलाक-ए-हसन पर आज भी छूट है। यह अपनी-अपनी व्याख्या है, परन्तु इतना तय है अब मुसलिम समाज और खासकर महिलाएं अपने हक़-हकूक पर सवालिया निशान नहीं लगने देगी और एकतरफा व मतलब-परस्त बातों को कतई स्वीकार नहीं करेंगी। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड इक्कीसवीं सदी के विकसित युग में भी दकियानूसी विचारधारा का पिष्टपोषण करते हुए प्रस्तावित कानून का विरोध कर रहा है। अगर बोर्ड को सचमुच मुसलिम महिलाओं की भलाई का मामूली भी फिक्र है, तो उसे विरोधी सुर की बजाय सहयोग का रुख दर्शाना चाहिए। पर उसे तो यही मंजूर नहीं कि कोई कानून बने। भारत लोकतांत्रिक और सर्वधर्म समावेशी गणराज्य है, जो धर्म-मज़हब या खास विचारधारा से नहीं, संविधान से चलता है। मज़हबी लोग कहते हैं हमारे सामाजिक मसलों में अदालतें और संसद हस्तक्षेप न करें। इन्हें पता होना चाहिए कि अपने को मज़हबी मुल्क घोषित करने वाले पाकिस्तान सहित 22 मुल्कों में तीन-तलाक को बरसों पहले ही गैर-कानूनी मान लिया गया है। यहां तक कि वे जिस पाक कुरआन और हदीस की दुहाई देते हैं, उनमें भी तीन तलाक की अनुमति नहीं है। मज़हब और परम्परा की आड़ में मर्दों का यह मनमाना हक़ जारी रखने की पैरोकारी कतई जायज़ नहीं मानी जा सकती। आज वैज्ञानिक-तकनीकी युग है, जहां महिला, पुरुष, बच्चों को खुशहाल बनाने की कोशिशें होनी चाहिए। वहां समाज के मुट्ठीभर कर्ता-धर्ता पूरे समाज पर आदिम युग वाली वर्जनाओं की बंदिशें लगाने पर आमादा हैं। आज का युग ग्लोबल विलेज, अंतरिक्ष डेस्टिनेशन और समंदर की गहराइयों तक पहुंच बना चुका है, ऐसे निरर्थक मुद्दों को कोई तरज़ीह नहीं दी जानी चाहिए।

केन्द्र सरकार सुप्रीम कोर्ट के आदेश को लागू करने पर कटिबद्ध

केन्द्र सरकार के सामने अभी कई विकल्प खुले हैं। लोकसभा से विधेयक पारित हो चुका है, राज्यसभा में लंबित है। संसद का शीतकालीन सत्र खत्म हो चुका है। ऐसे में सरकार के पास अध्यादेश के जरिए इसे लागू करने का विकल्प भी है। ऐसा करने पर यह कानून अगले छह माह के लिए लागू हो जाएगा। अंतिम जनवरी में शुरू हो रहे बजट सत्र में सरकार को अध्यादेश की कॉपी ही दोनों सदनों में पेश करनी होगी। यानी सरकार के लिए यह अनिवार्य नहीं रहेगा कि बजट सत्र में ही वह अध्यादेश की जगह लेने वाले कानून को संसद से पारित करवाए। यानी 6 अप्रैल तक बजट सत्र चलेगा। इस प्रकार सरकार को कुछ अतिरिक्त समय मिल जाएगा, क्योंकि नियमानुसार अध्यादेश को छह महीने के भीतर या पहले सत्र में पारित कराना होता है। केन्द्र सरकार 22 अगस्त 2017 को आए सुप्रीम कोर्ट के फैसले को लागू करने के लिए हर हालत में मुकम्मल कानून बनाना चाहती है, क्योंकि फैसले में निर्देशित किया गया था कि सरकार छह माह के भीतर इस पर कानून बनाए। इस बहाने वह अध्यादेश भी ला सकती है। एक विकल्प यह भी है कि सरकार राष्ट्रपति को विश्वास में लेकर संसद का संयुक्त सत्र बुलवाए। ऐसा होने पर तो बड़ी आसानी से विधेयक पारित हो जाएगा। मोदी सरकार का सोचना है कि अगले तीन-चार महीनों में राज्यसभा की करीब 68 सीटों क चुनाव हो रहे हैं। अनुमान है कि आगामी अप्रैल से ही राज्यसभा की सियासी तस्वीर बदलनी शुरू हो जाएगी। राज्यसभा में राजग को बहुमत मिलने पर सरकार को कुछ भी परेशानी नहीं होगी। तब तक वह मुसलिम महिलाओं का शुभचिंतक बने रहने की छवि को भुनाती रहेगी।

न घोटाला, न घपला, फिर 2जी प्रॉसिक्यूशन है क्या?

- एन.के. शर्मा

बीते 21 दिसम्बर को सीबीआई की एक विशेष अदालत ने 2जी मामले में चौंकाने वाला फैसला दिया। इस घोटाले में शामिल 19 लोगों को जिनमें दो राजनीतिक नेता भी शामिल हैं, सारे अभियोगों से मुक्त कर दिया, क्योंकि सीबीआई न तो आरोपों के पक्ष में पुख्ता सबूत पेश कर पाई और न ही भ्रष्टाचार व वित्तीय लेनदेन साबित कर पाई। कहीं ऐसा तो नहीं हैकि निर्दोषों को फसाया गया अथवा आरोपियों को बरी करवाने के लिए साक्ष्यों को प्रस्तुत ही नहीं किया गया। शुक्र है यह फैसला अभी निचली अदालत से आया है। ऊपर की मंजिलों से अभी उम्मीद बाकी है।

एक अंग्रेजी अखबार में 8 नवम्बर को 2017 को 'जेरिंग कॉल : ग्रेबिंग प्रेशियस स्पेक्ट्रम फॉर ए सोंग' शीर्षक से प्रकाशित खबर में दूरसंचार विभाग में हुई नीलामी से संबंधित धांधलीबाजी की बात कही गई। हालांकि उस वक्त दूरसंचार विभाग ने इसे खारिज भी किया। पर कुछ लोगों ने इसे बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया। देश के लोग इसे बड़े घोटाले के रूप में देखने लगे। सेंटर फॉर पब्लिक इंटरेस्ट नामक एनजीओ ने 2009 में सीबीसी से 2जी स्पेक्ट्रम में अनियमितताओं की शिकायत की। मामले की जांच सीबीआई के पास पहुंची और उसने मामला दर्ज किया। 2010 में कैग ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि 2जी स्पेक्ट्रम के आवंटन में घोटाले की वजह से केन्द्र सरकार को 1.76 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इसी रिपोर्ट के आधार पर सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से कहा, आप पर 70 हजार करोड़ के घोटाले का आरोप है। सीबीआई ने तत्कालीन दूरसंचार मंत्री ए. राजा, डीएमके नेता कनिमोझी सहित आरोपियों को गिरफ्तार किया। सुप्रीम कोर्ट ने आवंटन प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए 2012 में विभिन्न लाभार्थियों के 122 लाइसेंस रद्द कर दिये, जो संचार मंत्री ने बांटे थे। 2014 में ईडी ने भी राजा और कनिमोझी के खिलाफ चार्जशीट फाइल की। अन्ततः सीबीआई की विशेष अदालत में मामला चलते हुए 8 साल 2 माह बाद फैसला आया और कोर्ट के जज ओ पी सैनी ने 19 लोगों व 13 कंपनियों समेत 34 आरोपियों को बरी कर दिया। सैनी ने कहा मैंने 7 साल रोज सुबह 10 से शाम 5 बजे तक लगातार मामले की सुनवाई की, मगर सब बेकार गया। मामला लोगों द्वारा फैलाई गई धारणा, अफवाह से ज्यादा कुछ नहीं निकला। सीबीआई किसी के खिलाफ कोई सबूत पेश नहीं कर पाई।

तिलिस्म या हकीकत?

टूजी स्पेक्ट्रम आवंटन घोटाले पर अदालत के फैसले ने करोड़ों देशवासियों को अचम्भे में डाल दिया। पहली बात तो यह है कि अदालत ने इस चर्चित घोटाले में शामिल सभी आरोपियों को यह कहते हुए बरी कर दिया कि अभियोजन

सुलझी डोर को उलझाया गया

सारा झगड़ा टेलीकॉम विभाग के स्पेक्ट्रम यूनीफाइड एक्सेस लाइसेंस का था। जो बंटने थे कंपनियों में। ट्राई की सिफारिशों के आधार पर 'फर्स्ट कम, फर्स्ट सर्व' पॉलिसी से आवंटन होना था। टेलीकॉम मंत्रालय ने कट-ऑफ तारीख को पिछली तारीख में बदल दिया। 'पहले आओ, पहले पाओ' की पॉलिसी को भी राजा ने 'पहले आओ, पहले फीस जमा कराओ तो पाओ' में तब्दील कर दिया। इस नीति की जगह नीलामी वाली पारदर्शी नीति की सलाह तो कानून मंत्रालय, वित्त मंत्रालय और प्रधानमंत्री कार्यालय से भी दी गई थी। वो लागू क्यों नहीं की गई अफसरों ने? मात्र कट-ऑफ तारीख पीछे करने से ही राजा ने कुल 575 आवेदकों में से 408 बाहर कर दिए। पहले आओ के बाद परिवर्तित 'पहले फीस भरो' क्लॉज आया, उससे और भी कई बाहर हो गए। आवंटन में स्पर्धा बढ़ती तभी तो स्पेक्ट्रम की राशि बढ़ती। प्रॉसिक्यूशन इस बात को भी नहीं भुना पाया। सुप्रीम कोर्ट तो लाइसेंस आवंटित करने के 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार को खारिज कर चुका है। यानी उसके बाद नीलामी वाली आवंटन प्रक्रिया प्रचलन में आ गई। शीर्ष अदालत इस नतीजे पर पहुंच चुकी था कि 2जी आवंटन पर यूपीए सकार की नीति गलत थी। तो क्या यह मान लिया जाए कि प्रक्रिया भले ही असांविधिक थी पर उसमें कोई भ्रष्टाचार नहीं हुआ? सीबीआई जैसी संस्थाएं तो तभी हरकत में आती है, जब कोई पिंजरा खोलता है। वैसे भी उनकी नाकामियों के ढेरों उदाहरण सामने हैं। देश में भ्रष्टाचार के बहुत कम मामले ही अंतिम परिणति तक पहुंचते हैं। सजा देना तो दूर, अक्सर हम सच तक भी नहीं पहुंच पाते।

पक्ष पर्याप्त सबूत पेश कर पाने में विफल रहा। कैग ने अपनी रिपोर्ट में 1.76 लाख करोड़ रुपये के नुकसान की बात कही। वहीं सीबीआई ने 30 हजार करोड़ की बात मानी थी। यूपीए सरकार के संचार मंत्री को न केवल पद छोड़ना पड़ा अपितु जेल भी जाना पड़ा। राजनीति में भूचाल-सा आ गया। 2014 के आम चुनाव में भाजपा ने इसे सबसे बड़ा मुद्दा बनाया। नतीजन यूपीए-2 की सरकार चली गई। कांग्रेस को महज 44 सीटें मिली और भाजपा भारत विजेता बन कर छा गई। वहीं, तमिलनाडु में डीएमके पार्टी राज्य की सत्ता से लगातार दो बार आउट हो गई। जिन नौ कंपनियों को स्पेक्ट्रम लाइसेंस मिला, उनमें से एक को छोड़कर बाकी सभी बंद हो गई। विदेशी कंपनियों ने भी अपने हाथ खींच लिये।

डीएमके नेता कनिमोझी व पूर्व केन्द्रीय मंत्री ए. राजा

2जी स्पेक्ट्रम मामले में अदालत का फैसला अवाक करने वाला है। आखिर इसका मतलब क्या है? क्या कैग, मीडिया और सुप्रीम कोर्ट गलत था? प्रतिपक्षियों का कहना है कि नियंत्रक और महालेखा परीक्षक ने अनुमान के आधार पर घोटाले की राशि बढ़ाई। यानी 1.76 लाख करोड़(यह उस समय के रक्षा बजट से भी बढ़ी राशि थी) उसके सामने बोफोर्स घोटाला तो महज 65 करोड़ का ही था, जो साबित नहीं हो पाया। एक बार फिर ऐसा ही 2जी घोटाला निचली अदालत में साबित न हो पाया। घोटाला होने का संदेह इसलिए भी नजर आता है कि सुप्रीम कोर्ट ने सभी 122 लाइसेंस रद्द करते हुए सात कम्पनियों पर 17 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया और कहा कि कुछ कंपनियों को राजस्व हानि की कीमत पर फायदा पहुंचाया गया।

फैसले के बाद अब सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब देश की शीर्ष अदालत ने स्पेक्ट्रम आवंटन में अनियमितताओं मानते हुए लाइसेंस रद्द किए थे तो सभी आरोपी बरी कैसे हुए? इतना बड़ा घोटाला, फिर पर्याप्त सबूत अदालत के समक्ष प्रस्तुत क्यों नहीं किए गए? सबूतों को अदालत तक किसने नहीं पहुंचने दिया? देश इन तमाम सवालों के जवाब जानना चाहता है।

कोई केस नहीं अथवा कोई सबूत नहीं

2जी के थ्री डायमेंशन फैसले से कांग्रेस और डीएमके को राहत मिली, वहीं भाजपा को खामोश कर दिया है। पर सवाल है कि सीबीआई अपने आरोप-पत्र की पुष्टि में विश्वसनीय साक्ष्य क्यों नहीं जुटा पाई? नहीं जुटा पाई या साक्ष्य नहीं थे? कांग्रेस समेत प्रतिपक्ष इस मुद्दे पर आक्रामक होकर भाजपा को कठघरे में खड़ा कर चुका है। यह ठीक है कि इस मामले में आरोप पत्र यूपीए सरकार के समय दायर किए गए, लेकिन मामले की तमाम सुनवाई मौजूदा मोदी सरकार के समय ही हुई। क्या सीबीआई और ईडी ने अपना काम सही तरीके से नहीं किया या उन पर किसी का दबाव था? अभियोजन पक्ष ने पहले काफी उत्साह दिखाया जो बाद में डीप फ्रीज में दबा रह गया। ट्रायल कोर्ट का फैसला अब हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक जा सकता है। वहां से जो भी फैसला आएगा, परन्तु आम लोग चाहते हैं कि दूध का दूध और पानी का पानी हो। फैसले के बाद भी कई सवाल सियासत की फिजां में तैर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज और स्पेक्ट्रम आवंटन लाइसेंस रद्द करने वाली खण्डपीठ के न्यायाधीश रहे जीएस सिंघवी का कहना है कि अभियोजन के फेल होने का मतलब यह नहीं कि कोई केस नहीं बनता। क्रिमिनल लॉ में दो चीजें महत्त्वपूर्ण है। एक कोई केस नहीं है और दूसरा कोई सबूत नहीं। सबूत नहीं तो आरोपी दोषमुक्त होगा ही। मोदी सरकार द्वारा कैग के तत्कालीन अफसर विनोद राय को बीसीसीआई का अंतरिम अध्यक्ष बनाया जाना भी कई संदेह पैदा करता है। इसके अलावा तमिलनाडु में अपने पैर जमाने के लिए भाजपा की डीएमके नेताओं से गलबहियां भी कई सवाल खड़े करती है।

अदालत में इस मामले को उठाने वाले भाजपा नेता और राज्यसभा सांसद सुब्रमण्यम स्वामी का कहना है कि अभियोजन के कमजोर साक्ष्यों के कारण आरोपी छूटे हैं, अत: मामला उच्च न्यायालय जाना चाहिए। न्यायपालिका पर सबका विश्वास है, परन्तु आरोपियों को कुछ ज्यादा ही न होने पाए। देश के खजाने को नुकसान पहुंचाने वाले व्यक्ति को सजा मिलनी चाहिए, मगर ऐसा भी न हो कि स्कैम खड़ा करने के लिए मनमाफिक सबूत गढ़े जाएं और गवाहों से काल्पनिक बयान लेकर राजनीतिक लाभ उठाया जाए। सियासत में दूसरे को लांछित करने से उसके भारी घाटे और छवि की भरपाई कौन करेगा?

मेवाड़ के कबीर बावजी हुजूर चतुर सिंहजी

शब्दों के चुगटियो से आत्मा को जगाने वाले लोकसंत

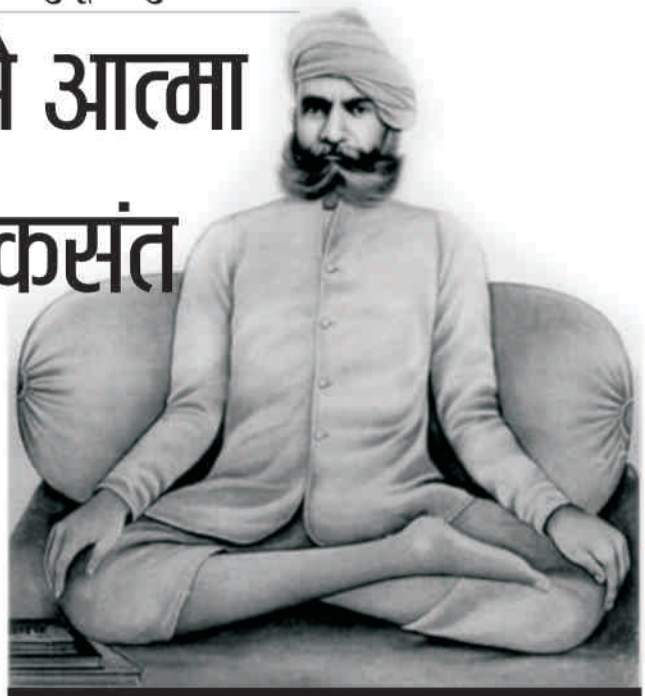

पर घर पग नी मैलणो, वना मान मनवार।
अंजन आवै देखनै, सिंगल रो सतकार।।

मेवाड़ में जन्मा शायद ही कोई ऐसा विरला होगा जिसने छुटपन में बावजी चतुर सिंह जी की ये चंद लाइनें नहीं पढ़ी हो। ये मान-मनुहार, आव-भगत, स्वागत-सत्कार व मेहमान नवाजी के साथ आत्म स्वाभिमान का वो भाव जगाती हैं जिससे 9 दशकों बाद भी मेवाड़ के लोग भूल नहीं पाए। वैसे भी मेवाड़ की वीर धरा रत्नों की खान रही हैं। इन्हीं रत्नों में एक रत्न हुए बावजी चतुर सिंह जी। साहित्यशिल्पी, उपदेशक, संत, लेखक, कवि के रूप में उनकी ख्याति का प्रकाश काफी दूर-दूर तक फैला है। बावजी ने शब्दों के चुगटियो (मेवाड़ी दोहे) से सोई हुई आत्मा पर कड़ा प्रहार कर लोक मानस को जागृत रखने का काम किया। राजसी ठाठ-बाठ को छोड़कर पगरखी, धोती, पछेवड़ी और मेवाड़ी पगड़ी पहनकर शांति की खोज में निकले इस विरले लोकसंत ने ताउम्र सादगी का जीवन जिया। पाखंड, आडंबरों, दिखावे से कोसों दूर रहे और दूसरों को भी अपने दोहे के माध्यम से नसीहत देते रहे। संस्कृत के विद्वान बावजी ने मेवाड़ी, ब्रज और हिन्दी का ऐसा रसायन तैयार किया कि जिसे पीकर साहित्यप्रेमी का मन ईश्वर भक्ति में झंकृत हो उठता है। बावजी की उम्दा लेखनी में इतनी सादगी, संजीदगी, गंभीरता और रसास्वाद था कि बिना दोहे बोले आज भी गांवों में चौपालों पर होने वाली सभाएं, मेल-मिलाप, सामाजिक आयोजन रसहीन है। उनके लिखे दोहों, पदावलियों, दोहवालियो में कबीर, मीरा, नानक, दादू, रज्जब जैसी चोट है तो, उनकी भाषा में वही सरलता, भावों में वही गंभीरता। उन्होंने अपने काव्य में रेल, हवाई जहाज, फोनोग्राम आदि प्रतिकों का सुंदर ढंग से उपयोग किया। बावजी ने कुल 18 ग्रन्थों की रचना की। इनमें मेवाड़ी बोली में लिखी हुई गीता पर गंगा-जळी टिका सबसे उत्तम और अनूठी पुस्तक है। बावजी की कलम समाज सुधार, शिक्षा, भक्ति, वैराग्य, संसार की नश्वरता आदि पर ऐसी चली की आज तक उनका कोई मुकाबला नहीं कर पाया। वीर कुल में जन्म होने के कारण बावजी वीररस से भी अपने आप को अलग नहीं कर पाए। हृदय में जोश, उत्साह और जज्बे का संचार भी उनकी नीति, वैराग्य और उपदेशपरक कविताओं में अनायास ही हो जाता है।

प्राचीनता के प्रेमी होने के कारण आधुनिक शिक्षा, सभ्यता और शिष्टाचार के खिलाफ थे। उनकी रचनाओं में ईश्वर ज्ञान और लोक व्यवहार का सुंदर मिश्रण मिलता है। कठिन से कठिन ज्ञान तत्व को हमारे जीवन के दैनिक व्यवहारों के उदाहरणों से समझाते हुए सुन्दर लोक भाषा में इस चतुराई से ढाला है कि उनके गीत, उनमें बताई गई बात एक दम गले उतर कर हृदय में जम जाती हैं और मनुष्य का मस्तिष्क उसे पकड़ लेता है।

बावजी की कृतियां : चतुर प्रकाश, हनुमत्पंचक, अंबिकाष्टक, शेष चरित्र, चतुर चिंतामणि, दोहावली/पदावली, समान बत्तीसी, शिव महिम्न: स्तोत्र, चंद्रशेखर स्तोत्र, श्री गीताजी, मानव मित्र रामचरित्र, तुही अष्टक, अनुभव प्रकाश, हृदय रहस्य, अलख पचीसी, बाळकां री वार, बाळकां री पोथी, लेख संग्रह, सांख्य कारिका, तत्व समास, योग सूत्र आदि।

ऐसे शुरू हुआ संत बनने का सफर : महाराज साहब की धर्मपत्नी का देहान्त होने के थोड़े दिनों के बाद ही उनकी एकमात्र पुत्री भी चल बसी। फलत: बावजी का झुकाव ईश्वर के प्रति बढ़ गया। बचपन के संस्कार और समय की चोट से बावजी की प्रतिभा निखरने लगी। योगाभ्यास करने के लिए वे नर्बदा नदी के तट पर रहने वाले योगी कमल भारती के पास पहुंचे। उन्होंने बाठरड़ा के रावतजी दल्लेल सिंह के भाई गुमान सिंह जी को गुरु बनाने की सलाह दी। उत्कृष्ट इच्छा शक्ति देखकर गुमान सिंह जी ने उनको अपना शिष्य स्वीकार किया। वे सुखेर में एक झोपड़ी बनाकर रहने लगे थे। बावजी ने दोहो में गुमाना, गुमान और काका कहकर अपने आप को गुरु से हमेशा ही जोड़े रखा।

– जगदीश सालवी

जीवन परिचय

मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय के तृतीय पुत्र बाघसिंह के वंश में महाराजा सूरतसिंह ठिकाना करजली के घर मां कृष्णकंवर की गर्भ से महाराज चतुर सिंह जी बावजी का जन्म वि.सं. 1936माघ कृष्णा चतुर्दशी सोमवार 9 फरवरी 1880 को हुआ। वे महाराणा फतेहसिंह के भतीजे और कार्तिशेष महाराणा भगवत सिंह के पिता थे। बावजी का विवाह जयपुर के छापोली ठिकाने में शेखावतजी के साथ हुआ। उनकी पुत्री सायकंवर का विवाह गुजरात के विजयनगर के महाराजा हमीर सिंह के साथ हुआ था। आषाढ़ कृष्ण नवमी वि.सं. 1986 यानी 1 जुलाई 1929 को असार संसार से उनका निर्वाण हुआ था।

कालूलाल जैन
Director

Ph:- 0294-2489961
2489141(O)

अर्हम बिल्ड एस्टेट प्रा. लि.

सभी प्रकार की कृषि, आवासीय, वाणिज्यिक
भूमि एवं प्लॉट का क्रय विक्रय

अरिहन्त मिनरल्स

R.C.C., क्रेशर गिट्टी के निर्माता एवं विक्रेता

13, बी ब्लॉक, अरिहन्त कॉम्पलेक्स, सब सिटी सेन्टर,
मेन रोड, उदयपुर 313001 (राज.)

रमन : जिनके प्रभाव से देश का मस्तक होता है ऊंचा

विज्ञान के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार पाने वाले पहले एशियाई थे सीवी रमन

– अशोक तंबोली

बचपन में हम फरवरी को दो बड़ी वजह से ही याद किया करते थे। पहली वजह यह कि ये 28दिनों वाला छोटा रिचार्ज टाइप का महीना हुआ करता था। दूसरी वजह स्कूल के बरामदे में महीने के सबसे आखिर दिन यानी 28फरवरी को मनाए जाने वाले विज्ञान दिवस को लेकर। हम साल में केवल एक बार ही इस विशेष दिन पर सर सी.वी रमन की मद-मद निश्चल हंसी बिखेरती छवि से मुखातिब होते थे। ये हमारे लिए सौभाग्य से बढ़कर विज्ञान में गमन करने का सुअवसर हुआ करता था। सिर पर सफेद गमछे की पगड़ी बांधे और चेहरे पर सादगी की मुस्कुरान बिखेरते सी.वी रमन साहब की छवि ने हम तब तक अनजान थे। उस छवि ने वो जगह नहीं बनाई जो आज बनी है। एक दिन की बात है। क्लास में कोस-थीटा, साइन थीटा की पेचिदगियों में उलझकर हमारी मित्र मंडली लाइब्रेरी में बैठी थी। वहां पड़ी एक किताब जिसके मुख्य पृष्ठ पर सी.वी रमन साहब की छवि थी उससे नजरें दो-चार हुई। इसके अगले ही पल ऐसा आभास हुआ मानो विज्ञान दिवस समारोह की यादों ने रमन साहब की छवि को आलिंगन किया हो। ये वो पल था जब हम देश के सबसे बड़े वैज्ञानिक से मुखातिब हुए। रमन इफैक्ट को बड़ी शिद्दत के साथ पढ़ा तो लगा कि भारत में विज्ञान के क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय रहा हैं। सर चंद्रशेखर वेंकट रमन ने हमें रमन इफेक्ट या रमन प्रभाव दिया। इस योगदान की वजह से भारत में 1999 से अनवरत रूप से 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाने का परंपरा शुरू हो गई। रमन इफेक्ट के लिए उनको 1930 में नोबेल पुरस्कार मिला था। भारत से अंतरिक्ष मिशन चंद्रयान ने चांद पर पानी होने की घोषणा की तो इसके पीछे भी रमन स्पैक्ट्रोस्कोपी का ही कमाल था। फोरेंसिक साइंस में भी रमन प्रभाव काफी उपयोगी साबित हो रहा है। सीवी रमन ने जिस दौर में अपनी खोज की थी उस समय काफी बड़े और पुराने किस्म के यंत्र हुआ करते थे। रमन प्रभाव की खोज उन्होंने इन्हीं यंत्रों की मदद से की थी। रमन प्रभाव के प्रभाव में आकर तकनीक नए स्तर पर पहुंची और पूरी तरह बदल गई। उन्हें विज्ञान के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले एशियाई होने का गौरव भी प्राप्त हुआ। ब्रिटिश शासन के दौर में भारत में किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति के लिए भी वैज्ञानिक बनना आसान नहीं था। उस दौर में सर सी.वी रमन ने सरकार के वित्त विभाग की एक प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और इसमें वे प्रथम आए। फिर उन्हें जून 1907 में असिस्टेंट एकाउटेंट जनरल बनाकर कलकत्ता भेज दिया गया। एक दिन वे अपने कार्यालय से लौट रहे थे कि उन्होंने एक साइन-बोर्ड देखा-इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस। इसे देख उनके मन और मस्तिष्क में दबी वैज्ञानिक इच्छा जागृत हो गई। रमन

पुरस्कार, सम्मान और उपलब्धियां

चंद्रशेखर वेंकट रमन को विज्ञान के क्षेत्र में योगदान के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

- वर्ष 1924 में रमन को लंदन की रॉयल सोसाइटी का सदस्य बनाया गया
- रमन प्रभाव की खोज 28फरवरी 1928को हुई थी। इस महान खोज की याद में 28फरवरी का दिन भारत में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है
- वर्ष 1929 में भारतीय विज्ञान कांग्रेस की अध्यक्षता की।
- वर्ष 1929 में नाइटहुड की उपाधि प्रदान की गई।
- वर्ष 1930 में प्रकाश के प्रकीर्णन और रमण प्रभाव की खोज के लिए भौतिकी के क्षेत्र में प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार मिला।
- वर्ष 1954 में भारत रत्न से सम्मानित
- वर्ष 1957 में लेनिन शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया

के अंशकालिक अनुसंधान का क्षेत्र ध्वनि के कंपन और कार्यों का सिद्धांत था। रमन को वाद्य-यंत्रों की भौतिकी का ज्ञान इतना गहरा था कि 1927 में जर्मनी में छपे 20 खंडों वाले भौतिकी विश्वकोश के आठवें खंड का लेख रमन से ही तैयार कराया गया था। इस कोश को तैयार करने वालों में रमन ही ऐसे थे, जो जर्मनी के नहीं थे।

निजी जीवन : सर सीवी रमन का विवाह 6मई 1907 को लोकसुंदरी अम्मल से हुआ। उनके दो पुत्र थे चंद्रशेखर और राधाकृष्णन। उनका स्वर्गवास 82 वर्ष की आयु में 21 नवंबर 1970 को बैंगलोर में हुआ।

सीवी रमन और लाइट स्कैटरिंग : सीवी रमन का पूरा नाम चंद्रशेखर वेंकट रमन है। भारत में उनको इस वजह से भी याद किया जाता है कि वो एकमात्र विज्ञान में नोबल पुरस्कार जीतने वाली शख्सियत है। इन्होंने जो खोज की उसे रमन स्कैटरिंग के नाम से जाना जाता है। हमें मालूम है कि लाइट की किरणें एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करती हैं। इनकी यात्रा ठीक वैसी ही है जैसा स्कूल से घर वापस जाते लड़कों के एक झुंड का। वो या तो एक साथ अपने-अपने घर जाते हैं या फिर रास्ते में ही तितर-बितर हो जाते हैं। इन लाइट रेंज की यात्रा भी दो तरह से होती है। ये किरणें या तो एक सीधी रेखा में चलती जाती हैं या फिर किसी वस्तु के संपर्क में आने पर बिखर जाती हैं। स्कैटरिंग दो तरह की होती है। इसमें सारा खेल फ्रीक्वेंसी का होता है। जब रेंज मैटर से मिलने पर अपनी फ्रीक्वेंसी में बिना किसी बदलाव के स्कैटर होती हैं उसे रेली स्कैटरिंग कहते हैं। लेकिन जब रेंज मैटर से टकराने पर अपनी फ्रीक्वेंसी बदली हुई पाती हैं और स्कैटर होती हैं तो उसे रमन स्कैटरिंग कहा जाता है। ये रमन स्कैटरिंग सीवी रमन के ही नाम पर रखा गया है।

THE STUDY
Udaipur
KNOWLEDGE IS POWER
PREMIER
CBSE SCHOOL
FOR THE LOVE OF LEARNING
FOR THE LOVE OF SPORTS
COME WITH A DREAM,
LEAVE LIKE A ROLE MODEL
THE STUDY
Estd. 1982
SCIENCE | COMMERCE | ARTS
BADI, UDAIPUR
0294-2431825, 8233327996
www.facebook.com/thestudybadi/
ADMISSION OPEN
FOR 2018/19
GRADES 1-12

उफ! ये ठण्ड और बेदम करने वाली खांसी

- डॉ. गजेन्द्र जोशी

बड़े-बुजुर्ग कहते हैं - 'रोग की जड़ खांसी और लड़ाई की जड़ हांसी।' यह बात दिखती मामूली है, पर है लाख टके की। महाभारत युद्ध की शुरुआत बेवजह उड़ाई एक हंसी-ठिठौली से हुई। आज के युग में भी एक व्यंग्यात्मक रूप से कही गई चुभती हंसी से हजारों नहीं लाखों अनर्थकारी परिणाम नज़र आते हैं। इसी तरह असाध्य बीमारियों की शुरुआत कभी-कभी सिर्फ एक मामूली खांसी से हो जाती। वसंत का मौसम दो ऋतुओं का संगम हैं, अतः विशेष सावधानी बरतें।

खांसी के मरीज हर घर में देखे जा सकते हैं। बढ़ते प्रदूषण ने तो इस समस्या को और भी बढ़ा दिया है। बाबा रहीम कह गए - 'खैर, खून खांसी, खुशी, बैर, प्रीति, मदपान, दाबे से फिर ना दबे, जाने सकल जहान'। सलामती इसी बात में छिपी है कि खांसी का आभास होते ही पहले परीक्षित घरेलू उपचार करें और राहत न मिले तो तुरन्त डॉक्टर से सम्पर्क करें। सर्दी का प्रकोप मकर संक्रांति और वसंत के गुनगुने मौसम के बाद भी बना रहता है। खासकर नवजात, छोटे बच्चों, बुजुर्गों और रोगियों को खांसी के प्रकोप से बचाने के तत्काल उपायों की जरूरत है। कभी-कभार खांसी उठना आम बात है। श्वासनली में किसी तरह के बाहरी व हानिकारक तत्वों के जाने से खांसी उठने लगती है। इस तरह शरीर की स्वत: प्रक्रिया से बाहरी तत्व वायुनली से बाहर कर दिए जाते हैं। खांसी दरअसल एलर्जी, सर्दी फ्लू, धूम्रपान के धुएं, धूल, रसायनों व प्रदूषकों के शरीर के वायुमार्ग में प्रवेश करने का संकेत भी है। ज्यादा नमी या ठंड में भी खांसी उठती है।

खांसी के कारण भी कम नहीं होते। अस्थमा, एलर्जी, प्रदूषण , एसिड रिफ्लक्स, धूम्रपान, ब्रोन्काइटिस और वायरस का संक्रमण होने पर खांसी हो सकती है। टीबी, न्यूमोनिया, क्रॉनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) या फेफड़ों के कैंसर में भी लगातार खांसी रहने के लक्षण देखने को मिलते हैं। हाईबीपी की दवा लेने वालों में भी सूखी खांसी के लक्षण देखने को मिलते हैं। कुछ लोगों में खांसी के साथ गले में दर्द होना, सांस फूलना, सिरदर्द, नींद न आना, पसलियों में दर्द होना, तेज बुखार आना, बलगम में खून निकलना या सांस उखड़ने जैसे लक्षण भी देखने को मिलते हैं। क्रॉनिक कफ या लगातार जोर से खांसने से कई लोगों की पसलियों में फ्रैक्चर भी हो जाता है।

ठंड में रखें ध्यान

तापमान में गिरावट आने पर लगातार रहने वाले खांसी के मामले बढ़ रहे हैं। जिन लोगों को ब्रोंकाइटिस, अस्थमा और एलर्जी है, उन्हें स्मोग के कारण खांसी की समस्या बढ़ जाती है। सर्दियों में श्वसन तंत्र से जुड़ी समस्याएं भी अधिक होती हैं। देर तक तेज धूप में बैठे रहने से भी खांसी बढ़ जाती है। विशेषकर बड़े शहरों में जहां वातावरण में ओजोन की मात्रा अधिक होती है, तेज धूप में ओजोन का स्तर बढ़ जाता है। इससे बचने के लिए सुबह की गुनगुनी धूप का आनंद लें।

प्रदूषण का गले पर बुरा असर

स्मोक(धुआं) और फॉग(कोहरे) मिलने से स्मॉग बनता है, इसमें कई तरह के प्रदूषक जैसे सल्फर डाईऑक्साइड, नाइट्रोजन डाईऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, ओजोन और धूल के कण भी होते हैं। वायुमंडल की निचली परत में ये प्रदूषक तत्व होने के कारण सांस लेने पर ये वायुमार्ग में प्रवेश कर जाते हैं। उसमें सूजन आ जाती है और वायुमार्ग संकुचित हो जाता है। इस वजह से सांस लेने में दिक्कत होती है और खांसी उठने लगती है। ये प्रदूषक फेफड़ों की तंत्रिकाओं के सिरे की सतह पर मौजूद रिसेप्टर प्रोटीन, जिसे टीआरपीए1 कहते हैं, को सक्रिय कर देता है। जिससे संवेदी तंत्रिकाएं क्रियाशील हो जाती हैं और कफ रिफ्लक्स ट्रिगर हो जाता है। इससे बचने के लिए जरूरी है कि वातावरण में अधिक धूल व प्रदूषण होने पर बाहर ना निकलें। अच्छे मास्क या रूमाल का इस्तेमाल करें। साफ-सफाई का ध्यान रखें।

कितनी तरह की खांसी

सूखी खांसी : इसे ड्राई कफ कहते हैं। इसमें खुश्की होती है, अधिकतर बलगम साथ नहीं होता। लगातार खांसी चलती है, जैसे कोई चीज गले में अटक गई हो। सूखी खांसी बलगम वाली खांसी से अधिक गंभीर होती है।

बलगम वाली खांसी : बलगम वाली खांसी में खांसने पर कफ निकलता है। अगर यह खांसी तीन सप्ताह से अधिक समय से हो रही हो तो डॉक्टर को दिखाएं। बलगम में लाल शेड दिखाई दे तो यह न्यूमोनिया, टीबी, कंजेस्टिव हार्टफेल्योर(हृदय का प्रभावी ढंग से रक्त पंप ना करना) और फेफड़ों के कैंसर के कारण हो सकता है। इसमें जांच जरूरी है। बलगम दूर करने के लिए एंटीबायोटिक और दूसरी दवाएं ली जाती हैं और ब्रीदिंग से संबंधित दूसरे उपचार किए जाते हैं। कुछ मामलों में सर्जरी की आवश्यकता होती है।

रात में आने वाली खांसी : कई लोगों को खांसी रात में परेशान करती है, इससे नींद अव्यवस्थित हो जाती है। अगर लेटने पर खांसी बढ़ रही है तो सिर को थोड़ा ऊंचा उठा लें। एक अतिरिक्त तकिया लगाकर सोने से खांसी कम उठेगी। ह्यूमिडीफायर का इस्तेमाल करें, इससे बेडरूम में नमी बनी रहेगी। बेडरूम साफ रखें, प्रदूषक तत्व और धूल, एलर्जी का कारण बन सकते हैं, जिससे खांसी उठने लगती है।

लगातार खांसी होना : जो खांसी आठ सप्ताह या उससे अधिक रहती है, उसे क्रॉनिक कफ कहते हैं। क्रॉनिक कफ के 90 फीसदी से अधिक मामले दमा, एलर्जी या एसिड रिफ्लक्स के कारण होते हैं। कई लोगों में सीओपीडी के कारण क्रॉनिक कफ समस्या होती है। तुरंत उपचार कराना जरूरी है। बहुत कम मामलों में यह फेफड़ों के कैंसर व हार्ट फेलियर के कारण हो सकता है।

तो सतर्क हो जाएं

- बच्चों में चार और वयस्कों में आठ सप्ताह से अधिक खांसी रहे।
- गंभीर वायरस संक्रमण हो।
- बिना किसी अन्य स्वास्थ्य समस्या के खांसी का लगातार तीन सप्ताह से अधिक समय तक बना रहना।
- बलगम में खून आना।

जांच का तरीका

एसिड रिफ्लक्स टेस्ट : इसोफेगस में एसिड की मात्रा पता लगाने के लिए कराया जाता है।

म्युकस का लैब टेस्ट : बलगम में बैक्टीरिया की उपस्थिति का पता लगाने के लिए।

लंग फंक्शन टेस्ट : जांचते हैं कि सांस छोड़ते समय व्यक्ति कितनी वायु बाहर निकालता है। सीओपीडी की पहचान के लिए यह जरूरी है।

इनका रखें ध्यान

- पूरा दिन गर्म पानी पीते रहें। गले में नमी भी रहेगी। खांसी में आराम मिलेगा। बलगम पतला करेगा।
- एलर्जी करने वाली चीजों से बचें। घर से बाहर निकलते समय मॉस्क लगाएं। एन95 या पी100 फेस मॉस्क(रेस्पिरेटर्स) का इस्तेमाल करें। प्रदूषकों के खिलाफ प्रभावी काम करता है।
- अधिक ठंड व प्रदूषण में बाहर ना निकलें। व्यायाम घर के अंदर ही करें। आप जितनी तेजी से सांस लेंगे, उतना ही आपके फेफड़ों में प्रदूषक अधिक प्रवेश करेंगे।
- एसिड रिफ्लक्स की समस्या है तो मसालेदार भोजन, खट्टे फलों, पुदीना, चॉकलेट और कैफीन के सेवन से बचें, ये एसिड रिफ्लक्स को ट्रिगर करते हैं।
- भाप लें, धूम्रपान से बचें।

घरेलू उपायों से पाएं राहत

- हल्दी एक बेहतरीन एंटीबायोटिक है। रात में सोने से पहले एक गिलास गुनगुना हल्दी वाला दूध पीने से सर्दी-खांसी में राहत मिलती है।
- गले की खराश के साथ खांसी है तो गुनगुने पानी में नमक के साथ थोड़ी हल्दी मिलाकर गरारे करें। खराश में आराम मिलेगा व खांसी भी दूर होगी।
- लगातार खांसी है तो अदरक को छोटे टुकड़ो में काट लें। थोड़ा नमक मिलाकर उन्हें चबाएं। आराम मिलेगा।
- पानी में काली मिर्च, जीरा और गुड़ मिलाकर उबाल लें। छानकर गुनगुना पिएं, छाती की जकड़न से आराम मिलेगा।
- अदरक, शहद व तुलसी की चाय पिएं। पुदीने की चाय भी फायदा पहुंचाती है।

एक्सरे : कैंसर या दूसरे संक्रमण जैसे न्यूमोनिया का पता चलता है। संक्रमण का पता लगाने के लिए साइनस का एक्सरे भी लिया जाता है।

ब्रोंकोस्कोपी : वायुमार्ग की आंतरिक परत की जांच के लिए इसे कराते हैं।

राइनोस्कोपी : इसमें नाक की नली के मार्ग की आंतरिक स्थिति देखी जाती है।

हल्की खांसी के लिए उपचार की जरूरत नहीं पड़ती है। हल्का संक्रमण एक सप्ताह में ही ठीक हो जाता है। आराम करें। ढेर सारा पानी पिएं। अन्य मामलों में उपचार खांसी के साथ दिखने वाले दूसरे लक्षणों पर निर्भर करता है।

खांसी का कारण और उपचार

(डॉक्टरी परामर्श के बिना अपने डॉक्टर खुद न बनें)

एसिड रिफ्लक्स : एसिड रिफ्लक्स के असर को कम करने या रोकने के लिए एंटासिड और प्रोटॉन पंप इन्हीबिटर का इस्तेमाल किया जाता है।

अस्थमा : अस्थमा के लिए स्टेरॉएड और ब्रोंकोडाइलैटर्स का इस्तेमाल किया जाता है। इससे फेफड़ों की सूजन कम होती है और संकरा एअर पैसेज खुल जाता है, जिससे सांस लेने में आसानी होती है।

पोस्ट नेजर ड्रिप :डिकन्जस्टेंट, एंटीहिस्टामिन और स्टेरॉएड नेजल स्प्रे का प्रयोग म्युकस को पतला करने, बाहर निकालने और नली की सूजन कम करने के लिए किया जाता है।

क्रॉनिक ब्रोंकाइटिस :: ब्रोंकाइटिस गंभीर होने पर भी स्टेरॉएड्स व ब्रोंकोडाइलैटर्स का इस्तेमाल किया जाता है।

संक्रमण : न्यूमोनिया और दूसरे वायरस संक्रमण में एंटीबायोटिक दवाएं दी जाती है।

वीनस ऑफ इंडियन सिनेमा

लो फिर याद आ गई वो भूली दास्तां

- पुष्कर जोशी

नीली आंखें, सांचे में ढला चेहरा, दिलकश मुस्कान, मरमरी हाथ और तराशा हुआ संगमरमरी बदन ..... ताजा हवा के झोंके के मानिन्द था उसकी खूबसूरती का पैमाना। मदहोश कर देने वाली खुशबू और ओस-सी मासूमियत भरी ताज़गी। इस शब्द चित्र में जो तस्वीर उभरती है वह है 'मुगल-ए-आज़म' की बेहद खूबसूरत और मासूम अभिनेत्री मधुबाला, जिसका वास्तविक नाम था मुमताज बेगम जहां देहलवी

कभी-कभी दावे दिलचस्प भी हुआ करते हैं। एक संगतराश का दावा था कि उसे देखकर सिपाही अपनी तलवार, शहंशाह अपना ताज़ और आम इंसान अपना दिल निकालकर उसके कदमों में रख देंगे। वो तारीख जिस दिन दुनिया मोहब्बत का दम भरती है, उसी तारीख 14 फरवरी, 1933 को दिल्ली में जन्मी इस बाला को कुदरत ने बला की खूबसूरती बख़्शी। कभी-कभी बेशकीमती हीरा भी गर्द उड़ाती पगडंडी के किनारे खोया हुआ मिल जाता है। मुमताज उर्फ मधुबाला का जन्म एक ऐसे गरीब परिवार में हुआ, जहां दो जून की रोटी भी बड़ी मुश्किल से मयस्सर हो पाती थी। इस मुसलिम परिवार के ग्यारह भाई-बहनों में से वह पांचवी संतान थी। बचपन कठिन संघर्ष में बीता, परन्तु पिता अताउल्ला खां को एक फ़कीर की भविष्यवाणी याद थी कि 'इसके माथे पर नूर है और ये लड़की बहुत नाम कमाएगी। इसे परखने के लिए वे जीविका के अभाव में मुंबई पहुंचे। भाग्य ने उनके दर पर दस्तक दी और 'बसंत' फिल्म में आठ साल की नन्हीं बच्ची को मामूली रोल मिल गया। सुपरस्टार देविका रानी ने बेबी मुमताज को मधुबाला नाम और फिल्मों में काम दिया। 1947 में चौदह वर्ष की उम्र में उसे केदार शर्मा ने अपनी फिल्म 'नीलकलम' में बतौर लीड हीरोइन साइन किया। जब वह 'पराई आग' की शूटिंग में थी तो कमाल अमरोही ने उसके सौन्दर्य को अपनी फिल्म 'महल' में उतारना चाहा। कमाल ने इस मासूम अदाकार की सुन्दरता को बड़ी ही नफ़ासत से इस फिल्म के एक गीत 'आएगा आने वाला' में प्रस्तुत किया। दोनों प्यार के दीवाने हुए, परन्तु कमाल शादीशुदा थे। इसी दौरान मधुबाला के दिल में छेद होने का पता चला। एक तरफ़ बॉलीवुड में दिलकश और शानदार उत्थान का मौका। वहीं दूसरी ओर इस ख़तरनाक बीमारी की आहट। वे अपनी बीमारी को छिपाती रही, मगर 1954 में 'बहुत दिनों' की शूटिंग के दौरान हुई खून की उल्टी से मीडिया में खबर फैल गई। मधुबाला के जीवन में पहली बार निराशा छाई और वह प्यार पाने और शादी करने को उतावली हो गई। फिर उनकी जिंदगी में प्रेमनाथ आए, लेकिन दोनों के बीच पटरी नहीं बैठ पाई। फिल्म 'तराना' के सेट पर दिलीप कुमार से उनकी आंखें चार हुई। बदले में सच्चे प्यार का इज़हार भी हुआ और उनकी सच्ची मोहब्बत परदे पर भी नज़र आई। लेकिन इस रिश्ते पर किसी का पहरा था और वह था उनके पिता अताउल्ला खां का। वे इस मेलजोल से नाखुश थे। फिर भी मधुबाला व दिलीप के बीच रोमांस चलता रहा। इसकी खुशबू आसिफ की फिल्म 'मुगल-ए-आज़म' में बिखरनी शुरू हुई। कहते हैं इस फिल्म में मधुबाला ने बिना पैसे के काम किया, इस उम्मीद से कि वो केवल सेट पर दिलीप कुमार की बार-बार झलक पाना चाहती थी। इसी बीच 'नया दौर' में बी. आर. चौपड़ा ने दोनों को साइन किया। पिता आउटडोर शूटिंग को लेकर अदालत में मामला तक ले गए। यहीं से दिलीप व मधुबाला के रास्ते जुदा हो गए, क्योंकि दिलीप ने शादी की शर्त रखी थी कि उसे पिता अताउल्ला खां से अलग होना पड़ेगा। घनी उदासी और पस्तगी की धुंध में एक सच्चा प्यार तनहाइयों के बीच मर गया। उसका स्वास्थ्य लगातार साथ छोड़ रहा था। मरने से पहले वो शादी के बंधन में बंध कर एक आदर्श पत्नी बनना चाहती थी, पर कुदरत को शायद यह मंजूर नहीं था। इसी बीच उसके जीवन में भरत भूषण, प्रदीप कुमार और किशोर कुमार आए। आखिरकार मधुबाला ने किशोर कुमार से शादी कर ली, लेकिन दिलीप की जगह वो किसी को न दे पाई। किशोर के साथ वह हार्ट सर्जरी के लिए लंदन गई। वापसी पर उन्हें महसूस होने लगा कि किशोर के साथ शादी उनकी सबसे बड़ी भूल थी। वह अने पुराने घर लौट आई और किशोर से बढ़ती दूरियां गहरी खाइयों में तब्दील होती गई। मौत की पदचाप अब उसे सायं-सायं करती हुई सुनाई देने लगी। उसने अपनी पसंदीदा सभी फिल्में 'मुगल-ए-आज़म', 'बरसात की रात', 'चलती का नाम गाड़ी', 'महल' कई-कई बार देख ली। 'जब प्यार किया तो डरना क्या' गाना तो करीब 500 बार सुन भी लिया। आखिर दिनों में उनकी दिलीप से बातचीत होने लगी थी। वे मरना नहीं चाहती थी। 36 साल की छोटी-सी उम्र में सुन्दरता की बेमिसाल मूरत मधुबाला अधूरे ख़्वाब व प्यार तथा उदासी, अलगाव और टूटे वायदों को अपने दिल में समेटे हुए धुप्प काली रात में इस दुनिया से रुख़सत कर गई। इसी के साथ वेलेन्टाइन डे को प्यार की अनमोल निशानी के रूप में बॉलीवुड को मिली वह अक़्स-ए-खुशबू इसी महीने की 23 फरवरी 1969 को बेमुरव्वत होकर बिखर गई।

मैं अक़्स-ए-खुशबू हूं बिखरने से न रोके कोई,
और बिखर जाऊं तो मुझे न समेटे कोई।

With Best Compliments from

VARDHAN BOOK HOUSE

(Vardhan Publishers & Distributors)

(Educational Book Seller & Distributors)
Shop No. 240, Chaura Rasta, Jaipur-302003

We Deal in all kinds of Technical and Non-Technical Book. We are the Library suppliers of Nursing, Medical, Dental, Homeopathy, Pharmacy, Technical and other College books. We also published Medical (Nursing) & Technical Books under the Name **"VARDHAN PUBLISHERS & DISTRIBUTORS".**

थायरॉइड

समय पर निदान निहायत जरूरी

भारत में चार करोड़ से ज्यादा लोग थायरॉइड से पीड़ित हैं। महिलाओं के इसके शिकार होने की आशंका पुरुषों से चार गुना ज्यादा होती है, पर समस्या यह है कि अधिकांश को पता ही नहीं होता कि उन्हें थायरॉइड है। इसके लक्षण धीरे-धीरे असर दिखाते हैं, इसलिए पहचान में भी समय लग जाता है। शुरुआती स्तर पर ही इसे पहचानने और काबू में रखने के लिए नियमित जांच जरूरी है, बता रहे हैं **डॉ. रवि मलिक**

थायरॉइड मानव शरीर का एक प्रमुख एंडोक्राइन ग्लैंड यानी अंत:स्रावी ग्रंथि है। यह गर्दन के निचले हिस्से में होती है। छोटी-सी यह ग्रंथि शरीर में हार्मोन का निर्माण करती है और मेटाबॉलिज्म को नियंत्रित रखती है। थायरॉइड ग्रंथि के सही तरीके से काम करने से आशय है कि शरीर का मेटाबॉलिज्म यानी भोजन को ऊर्जा में बदलने की प्रक्रिया भी सुचारू रूप से काम कर रही है। पर जैसे ही यह ग्रंथि घटनी और बढ़नी शुरू होती है तो मानव जीवन के लिए परेशानियां शुरू हो जाती हैं। इस ग्रंथि का असर हृदय, मांसपेशियों, हड्डियों और कोलेस्ट्रॉल के स्तर पर भी पड़ता है।

थायरॉइड के प्रकार व लक्षण

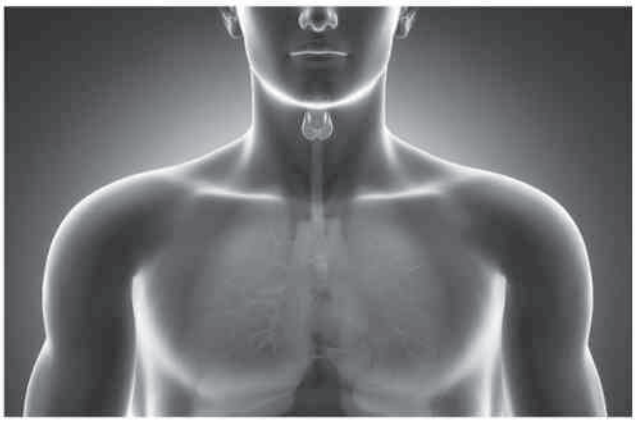

हाइपोथायराइड : इस स्थिति में थायरॉइड ग्रंथि की प्रक्रिया सुस्त हो जाती है, जिस वजह से आवश्यक टी थ्री व टी फोर हार्मोन का निर्माण नहीं हो पाता और अनावश्यक रूप से वजन बढ़ने लगता है। किसी भी काम में मन नहीं लगता, कब्ज रहने लगता है और ठंड भी बहुत लगती है। कई लोगों की आंखों में सूजन, महिलाओं में माहवारी चक्र का अनियमित होना, त्वचा का सूखा और बेजान होना, पैरों के जोड़ों में सूजन व ऐंठन रहना आदि लक्षण दिखने लगते हैं।

हाइपरथायरॉइड : इस स्थिति में थायरॉइड ग्रंथि तेजी से काम करने लगती है, जिसके कारण टी थ्री और टी फोर हार्मोन अधिक मात्रा में निकल कर खून में मिलने लगते हैं। इससे वजन कम होने लगता और व्यक्ति दुबलेपन का शिकार हो जाता है। इस स्थिति में भूख ज्यादा लगती और मांसपेशियां कमजोर हो जाती हैं। मन में निराशा हावी हो जाती है। धड़कन बढ़ जाती और अनिद्रा की समस्या शुरू हो जाती है। पसीना अधिक आता है। गर्मी सहन नहीं होती। दस्त रहने लगते हैं। महिलाओं में माहवारी की अनियमितता और प्रजनन क्षमता में कमी के तौर पर भी इसका असर देखने को मिलता है।

क्या हैं कारण?

- थायरॉइड का एक कारण है तनाव। रोजमर्रा की परेशानियां जब नियमित तनाव का कारण बन जाती है तो इसका सबसे पहला असर थायरॉइड ग्रंथि पर पड़ता है। यह ग्रंथि हार्मोन के स्राव को बढ़ा देती है।
- कई बार कुछ दवाओं के प्रतिकूल प्रभाव से भी थायरॉइड होता है।
- भोजन में आयोडीन की कमी या फिर नमक का ज्यादा इस्तेमाल भी थायरॉइड की समस्या पैदा कर सकता है।
- परिवार के किसी सदस्य को थायरॉइड होने पर इसके होने की आशंका और बढ़ जाती है।
- ग्रेव्स रोग थायरॉइड का बड़ा कारण है। इसमें थायरॉइड ग्रंथि से थायरॉइड हार्मोन का स्राव बहुत अधिक बढ़ जाता है। ग्रेव्स रोग ज्यादातर 20 और 40 की उम्र के बीच की महिलाओं को प्रभावित करता है।
- लगातार ऊंचा तकिया लगा कर सोने, पढ़ने व टीवी देखने से भी थायरॉइड की समस्या हो सकती है।

कुछ अन्य लक्षण

• आवाज भारी होना, • गर्दन में गांठ या सूजन व गर्दन के निचले हिस्सों में दर्द • लगातार सिरदर्द होना, • बोलने व सांस लेने में कठिनाई व सांस तेजी से चलना(सांस फूलना), • थोड़े से शारीरिक श्रम में थकान महसूस करना।, • अवसाद के साथ-साथ अधिक नींद आना या अनिद्रा की समस्या देखने को मिलती है। खास यह है कि अधिकतर लोगों का पता ही नहीं होता कि उन्हें थायरॉइड है। इसके लक्षण सामान्य होने के कारण अक्सर लोग जांच में लापरवाही बरतते हैं।

महिलाएं हैं अधिक शिकार

पुरुषों के मुकाबले महिलाएं थायरॉइड की अधिक शिकार हो रही हैं। तनाव और अवसाद इसकी एक बड़ी वजह है। थायरॉइड की वजह से महिलाओं को मोटापा, तनाव, कोलेस्ट्रॉल, बांझपन, ऑस्टियोपोरोसिस व अवसाद जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हालांकि इस बारे में कई मिथक भी प्रचलित हैं, जैसे मरीज को जीवनभर दवाओं का सेवन करना होता है या बुजुर्ग महिलाओं को ही थायरॉइड होता है।

ब्लड जांच से ही पता चलती है बीमारी

शुरुआती स्तर पर पहचान होने पर थायरॉइड को न सिर्फ आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है, बल्कि इससे छुटकारा भी मिल जाता है। पर देर से पहचान होने पर ताउम्र दवा का सेवन करना पड़ सकता है। थायरॉइड की जांच ब्लड टेस्ट से की जाती है। ब्लड में टी थ्री, टी फोर एवं टीएसएच (थायरॉइड स्टिमुलेटिंग हार्मोन) टेस्ट किया जाता है।

किन चीजों के सेवन में बरतें सावधानी

- फूल गोभी, पत्ता गोभी या ब्रोकली का सेवन न करें।
- सोयाबीन, सोयामिल्क या उससे बने पदार्थों का सेवन कम करना चाहिए।
- थायरॉइड रोगियों के लिए धूम्रपान हानिकर होता है। सिगरेट के धुएं में पाया जाने वाला थायोसाइनेट थायरॉइड ग्रंथि को नुकसान पहुचाता है।
- जंक फूड और फास्ट फूड का सेवन कम से कम करें।

आयुर्वेद में भी है सफल उपचार

आयुर्वेद में थायरॉइड के सफल उपचार उपलब्ध हैं। मुलेठी, अश्वगंधा, गेहूं का ज्वारा, अलसी, अदरक, इचिन्सिया, बाकोपा, काले अखरोट, नींबी आम आदि जड़ी-बूटी थायरॉइड के इलाज में लाभदायक सिद्ध होते हैं। एक बार किसी अच्छे आयुर्वेदाचार्य से सलाह लेना आवश्यक है।

योग और संतुलित जीवनशैली है जरूरी

थायरॉइड की बीमारी को दूर करने में एक्यूपंचर काफी मददगार है। इसके अलावा थायरॉइड के मरीजों को नियमित रूप से योग और व्यायाम भी करना चाहिए। संतुलित खान-पान और व्यायाम से इसे पूरी काबू किया जा सकता है। इससे वजन बढ़ने, थकान एवं अवसाद जैसी स्थितियों से बचने में मदद मिलत है। योग में शवासन सर्वोत्तम है। लेटे हुए टीवी देखने और पढ़ने से बचें। तकिए का इस्तेमाल न करें। नियमित ब्लड टेस्ट करवाएं।

स्वयं यूं करें जांच

शीशे को इस तरह पकड़ें कि गर्दन के बीच वाले हिस्से को देख सकें। थायरॉइड ग्लैंड की यह सामान्य स्थिति है। अब अपना सिर पीछे की तरफ करें। शीशे से यह हिस्सा दिखता रहे। अब पानी पीएं और उसे नीचे की ओर जाते हुए गर्दन में आने वाले उभार या बनने वाले असामान्य आकार पर गौर करें। इस प्रक्रिया को दोहराएं। यदि बार-बार उभार दिख रहा है तो डॉक्टर से संपर्क करें।

किरणमल सावनसुखा

सुशीला सावनसुखा

जे.आर. भण्डारी एण्ड कम्पनी

जे.आर. भण्डारी एण्ड सन्स

हाथीपोल बाहर, उदयपुर (राज.)

फोन : (0294) 2524592, 2529617 (ऑ)

निवास : 94, न्यू फतेहपुरा, उदयपुर-313 004 (राज.)

पूस की रात

हिन्दी साहित्य कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने अपनी लेखनी से कागज पर जो भी उकेरा, वह शब्द ही नहीं, अपितु जीवंत दृश्य बिंब बन कर पाठकों के मनोमस्तिष्क में छा जाता है। कहानी पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे घटनाचक्र अपनी आंखों के सामने ही घूम रहा है। बरसों पहले लिखी इस कहानी में पात्र बदल गए, परन्तु भुग्तभोगी की व्यथा-कथा वही की वही है। आज भी देश का अन्नदाता विपन्नता और बेबसी से रूबरू है। प्रस्तुत है ऐसी ही दारुण परिस्थितियों को उजागर करती मुंशी प्रेमचंद जी की यह कहानी।

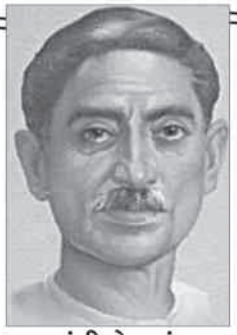

मुंशी प्रेमचंद

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा, 'सहना आया है, लाओ जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूं। किसी तरह गला तो छूटे।' मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली, 'तीन ही तो रुपये हैं, दे दोगे तो कंबल कहां से आएगा? माघ-पूस की रात खेतों में कैसे कटेगी? उससे कह दो फसल पकने पर रुपये दे देंगे। अभी नहीं।'

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस(पौष) सिर पर आ गया, कंबल के बिना हार (खेत)में रात को वह किसी तरह नहीं सो सकता। मगर मानेगा नहीं, यहीं घुड़कियां जमाएगा, गालियां देगा। बला से जाड़ों में मरेंगे, बला तो टल जाएगी। यह सोचता हुआ वह स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला, 'गला तो छूटे'। कंबल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूंगा।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आंखें तरेरती हुई बोली, 'कर चुके दूसरा उपाय!' जरा सुनूं कौन उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कंबल? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने में नहीं आती। मैं कहती हूं, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर कर काम करो, उपज हो तो बाकी में चुकाओ, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रुपये न दूंगी-न दूंगी।

हल्कू उदास होकर बोला, 'तो क्या गाली खाऊं?' मुन्नी ने तड़पकर कहा 'गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है। मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौंहें ढीली पड़ गई। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जंतु की भांति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रुपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिए। फिर बोली, 'तुम दो अबकी से खेती।' मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। बला की खेती है। मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंकक दो, ऊपर से धौंस। हल्कू ने रुपये लिए इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकाल कर देने जा रहा है। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-कपट कर तीन रुपये कंबल के लिए जमा किए थे। वे आज निकले जा रहे हैं। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

पूस की अंधेरी रात! आकाश पर तारे ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बांस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े पड़ा कांप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुंह डाले सर्दी से कूं-कूं कर रहा था। दोनों में से एक को भी नींद न आती थी।

हल्कू ने घुटनियों को गर्दन में चिपकाते हुए कहा, 'क्यों जबरा, जाड़ा लगता है?' कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रहो। यहां क्या लेने आए थे? अब खाओ ठंड, मैं क्या करूं? जानते थे, मैं यहां हलवा-पूरी खाने आ रहा हूं, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आए। अब रोओ नानी के नाम को।' जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलाई और अपनी कूं-कूं को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान-बुद्धि ने शायद ताड़ लिया, स्वामी को मेरी कूं-कूं से नीन्द नहीं आ रही है।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा, कल मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह पछुआ(पश्चिम से आने वाली हवा) न जाने कहां से बरफ लिए आ रही है। उठूं, फिर एक चिलम भरूं। किसी तरह रात तो कटे! आठ चिलम पी चुका। यह खेती का मजा है! और एक-एक भगवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाए तो गर्मी से घबराकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ, कम्बल! मजाल है, जाड़े का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें।'

हल्कू उठा और गड्ढे में से जरा-सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा। हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा, 'पिएगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, हां ज़रा सा मन बहल जाता है।' जबरा ने उसके मुंह की ओर प्रेम से छलकती हुई आंखों से देखा। हल्कू-आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहां पुआल बिछा दूंगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा। जबरा ने अगले पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके

मुंह के पास अपना मुंह ले गया। हल्कू को उसकी गर्म सांस लगी।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो, अबकी सो जाऊंगा। पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कंपन होने लगा। कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भांति उसकी छाती को दबाए हुए था। जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे से उठाया। उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से न जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर उसे अपनी गोद में चिपटाए हुए एक ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था कि स्वर्ग यहां है और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता..... ।

एक घंटा और गुजर गया। रात के शीत ने हवा में धधकना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है। सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जाएंगे तब कहीं सवेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है। हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग था। पतझड़ शुरू हो गई थी। बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियां बटोरूं और उन्हें जलाकर खूब तापूं। रात को कोई मुझे पत्तियां बटोरते देखे तो समझे कोई भूत है। कौन जाने कोई जानवर ही छिपा बैठा हो, मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता। उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिए और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिए बगीचे की तरफ चला। जबरा ने उसे आते देखा, तो पास आया और दुम हिलाने लगा। हल्कू ने कहा, 'अब तो नहीं रहा जाता जबरू!' चलो, बगीचे में पत्तियां बटोरकर तापें, टांटे (अच्छे) हो जाएंगे, तब फिर आकर सोएंगे। अभी तो रात बहुत है। जबरा ने कूं-कूं करके सहमति प्रकट की और आगे-आगे बगीचे की ओर चला। बगीचे में खूब अंधेरा पसरा हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूंदे नीचे टपटप टपक रही थीं ..... ।

हल्कू ने आग ज़मीन पर रख दी और पत्तियां बटोरने लगा। ज़रा देर में पत्तियों का एक ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा। थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर संभाले हुए हों। अंधकार के उस अनंत सागर में यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था। हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण उसने दोहर उतार कर बगल में दबा ली और दोनों पांव फैला दिए, मानो ठंड को ललकार रहा हो, तेरे जी में जो आए सो कर! ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय-गर्व को हृदय में छिपा न सकता था। उसने जबरा से कहा, 'क्यों जबरू, अब तो ठंड नहीं लग रही है?' जबरा ने कूं-कूं करके मानो कहा, 'अब क्या ठंड लगती ही रहेगी।' 'पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं तो इतनी ठंड क्यों खाते।' जबरा ने पूंछ हिलाई .....

पत्तिया जल चुकी थी। बगीचे में फिर से अंधेरा छाया था। राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जाग उठती, पर एक क्षण में फिर आंखें बंद कर लेती। हल्कू ने चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गई थी, पर ज्यों-ज्यों सर्दी बढ़ती जाती, उसे आलस्य दबाए लेता था। जबरा जोर-जोर से भूंककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुण्ड उसके खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुण्ड था। उनके कूदने-दौड़ने की आवाजें साफ कान में आ रही थी। फिर ऐसा मालूम हुआ कि वह खेत में चर रही हैं। उसने दिल में कहा, 'नहीं जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डाले। मुझे भ्रम हो रहा है। कहां? अब तो कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ है।' उसने जोर से आवाज लगाई, 'जबरा, जबरा!' जबरा भूंकता रहा। उसके पास न आया। फिर खेत में चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना ज़हर लग रहा था। कैसा दनदनाया हुआ बैठा था। इस जाड़े-पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असूझ जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला। उसने जोर से आवाज लगाई, 'होलि-होलि! होलि!'

सवेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी। और मुन्नी कह रही थी, 'क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहां आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।' हल्कू ने उठकर कहा, 'क्या तू खेत से होकर आ रही है?' मुन्नी बोली, 'हां, सारे खेत का सत्यानाश हो

जबरा फिर भूंक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फसल पकने को तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं। हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभने वाला, बिच्छू के डंक जैसा झोंका लगा कि बस बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा। जबरा अपना गला फाड़ डालता था, नीलगायें खेत का सफ़ाया किए डालती थीं और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भांति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था। वह उसी राख के पास गर्म जमीन पर चादर ओढ़कर सो गया। सवेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी। और मुन्नी कह रही थी, 'क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहां आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।' हल्कू ने उठकर कहा, 'क्या तू खेत से होकर आ रही है?' मुन्नी बोली, 'हां, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला ऐसा भी कोई सोता है। तुम्हारे यहां मड़ैया डालने से क्या हुआ?' हल्कू ने बहाना किया, 'मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दर्द हुआ कि मैं ही जानता हूँ। दोनों फिर खेत की डांड पर आए। देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है और जबरा मड़ैया के नीचे चित लेटा है, मानो प्राण ही न हों। दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी। पर हल्कू प्रसन्न था। मुन्नी ने चिंतित होकर कहा, 'आज मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।' हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा, 'रात की ठंड में यहां तो सोना न पड़ेगा।' **(कथा दर्पण से)**

ग्वारपाठे का अद्भुत रोग-निवारक उपाय

- भगवानलाल शर्मा

ग्वारपाठा या घृतकुमारी नाम से हर जगह विद्यमान यह वनस्पति प्रकृति का अमूल्य वरदान है। इसके एक नहीं सैंकड़ों लाभदायक प्रयोग होते हैं। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा कई बीमारियों में उपयोगी इस वनस्पति का सौन्दर्य प्रसाधनों में भी प्रचुर उपयोग हो रहा है। बाजार में अनेक पैकेज्ड ब्रांड उपलब्ध हैं। प्रस्तुत है इसके कुछ उपयोगी प्रयोग, जिसे हम स्वयं तैयार कर सकते हैं।

सिर दर्द में ग्वारपाठे का प्रयोग

ग्वार पाठा या घृतकुमारी नामक वनस्पति अत्यन्त सुलभ है। गांव, देहात या शहर के बाहरी हिस्सों में यह बहुतायत से पाया जाता है। कई बीमारियों में अनुभूत और परीक्षित होने के बावजूद, जानकारी के अभाव में यह अद्भुत औषधीय वनस्पति बेकद्री की शिकार है। अब चिकित्सा विज्ञान भी अनेकानेक बीमारियों और सौन्दर्य प्रसाधनों में इसका काफी इस्तेमाल कर रहा है। एलोवेरा के नाम से कई पैकेज्ड उत्पाद बाजार में छाए हुए हैं। सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए ग्वारपाठे के प्रयोग से बेहतरीन प्रभावी राहत और निदान संभव है। चाहे कैसा भी सरदर्द रहता हो इसके प्रयोग से चमत्कारिक रूप से राहत मिल सकती है। सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि ग्वारपाठे के इस प्रयोग और तैयारी को अलसुबह सूर्योदय से पहले पूरा कर लिया जाना चाहिए। तरीका बड़ा आसान भी है और प्रभावी भी। सबसे पहले ग्वारपाठे को छील कर उसका हरे भाग वाला गुदा निकाल लें। इसे मिक्सी में पीसकर पेस्ट बना लें। अब गेंहू का आटा और यह पेस्ट हाथों से गूंद कर एकमेक कर लें। चूंकि ग्वार पाठे का पेस्ट काफी चिकना होता है अत: यह हाथों में फिसल-सा जाता है, इसलिए दोनों को अच्छी तरह मिला लें। इन दोनों की मात्रा आधी-आधी लें तथा अंदाज यह रहे कि दोनों की दो बाटी बन जाए। अब दोनों बाटी या तो अंगीरे पर धीमी आंच में सेक ली जाए अथवा कुकिंग रेंज वाले किसी बाटी सेकने वाले उपकरण में रख कर धीमी आंच से पका ली जाए। सिक जाने पर दोनों बाटियों को गाय के शुद्ध देशी घी में फोड़ कर कुछ देर रहने दी जाए। सुबह नियमित कामकाज से निपट कर दोनों बाटियों को चबा-चबा कर खाया जाए और खाने के बाद पानी नहीं पिएं। इसके तुरन्त बाद चादर ओढ़ कर पन्द्रह मिनट तक बाईं करवट लेटा जाए। यह सब सूर्योदय से पूर्व करने पर कुछ ही दिनों में कैसा भी सिरदर्द हो आराम होने की पूरी संभावना है। इन बाटियों का बासी प्रयोग फायदा नहीं देता है। इस प्रयोग को इक्कीस दिन नियमित करने पर आशातीत परिणाम दिखलाई पड़ता है। हर प्रकार के सिरदर्द के रोगी इसका लाभ ले सकते हैं, परन्तु गंभीर रोगी या जिन्हें खाना हजम नहीं होने की बीमारी हैं, वे इसका प्रयोग न करें। ग्वारपाठे के गुण, धर्म एवं प्रकृति के लिए आयुर्वेद चिकित्सक से भी परामर्श लिया जा सकता है।

घुटनों के दर्द में भी लाभदायक है ग्वारपाठा

वैसे तो ग्वारपाठा पाचनतंत्र की रामबाण औषधि माना जाता है। पेट ठीक तो सब रोग धीरे-धीरे स्वत: दूर हो जाते हैं। इसके अलावा भी ग्वारपाठा शरीर के लिए अमृत तुल्य है। घुटना दर्द से निजात पाने के लिए एक कटोरी ग्वार पाठे का गुदा, एक कटोरी मूंग की दाल का आटा, एक से डेढ़ कटोरी देशी घी, तीन कटोरी शक्कर का बूरा, सोयाबीन का आटा एक कटोरी, तथा 25 ग्राम बादाम की जरूरत पड़ती है। पहले ग्वारपाठे का गुदा निकाल कर मिक्सी में पीस कर पेस्ट जैसा बना लें। इसे घी में डाल कर कड़ाही में भून लें। अच्छी तरह भूनने के बाद उसमें सोया आटा व मूंग का आटा तथा बचा हुआ घी डालकर बादामी रंग जैसा होने पर धीमी आंच से सिकाई कर लें। बाद में शक्कर का बूरा और कटी हुई बादाम डालकर लड्डू बना लें। शीतकाल व वसंत के इस मौसम में सुबह दूध के साथ इस मनपसंद लड्डू का सेवन करें। घुटनों के दर्द में ये लड्डू आराम पहुंचते हैं। साथ ही गुनगुनी धूप में बैठ कर पैरों के लिए उपयोगी योगासन करें।

TATA MOTORS
YODHA BHAROSEY Ka CHALLENGE
TATA YODHA
के सामने कोई और
पिक-अप न टिक पाये
TATA
लगी शर्त?
अन्य पिकअप के मुकाबले
3 गुना ज्यादा वारंटी *
कम मेन्टेनेन्स 20,000 कि.मी.
पर प्रत्येक सर्विस-जो दे ज्यादा बचत
यह है TATA का भरोसा
योद्धा-मेकेनिकल स्टीयरिंग के साथ भी उपलब्ध
योद्धा-1500 Kgs पेलोड के साथ भी उपलब्ध
योद्धा-डबल केबिन Non AC में भी उपलब्ध
* नियम व शर्तें लागू
TATA YODHA
Down Payment ₹79999*
शानदार स्कीम के साथ योद्धा
मिस्ड कॉल करें 09828070987
ट्रकों और बसों के निर्माता व अधिकृत विक्रेता
सी. के. मोटर्स
10-A, Old Industrial Area, Chittorgarh (Raj.)
चित्तौड़गढ, बांसवाड़ा, उदयपुर, डूंगरपुर
TATA Motorfinance driven by trust

नयेपन का सुखद एहसास

जनवरी का अंक बेहद आकर्षक लगा। दिन-प्रतिदिन 'प्रत्यूष' में नयेपन का एहसास हो रहा है। कई ज्वलंत विषय ऐसे लगे जैसे अगर उन पर सारगर्भित विचार न रखे जाते तो प्रिंट मीडिया की इस अच्छी पत्रिका का होना ही व्यर्थ हो जाता। 'समय की रेत पर छोड़ें कामयाबी के निशां' संपादकीय बेहतरीन बन पड़ा। परम्परागत विचारों से हटकर नया चिंतन, नवीन संदेश और समग्र दृष्टिकोण नजर आया। एक बेहतरीन पत्रिका पाठकों को नियमित रूप से मिलना सुखद है।

जी.एल. डांगी, बिल्डर

स्टेज 'पॉवर' वाला नहीं ' 'विल पॉवर वाला नेता चाहिए'

पिछले अंक में 'जिनके मस्तक पर दायित्व का सेहरा वे कब समझेंगे गणतंत्र का मर्म' आलेख दिल को छू गया। 'गण' और 'तंत्र' के बीच अब खाई ही नहीं दर्रा बन गया है। जो जीता वहीं सिकंदर बन कर नेता बड़ी अकड़ के साथ जनता से दूरी बना लेते हैं। महंगाई, गरीबी, खेती-किसानी, उद्योग-धंधे पिछले एक साल से सदमे से उबर नहीं पाए। मूलभूत मुद्दों से ध्यान भटका कर बेकार के मुद्दों को भुनाया जा रहा है। नोटबंदी और जीएसटी जैसे कठोरतम फैसले लेते वक्त यह तो देखा जाता कि इनका परावर्ती प्रभाव कितना घातक होगा। कॉरपोरेट घराने, रसूखदारों, ब्यूरोक्रेट्स और नेतागण की चौकड़ी देश को खोखला कर रही है। अब देश को 'स्टेज पॉवर' वाले नहीं, 'विल पॉवर' वाले नेता की जरूरत है।

नारायण असावा, समाजसेवी

राहुल की ताजपोशी के बाद असल मुकाबला अब

राहुल गांधी के कांग्रेस अध्यक्ष पद पर सुशोभित होने के समय पार्टी की रीति-नीति व खासियत भरा आलेख देने पर 'प्रत्यूष' बधाई का पात्र है। वंशवादी पार्टी होने के आरोप के बीच राहुल गांधी ने गुजरात में असाधारण रूप से चुनाव प्रचार को जो पैनी धार दी, उससे देश की राजनीति में वे एक परिपक्व नेता साबित हुए। वहां पर उनकी 'हार में भी जीत' छिपी है। भाजपा का गढ़ कांग्रेस के चुनावी भूकंप से हिचकोले खाता दिखाई दिया। 'राहुल ने उठाया सत्ता के ज़हर का प्याला' एक बेहतरीन आलेख है। अध्यक्ष बनने के साथ ही उनका इम्तिहान शुरू हो गया है। 2019 में मोदी के अश्वमेध के घोड़े को वे ही रोक सकते हैं।

लोकेश त्रिवेदी, उद्योगपति

आलेख ने चौंकाया भी और सावधान भी किया

'प्रत्यूष' के जनवरी अंक में 'थाली में हरा ज़हर' आलेख पढ़कर मन सिहरन से भर गया। आखिर सरकारों की नाक के नीचे ही जनता को साइलेंसर लगे तरीकों से तिल-तिल कर मरने को क्यों अभिशप्त किया जा रहा है ? आमतौर पर हर आदमी घर लौटते वक्त हरी सब्जी या फल जरूर घर लाता है। उसे क्या पता कि वह 'हरा ज़हर' घर ले जाकर परिवार को खिलाने वाला है। हरी सब्जी या फल को पैदा करने वाले किसान से लेकर आढ़तिये, व्यापारी सभी सेहत के दुश्मन बने हुए हैं। वे मुनाफ़ा कमाने की लालसा में इतने अंधे हो जाते कि घातक ज़हर भरने से नहीं चूकते। सरकारों को फर्क नहीं पड़ता कि कोई मिलावट, अस्पताल, सड़क पर मरे अथवा बदमाशों या उन्मादी भीड़ के हाथों मारा जाए।

– दिव्य माखीजा, व्यवसायी

शब्द ज्ञान

अंग्रेजी-हिन्दी शब्दों का सटीक प्रयोग

अनेक ऐसे शब्द होते हैं, जिनको प्रायः पर्याय समझ लिया जाता है। ऐसे शब्दों की व्यवहार में निकटता तो होती है, परन्तु अर्थ में कदापि नहीं। जानकारी के अभाव में प्रायः इन शब्दों के ठीक-ठीक प्रयोग नहीं हो पाता, जिसके कारण प्रायः अर्थ का अनर्थ होने की संभावना बनी रहती है। हर अंक में ऐसे समानार्थक शब्दों का सही अर्थ देने का प्रयास रहेगा।

Guarantee - प्रत्याभूत करना – प्रतिभूति के रूप में गारंटी देना।

Promise -वचन देना/वायदा करना-एक दूसरे के भविष्य के बारे में वायदा।

Assure - आश्वस्त करना – विश्वास हेतु दिया गया कथन/वचन।

Ensure - सुनिश्चित करना –किसी बात/तथ्य को ठोक बजाकर निश्चित करना।

Secure - प्रतिभूति देना – किसी ऋण आदि के प्रतिसंदाय की प्रतिभूति देना।

Warrant - समाश्वासन देना – ठीक तथा पर्याप्त आधार प्रस्तुत करना।

Harm - अपकार/अपहानि – कष्ट या दुःख देकर नुकसान पहुंचाना।

Hurt - चोट/ठेस – शारीरिक चोट या मानसिक ठेस पहुंचाना।

Damage - नुकसान/क्षति – संपदा या अन्य को नुकसान देने की कार्रवाई।

Injury-क्षत-विकृत किया हुआ-शरीर या रूप-रंग को आघातपूर्वक नष्ट करना।

Loss - हानि – कारोबार में लाभ न होना/कामकाज की हानि।

Impair - ह्रास करना – विकार उत्पन्न कर किसी को कमजोर बनाना।

Spoil - बिगाड़ना – नष्ट-भ्रष्ट या खराब करने की चेष्टा।

Honesty-ईमानदारी, आचरण और कृत्य में ईमानदार रहने की अवस्था।

Integrity - सत्यनिष्ठा – सच्चरित्र व विश्वासभाजन होने की स्थिति।

Sincerity - सच्चापन/कर्तव्यनिष्ठा – एक ऐसा भाव जिसमें सत्यता, निष्कपटता दिखलाई पड़े।

।। श्री देवनारायण नमः ।। ।। श्री गणेशाय नमः ।। ।। भैरवाय नमः ।। ।। जहाजपुरा माता ।।

कन्हैयालाल गुर्जर
94141 65338

सुरेश गुर्जर
मो.: 9929188856, 8764072938

भैरव वाटिका

हमारे यहाँ वाटिका में 12 कमरें उपलब्ध हैं।
साथ ही खाना बनवाने की सुविधा बर्तन, केट रिंग, बिस्तर उपलब्ध हैं।
शादी, पार्टी एवं मांगलिक कार्य हेतु सम्पर्क करें।

पता: रामपुरा से उभयेश्वर जी रोड, सज्जनगढ़ के नीचे, उदयपुर(राज.)

कन्हैयालाल गुर्जर

श्री देवनारायण केटरर्स एवं बर्तन भण्डार

हमारे यहाँ शादी पार्टी में खाना बनाने का ऑर्डर लिया जाता है एवं ऑर्डर से खाना बनाकर भी दिया जाता है व बर्तन, केटरिंग, टेन्ट, लाईट, बिस्तर, सलाद डेकोरेशन, आईस कटिंग, स्टॉल्स आदि की सुविधा हर समय उपलब्ध है।

श्री देवनारायण मिष्ठान भण्डार

हमारे यहाँ शुद्ध देशी घी की मिठाइयां मिलती है व फीका मावा, रबड़ी, पनीर एवं दूध-दूही के ऑर्डर लिये जाते हैं।

पता: कालका माता, आर.टी.ओ. रोड, पहाड़ा, उदयपुर (राज.)
मो.: नं.: 9414165338, 9928845002, 8764072939

रिफाइनरी-पेट्रोकेमिकल कॉम्पलेक्स का शुभारम्भ

मरुधरा के रेतीले धोरे होंगे स्वर्ण आभा से चमकीले, बाडमेर जिले के पचपदरा में 43129 करोड़ की रिफाइनरी-पेट्रोकेमिकल कॉम्पलेक्स का 16 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया कार्य शुभारम्भ

मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे और केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान सहित गण्यमान्य अतिथि रहे मौजूद

4 साल में पूरी होने वाली परियोजना के बाद यूएई जैसा विकसित होगा बाडमेर क्षेत्र

हजारों युवाओं को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार, रिफाइनरी के साथ लगेंगे पेट काक वेस्ट पर आधारित 262 मेगावाट बिजली संयंत्र और सैकड़ों अनुषंगी उद्योग।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 16 जनवरी को बाडमेर जिले के पचपदरा में प्रदेश के 70 साल के इतिहास में सबसे बड़े औद्योगिक विकास वाली 9 मिलियन मेट्रिक टन क्षमता की रिफाइनरी सह पेट्रोकेमिकल कॉम्पलेक्स का कार्य शुभारम्भ किया। इस अवसर पर केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान, मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सहित कई गण्यमान्य अतिथि भी मौजूद रहे। देरी से ही सही परन्तु आखिरकार प्रदेश में देश की सबसे अत्याधुनिक बीएस-6 मानक और 43,129 करोड़ लागत वाली रिफाइनरी के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। उल्लेखनीय है कि प्रदेश की पूर्ववर्ती गहलोत सरकार ने 22 सितम्बर, 2013 को इसी जगह और इसी कंपनी के साथ मिलकर रिफाइनरी का शिलान्यास करवाया था। विधानसभा और आम चुनाव में कांग्रेस की पराजय के बाद रिफाइनरी का काम खटाई में पड़ गया। देश में यूपीए की जगह एनडीए और राज्य में कांग्रेस की बजाय भाजपा की सरकार बन गई। मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने रिफाइनरी स्थापना अनुबंध को घाटे का सौदा बताते हुए समीक्षा के नाम पर इसे निरस्त कर दिया। एक दो महीने नहीं पूरे तीन वर्ष तक स्थापना कार्य को अटका-लटका कर रखा गया। कुछ माह पहले एचपीसीएल के साथ नए सिरे से पचपदरा में रिफाइनरी लगाने का निर्णय किया गया। लम्बे समय तक राजनीति की फुटबाल बनी इस रिफाइनरी को लेकर इस बार आमजन उत्साहित नहीं दिखते हैं। बताया जा रहा है कि यह चार साल में बनकर पूरी हो जाएगी और इस पर 43,129 करोड़ रुपये खर्च होंगे। 9 मिलियन मेट्रिक टन क्षमता वाली यह रिफाइनरी बीएस-6 मानक वाली होगी, जो देश में सबसे अत्याधुनिक होगी। एचपीसीएल कंपनी की यह सबसे बड़ी परियोजना है। सरकार का कहना है कि इस नई परियोजना से प्रदेश को 40 हजार करोड़ का फायदा होगा। पूर्ववर्ती सरकार के एमओयू में राज्य सरकार को 15 वर्षों तक 3637 करोड़ रुपये ब्याज मुक्त ऋण देना था। अब नए हिसाब से सरकार को प्रतिवर्ष सिर्फ 1123 करोड़ रुपये का ब्याज मुक्त ऋण देना होगा। एचपीसीएल की हिस्सेदारी 74 प्रतिशत और राज्य सरकार की भागीदारी 26 फीसद होगी।

शुरू हुआ आरोप-प्रत्यारोप का दौर

शुभारम्भ की रस्म अदायगी से पहले ही कांग्रेस ने कहा कि पूर्ववर्ती एमओयू में 37227 करोड़ में जो रिफाइनरी चार साल में बनने वाली थी, वह अब 43129 करोड़ में बन रही है। इसके अलावा वह अब तक तो बन कर प्रोसेस भी शुरू कर देती। इससे हजारों लोगों को रोजगार और करोड़ों रुपयों का निवेश भी हो जाता। राज्य सरकार का खजाना भी भरने लगता। वहीं भाजपा का कहना है कि पहले 15 साल तक सरकार को जो सालाना देना पड़ता अब नए करार के तहत उसमें सालाना 2514 करोड़ रुपये की बचत होगी। लागत बढ़ने का कारण एक एक्स्ट्रा प्रोसेसिंग यूनिट का बढ़ना और बीएस-6 मानक लागू होना भी है। पहले रिफाइनरी बीएस-3 वाली ही लगनी थी। अब यह उच्च गुणवत्ता के साथ सबसे रिफाइंड तेल होगा, जो पूरी तरह इको-फ्रेंडली रहेगा। इसके अलावा रिफाइनरी लगने से नायलोन, प्लास्टिक बेस, पीवीसी पाइप, कीटनाशक बनाने वाले, फर्टिलाइजर, कॉस्मेटिक सहित कई उद्योग लगने से एक लाख से अधिक लोगों को किसी ने किसी तरह रोजगार मिलेगा। सरकार का कहना है कि पहले जो शिलान्यास करवाया गया था वह चुनावी आचार संहिता लगने के पांच दिन पहले राजनैतिक लाभ को दृष्टिगत रखते हुए करवाया गया। यहां तक कि न जमीन की लीज डीड जारी हुई और न ही परियोजना की फिजिबिलिटी रिपोर्ट। जबकि इस बार पूरी तैयारी के साथ कार्य को आरंभ किया गया है। 2022 से पहले रिफाइनरी चालू भी हो जाएगी। देश का 25 प्रतिशत क्रूड ऑयल बाडमेर बेसिन से आता है। ऐसे में यहां रिफाइनरी लगाने का लाभ ही लाभ होगा। बाडमेर के धोरों से निकलने वाला 1.75 लाख बैरल क्रूड ऑयल कम पड़ेगा। ऐसे में वेदान्ता अगले कुछ ही सालों में 37000 करोड़ का निवेश करेगा। इससे 5 लाख बैरल प्रतिदिन तेल का उत्पादन होगा। लेकिन भाजपा सरकार यह क्यों भूल रही है कि वह भी निहित स्वार्थ को भुनाने के लिए ही अब चार वर्ष बाद रिफाइनरी की सुध ले रही है। प्रदेश में अभी उपचुनाव और साल के अंत में विधानसभा चुनाव हैं।

यूएई जैसा बन जाएगा बाडमेर

देरी से ही सही अब पश्चिमी ओर से नया सवेरा अंगड़ाई ले रहा है। यदि विकास पर राजनीति का मुलम्मा अब नहीं चढ़े तो आने वाले दशक में मरुभूमि की किस्मत ही बदल जाएगी। पचपदरा में देश की पहली परियोजना होगी जहां रिफाइनरी और पेट्रो केमिकल कॉम्पलेक्स एक साथ होगा। इसके वेस्ट पेट कोक से 270 मेगावाट बिजली उत्पादन होगा। रिफाइनरी के अलावा सैकड़ों छोटे-मोटे सहायक उद्योग लगेंगे। रिफाइनरी से हजारों लोगों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तथा अनुषंगी उद्योगों से एक लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलेगा। अकेले प्रदेश को 700 करोड़ की सालाना आय क्रूड ऑयल से वैट के तौर पर मिलेगी। बाडमेर और आसपास के जिलों में सड़क, पानी, बिजली की आधारभूत सुविधाएं मिलने से यह इलाका संयुक्त अरब अमीरात की तरह खुशहाल बन जाएगा। इन्दिरा गांधी नहर से पाइप के जरिए पानी पहुंचेगा। इसके अलावा दूसरी बड़ी खबर यह है कि पहली बार नए साल में ही 1500 से अधिक गांवों तक नर्मदा का पानी पहुंचेगा। नर्मदा नहर का पानी 2012 में सांचौर के निकट सीलू गांव में पहुंचा। अब पेयजल के लिए यह सांचौर-जालोर होते हुए बाडमेर जिले के धोरीमन्ना क्षेत्र में पहुंच गया है और आगे चौहटन, रामसर व शिव के गांव शामिल हैं। वितरिकाओं का कार्य पूरा हो चुका है और पंप व हैड वर्क्स का काम चल रहा है। इस पर बाइस सौ सैंतीस करोड़ से अधिक खर्च होगा और नौ लाख की आबादी लाभान्वित होगी।

श्रेय लेने व विकास में राजनीति का अड़ंगा

कोई भी सरकार हो, यदि वह प्रदेश के विकास को पंख लगाना चाहती है तो उसे वोटों की राजनीति के बजाय उन्मुक्त दिल और दिमाग से काम करना चाहिए। आजादी के बाद बाडमेर सहित मरुभूमि के रेतीले धोरे वीरानी की चादर में लिपटे रहे। पेट्रोकेमिकल की खोज व अनुसंधान के नाम पर सरकारें सोती रही और देश की प्रचुर धन-संपदा विदेशी आयात की भेंट चढ़ती रही। बाडमेर में 2003 में तेल की खोज शुरू हुई। मंगला और ऐश्वर्या फील्ड में तेल दोहन के लिए कूप लगे, लेकिन उत्पादन का काम पांच साल बाद 2008 में ही शुरू हो पाया। केयर्न और ओएनजीसी के बाद वेदान्ता समूह ने इस क्षेत्र में तेजी से काम आरंभ किया। तत्कालीन गहलोत सरकार ने तेल दोहन के साथ प्रदेश में रिफाइनरी लगाने का दावा और मांग की। परन्तु केन्द्र की एनडीए सरकार ने पंजाब के बठिंडा में रिफाइनरी को मंजूरी दे दी। जहां न तो एक बूंद तेल निकलता और न एक ग्राम गैस पैदा होती। गहलोत सरकार के प्रयासों से 2013 में बाडमेर जिले को यूपीए सरकार से रिफाइनरी की सौगात मिली, जिसका शिलान्यास भी करवा लिया गया। लेकिन अक्सर देखा गया है कि श्रेय लेने और विकास को राजनीति बनाने की परम्परा थमने का नाम नहीं लेती। गहलोत सरकार के विदा होते ही भाजपा सरकार ने चार साल तक इसे चुनावी मुद्दा बनाने के लिए काम को अटकाया, अन्यथा रिफाइनरी इस दौरान पूरी हो जाती।

जब जागे तभी सवेरा

पचपदरा में 4813 एकड़ में बनने वाली रिफाइनरी सह पेट्रो केमिकल कॉम्पलेक्स अपने आप में अजूबा होगा। तेल की खोज और दोहन करने वाली कंपनी केयर्न को प्रदेश में तेल निकालने की इजाजत 2020 तक थी, लेकिन इसकी अवधि 10 साल बढ़ाई गई है, ताकि इस कार्य को समन्वित ढंग से आगे बढ़ाया जा सके। केयर्न के कामकाज को वेदान्ता कंपनी ने अधिग्रहित कर लिया है। यह कम्पनी अगले 4 साल में 27000 करोड़ का निवेश करेगी। अभी राज्य सरकार को 14200 करोड़ की सालाना रॉयल्टी व कर मिल रहा है। रिफाइनरी का काम पूरा होने एवं प्रचालन पर राज्य सरकार का खजाना मालामाल हो जाएगा। निश्चय ही राजस्थान की मरुधरा के शुष्क रेतीले धोरे सुनहली आभा से चमक उठेंगे और प्रदेश के निवासियों के जीवन स्तर में खुशनुमा मोड़ आएगा।

अब न हो सियासत का खेल

प्रदेश की जनता को सियासत के सरमाएदारों के बयानों से कोई सरोकार नहीं है। वह तो चाहती है कि प्रदेश रुग्णावस्था को छोड़ कर तंदुरुस्ती और खुशहाली की राह पर चले। राजनीतिक दलों को घाटे-मुनाफे को लेकर आरोप-प्रत्यारोपों की राजनीति से उठ कर रिफाइनरी स्थापना में सहयोग देना चाहिए। सरकार का बड़ा दायित्व यह है कि निर्धारित समय में काम पूरा करवाएं, क्योंकि केन्द्र और राज्य में एक ही दल से संबंधित सरकारें हैं। वैसे भी काफी विलम्ब हो चुका है अब रिफाइनरी पर कोई सियासत प्रदेश की जनता बर्दाश्त नहीं करेगी।

रेतीले धोरों पर बरसेगी खुशहाली

राजस्थान के आधे से ज्यादा भू-भाग में शुष्क रेगिस्तान पसरा है। आजादी के बाद कई दशकों तक उपेक्षा झेलते आए इस प्रदेश में इक्कीसवीं सदी के आरंभ में प्राकृतिक संसाधनों की खोज आगे बढ़ी और 2004 में पहला तेल कुआं मंगला मिला। 2005 में भाग्यम और ऐश्वर्या मिला, आज क्षेत्र में 250 से अधिक तेल कुएं हैं। बात चाहे सरकारी स्तर पर लापरवाही की हो या सियासत के दांव-पेच की, धरती में छिपी संपदा को निकालने की कोशिशें कभी सियासत में उलझती रही तो कभी धराशायी होती नजर आई। रिफाइनरी का सपना भी कई बार धूमिल होता दिखलाई पड़ा। आखिर नए साल के आरंभ में यह सपना साकार होता दिखाई दिया और रिफाइनरी का शुभारम्भ हुआ। रिफाइनरी के शुभारम्भ समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्वास जताया कि अब मरुभूमि में विकास की तस्वीर बदल कर रहेगी। रिफाइनरी अपने तय समय 2022 तक बन जाएगी। हालांकि प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम में कांग्रेस को कोसने, भाजपा को सराहने और सब्जबाग दिखाने की कोई कसर नहीं छोड़ी। केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने बाडमेर में एनर्जी स्किल युनिवर्सिटी सहित कई घोषणाएं की। मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने केन्द्र सरकार से मिले भरपूर सहयोग और रिफाइनरी लगाने के लिए प्रधानमंत्री का आभार जताया। उन्होंने कहा कि 2022 में हम फिर नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में आमंत्रित कर इस रिफाइनरी का उद्घाटन भी करवाएंगे। समारोह में भारी भीड़ उमड़ी। इससे प्रतीत होता है कि मरुवासियों के दिल में भारी हर्षोल्लास है। निश्चय ही एनर्जी स्किल युनिवर्सिटी, ऑयल, गैस, लिग्नाइट, विंड पॉवर, सोलर प्लांट से मरु प्रदेश शक्तिपीठ बनने वाला है। पानी की व्यवस्था इंदिरा गांधी कैनाल और नर्मदा नहर से होगी। वहीं लुप्त सरस्वती नदी की खोज, खारे पानी को खेती व पशुपालन के लिए उपलब्ध करवाने की भी योजना है। सपना जगा है कि बाडमेर अब 'दुबई' जैसा खुशहाल व सरसब्ज बनेगा। अगर जैसलमेर-बाडमेर क्षेत्र रेललाइन के माध्यम से मूंदड़ा पोर्ट तक जुड़ जाए तो इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कुलांचे भरती नजर आएगी। इस अवसर पर केन्द्रीय राज्यमंत्री अर्जुनराम मेघवाल, गजेन्द्र सिंह शेखावत, पीपी चौधरी सहित राज्य मंत्रिमंडल के सदस्य व जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा
AADHAR PRODUCTS
डिसाइड
वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट टिकिया एवं बर्तन बार
वाशिंग पाउडर
एडवाइज़
बर्तन बार
Decide
Mfd. & Mktd. by : AADHAR PRODUCTS PVT. LTD., UDAIPUR
Trade Enquiry 7727864004 | visit us at : www.aadharproducts.in

MIRAJ GROUP
तन भी शुद्ध, मन भी शुद्ध... तो वस्त्र क्यों रहे अशुद्ध !
मिराज शुद्ध
ऑयल सोप
100% पशु चर्बी रहित
MIRAJ
Family Pack
MIRAJ TRADECOM PVT. LTD.
Miraj Campus, Nathdwara - 313 301 (Raj.) India / Email : fmcg@mirajgroup.in / Web: www.mirajgroup.in
Contact us at : 88759 92317, 88759 33370

निराकार से 'साकार' रूप में अवतरण की रात ही महाशिवरात्रि

फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि। शिवलिंगतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभ।।

यानी फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी की रात्रि में आदिदेव भगवान शिव करोड़ों सूर्यों के समान प्रभाव वाले लिंग रूप में अवतरित हुए। इस विशेष तिथि को चंद्रमा सूर्य के समीप होता है और इसी समय जीवन रूपी चंद्रमा का शिवरूपी सूर्य से अद्भुत मिलन होता है। इसी रात्रि को महाशिवरात्रि कहा गया है। महाशिवरात्रि का पर्व परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का मंगल सूचक पर्व है। महाशिवरात्रि निराकार शिव के साकार रूप में अवतरण की रात है। इस दिन की पूजा का विशेष महत्व है।

– उमेश शर्मा

यानी फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी की रात्रि में आदिदेव भगवान शिव करोड़ों सूर्यों के समान प्रभाव वाले लिंग रूप में अवतरित हुए। इस विशेष तिथि को चंद्रमा सूर्य के समीप होता है और इसी समय जीवन रूपी चंद्रमा का शिवरूपी सूर्य से अद्भुत मिलन होता है। इसी रात्रि को महाशिवरात्रि कहा गया है। महाशिवरात्रि का पर्व परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का मंगल सूचक पर्व है। महाशिवरात्रि निराकार शिव के साकार रूप में अवतरण की रात है। इस दिन की पूजा का विशेष महत्व है। महादेव हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर आदि विकारों से मुक्त करके परम सुख, शांति और ऐश्वर्य प्रदान करते है। शिव को प्रसन्न करने का 5 अक्षर का मंत्र शिवाय: नम: है। जिसका मतलब है शिव को नमस्कार। अगर उसके पहले ओम् का उच्चारण किया जाता है तो यह छह अक्षरों का मंत्र बन जाता है। पांच अक्षरों का यह मंत्र पांच तत्वों का प्रतीक है। न अक्षर शिव की छुपी हुई अनुकम्पा का प्रतीक है, म अक्षर संसार का, शि अक्षर का अर्थ है शिव, वा अक्षर अनुकंपा प्रकट करता है और अन्त में य अक्षर आत्मा का। आदि शंकराचार्य ने कहा है कि शिव का अर्थ है–जो उनके नाम का जाप करता है वे उसको शुद्ध करते हैं। एक बार की बात है–रामकृष्ण परमहंस जब बनारस गए थे तो उन्हें शिव के दर्शन हुए। जब बनारस के पंडितों ने उनसे पूछा कि क्या शिव सचमुच उस पवित्र शहर में रहते हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि–मैंने श्मशान घाट में एक श्वेत, लंबे भूरी जटाओं वाले व्यक्ति को हर चिता की ओर गंभीर कदमों से जाते हुए देखा था, जो ध्यानपूर्वक प्रत्येक जीव को उठाकर उसके कान में परम ब्रह्म का मंत्र फूंक रहा था। चिता की दूसरी ओर परमशक्ति रूपा महाकाली जीव के स्थूल और सूक्ष्म बंधनों की गांठों को खोल रही थीं, जो अतीत के संस्कारों से उपजे थे। माता काली स्वयं अपने हाथों से मुक्ति का द्वार खोलकर उसे अद्वैत के क्षेत्र मे भेज रही थीं। यानी शिव विनाश के प्रतीक हैं। वह आशुतोष भी हैं – वे जो सरलता से प्रसन्न हो जाते हैं। शिव परम यथार्थ हैं जो हमारी अंतरात्मा हैं। शिव शाश्वत चैतन्य का नाम है जो सब में विराजित हैं।

शिव की भक्ति में है यम को बदलने की ताकत

पुराण कहते हैं कि एक बार मुनि दुर्वासा आकाश में भ्रमण करते हुए सर्वात्मा शिवशंकर, श्रीमाता भुवनेश्वरी का जाप कर रहे थे। इस दौरान वे मृत्यु के देवता यम के सामने रुके। उन्होंने धर्मपुरी का एक चक्कर लगाया, जहां प्रत्येक जीव को धरती पर किए अपने कर्मों के प्रतिफल मिलते हैं। विद्वान मुनि को रोने बिलखने की आवाजें सुनाई दीं। उन्होंने इसका कारण पूछा तो यम ने कहा कि मेरे लिए ऐसी घटना सामान्य है। क्योंकि मैं 14 स्वर्गों और 28नरकों की देखरेख करता हूं। ये चीत्कार एक नरक से आ रही है जिसका नाम 'कुंभीपाक' है। जिन लोगों ने अपने पूर्वजों को पिंडदान न देने का पाप किया था उनके कारण उनके पूर्वज इस नरक में गिर गए हैं। ये पूर्वज रो और बिलख रहे हैं। जिज्ञासावश मुनि ने उस नरक को देखने इच्छा व्यक्त की। लेकिन जब वे वहां पहुंचे तो दृश्य बिल्कुल भिन्न था। वहां कोई रोती हुई आत्माएं नहीं थीं। इसके विपरित सब शांत और संतुष्ट प्रतीत हो रहे थे। मुनि और यम के दूत चकित हुए। यम को बदले हुए दृश्य की सूचना से सनसनी फैल गई। उन्होंने इंद्र को नरक के अचानक स्वर्ग बन जाने की सूचना दी। इंद्र भी चकित हुए और भागकर सृष्टा भगवान ब्रह्मा के पास गए। वे भी चकित हुए। इसके बाद वे संरक्षण के देवता विष्णु के पास गए तो वे भी अवाक रह गए। अंत में वे संहार के देवता शिव के पास गए और उन्होंने बताया कि इस तथ्य का कारण मुनि स्वयं थे। शिव ने कहा कि दुर्वासा मेरे परम भक्त है। वे प्रतिदिन अपने मस्तक और ऊर्ध्वांग पर स्नान के बाद शिव की पवित्र विभूति का लेप करते हैं। दुर्वासा ने जब रोने बिलखने की आवाजें सुनी तो उन्हें इतना बड़ा धक्का लगा कि उनके शरीर से पवित्र विभूति के कण छूटकर कुंभीपाक नामक नरक पर गिर गए। शिव ने कहा कि ये विभूति हमें याद दिलाती है कि अंत में हम सब राख हो जाते है। इससे भक्तजन को निर्विकार होने में सहायता मिलती है।

हरि कथा ही कथा, बाकी सब व्यथा : लोकेशानंद महाराज

उदयपुर। हरि कथा ही कथा है बाकी सब व्यथा है। प्रतिपल मृत्यु की तरफ बढ़ते जीवन को सफलता की ओर अग्रसर करना है तो हरि ध्यान ही एक मात्र रास्ता हैं। यह बात नारायण भक्ति पंथ के प्रवर्तक इंदौर के संत लोकेशानंद महाराज ने श्री नारायण भक्ति पंथ मेवाड़ा की ओर से भुवाणा स्थित आईजीटी गार्डन में आयोजित विष्णु पुराण कथा का महात्म्य बताते हुए नारायण भक्तों को कही। कथा आयोजक लोकेश कुमावत ने बताया कि लोकेशानंद महाराज ने पहले दिन पाराशर ऋषि द्वारा मैत्रेयी मुनि को विष्णु पुराण कथा सुनाने के वर्णन के दौरान माता लक्ष्मी के प्राकट्य की कथा, मां लक्ष्मी माता की ख्याती, मां लक्ष्मी के चारों पुत्रों का वर्णन और पतिव्रत धर्म के वर्णन के साथ ही विश्वासमित्र की तपस्या, विश्वामित्र की हजारों वर्षों की तपस्या के सामने वशिष्ठ के सत्संग की एक घड़ी के भारी होने की कथा सुनाई। कथा के बीच भगवान नारायण के भजनों पर श्रद्धालु भाव-विभोर हो गए।

शोभायात्रा में नारायणमय हुआ शहर

कथा आयोजन के जितेश कुमावत ने बताया कि कथा प्रारंभ से पूर्व पुला स्थित चारभुजा मंदिर से गाजे-बाजे के साथ भक्तिमय माहौल में भगवान श्रीहरि विष्णु की शोभायात्रा निकाली गई। सबसे आगे गजराज की सवारी, उसके पीछे अश्वारूढ़ भक्त नारायण पताका लिए थे। शोभायात्रा में 5 ऊंट गाड़ियों में बच्चे भगवान विष्णु के 23 अवतारों के रूप में नजर आए। इस दौरान महिलाएं लाल चूंदड़ और पुरुष श्वेत वस्त्र पहनकर सिर पर केसरिया साफा बांधे भजनों पर थिरकते हुए चल रहे थे। विशेष रथ पर शेषनाग की शय्या पर सो रहे भगवान विष्णु की प्रतिमा के साथ संत लोकेशानंद महाराज विष्णु पुराण ग्रंथ बिराजे थे। शोभायात्रा के कथा स्थल पहुंचने पर विधि-विधान व मंत्रोच्चार के साथ भगवान की प्रतिमा मंच पर बिराजित की गई। इसके बाद कथा की शुरुआत हुई। आयोजक योगेश कुमावत ने बताया कि इस धार्मिक आयोजन का सौभाग्य उनकी माता व मुख्य आयोजक गीता देवी क प्रयासों से प्राप्त हुआ। स्वर्गीय पिताश्री भंवरलाल जी कुमावत ने जी जीते जी कथा आयोजन का सपना संजोया था। प्रथम दिन हुई कथा के मुख्य अतिथि नगर निगम महापौर चंद्रसिंह कोठारी, पंथ के मेवाड़ अध्यक्ष बीएस कानावत, पूर्व आरपीएसई चेयरमैन गोविंद टांक, डॉ. प्रदीप कुमावत, पूर्व सभापति युधिष्ठर कुमावत आदि थे।

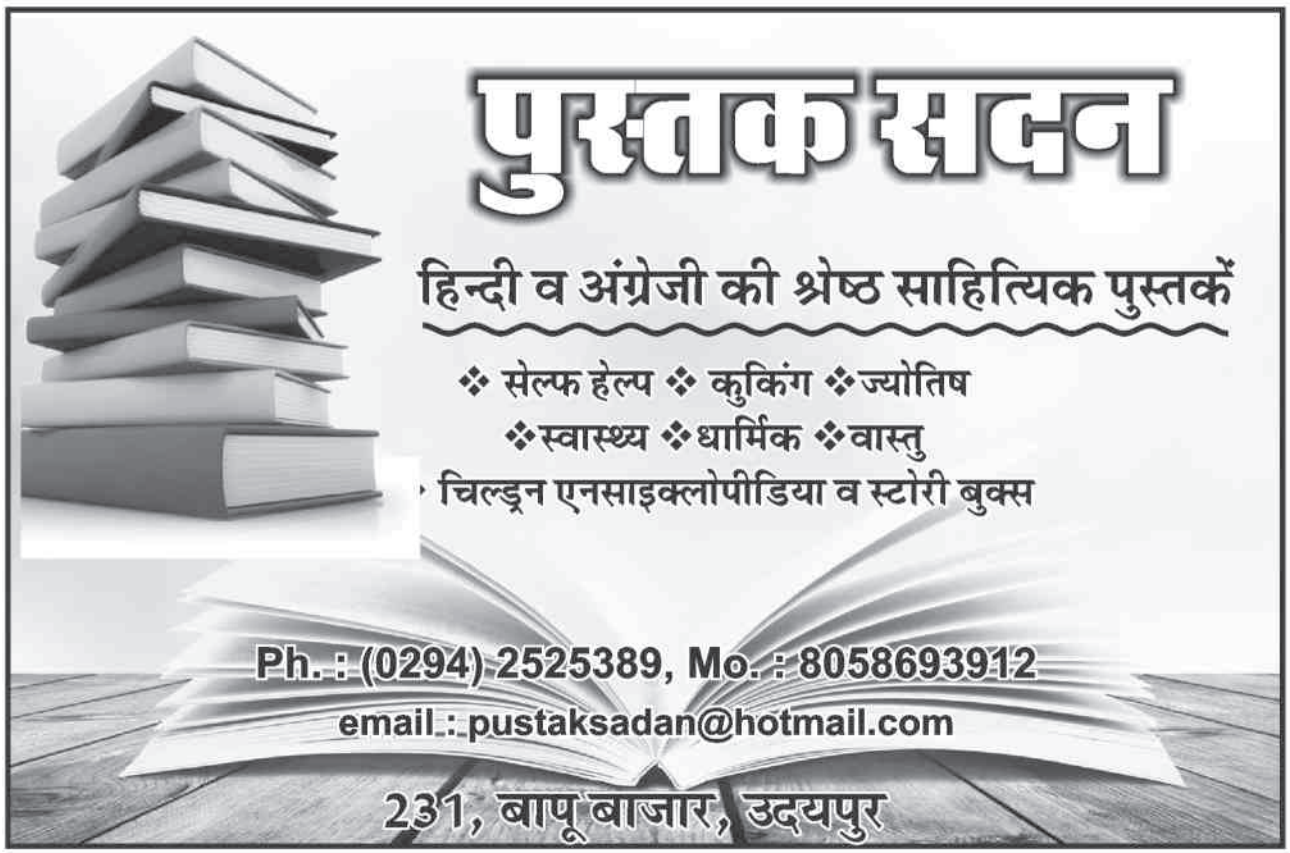

Jain Farms

Lake Side Venue for All Your Celebrations

Rani Road, Fateh Sagar Lake, Udaipur (Raj.)
Contact : 9414151777

नाथद्वारा के कानन वन में आनंद और मुक्ति की केसर क्यारियां

जहां सदानीरा बन बहती है भक्ति और समर्पण की पुण्यसलिला

– सुनील पंडित

मेवाड़ की धरा अलग-अलग संस्कृतियों को सहेजने वाली वसुंधरा हैं। इसी धरा की एक स्थली है नाथद्वारा। पुष्टिमार्गीय संप्रदाय की प्रधान पीठ है। यहां बिराजे श्रीनाथजी के मनोहारी दर्शन के लिए देश-विदेश से इके-दुक्के लोग नहीं पूरा कारवां आता हैं। यहां की कला, संस्कृति, आध्यात्म और समर्पण की चौखट देखकर लगता है जैसे सतयुग से लेकर कलयुग की अनंत यात्रा पर निकले मझधार में फंसे केवट को किनारा मिला है। आनंद और मस्ती का मदमस्त कपाट खोलने के लिए यहां बहती भक्ति और समर्पण की पुण्यसलिला की केवल एक बूंद ही काफी है। यहां की गलियां भले ही तंग हो लेकिन ये मथुरा, वृंदावन और गोकुल की कुंज गलियों का वास्तविक आभास कराती हैं। कुंभलगढ़ के वेरों का मठ से निकलने वाली यमुना स्वरूपा बनास (वन की आशा) जब कलकल करती हुई श्रीनाथजी के समीपवर्तीय क्षेत्र से होकर गुजरती है तो यूं लगता है मानो बनास प्रभु के दर्शन को छटपटा रही है। दूसरी ओर दूर-दूर तक फैली हरियाली से आच्छादित अरावली पर्वत श्रृंखला प्रभु श्रीजी की कनिष्का अंगुली पर साक्षात गोवर्धन पर्वत का अहसास कराती है। शहर के बीच अलग-अलग हिस्सों में बनी गोशालाएं और गोधुलिक वेला में उठने वाली मिट्टी और गोबर की गंध जैसे ही नथुनों के रास्ते हृदय में उतरती है यूं लगता है जैसे हम उन पलों के साक्षी बन रहे है जो द्वापरयुग का पूरा एक ग्रंथ है। देश के कई अग्रणी महापुरुषों व लेखकों ने भी इस स्थान की यात्रा की और यहां की महत्ता को अपने-अपने शब्दों में व्यक्त किया। गर्गाचार्य के अनुसार-

जगन्नाथो रंगनाथो द्वारकानाथ एवच, बद्रीनाथ श्चतुष्कोणे भारतस्यापि वर्तते।
चतुणार्ं भुविनाथानां कृत्वा यात्रां नरः सुधी, न पश्येद्देवदमनं न स यात्रा फलं लभत्।।

अर्थात् जो व्यक्ति भारत के चारों कोनों पर स्थित रंगनाथ, द्वारिकानाथ तथा बद्रीनाथ की यात्रा करके भी यदि श्रीनाथद्वारा की यात्रा नहीं करता उसे यात्रा का फल नहीं प्राप्त होता है। कहते है यहां बिराजमान श्रीनाथजी के चरणों में आशाहीन, त्यक्त, निर्धन सभी को आश्रय मिलता है। लोगों का ऐसा विश्वास है कि घोर पापी भी यहां आकर शरण पाता है तथा पवित्र हो जाता है। राजपूतों में ऐसा विश्वास था कि घोर अपराधी भी यहां आ जाए तो राजा द्वारा उसे दंड नहीं दिया जा सकता। पूर्व की तरु से पर्वतों की दीवार तथा उत्तर-पश्चिम की प्रवाहित बनास नदी के बीच स्थित छोटा सा स्थान वैष्णवों के महत्वपूर्ण तीर्थों में से एक है। नंदराजकुमार श्रीनाथजी के पदार्पण होने के बाद इस धाम का नाम नाथद्वारा हो गया। यह स्थान मनोरम, शांतिमय तथा समतामय है। कहते है श्रीनाथजी को अंततः नाथद्वारा में प्रतिस्थापित कर देने से बादशाह औरंगजेब महाराणा राजसिंह से काफी नाराज हुए। उसकी सेना ने मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया। लेकिन यहां के राजपूतों ने मुगलों की सेना का मुंहतोड़ जवाब दिया।

इतिहास : श्रीनाथजी का नाथद्वारा स्थापन

देश में कई मत, मतांतर, पंथ, संप्रदाय आज भी अनवरत रूप से प्रचलित है। लेकिन पुष्टिमार्गीय संप्रदाय की यात्रा अपने आप में अनूठी है। भारत के मुगलकालीन शासक बाबर से लेकर औरंगजेब तक का इतिहास पुष्टि संप्रदाय के इतिहास के समानांतर यात्रा करता रहा है। अकबर ने पुष्टि संप्रदाय की भावनाओं को स्वीकार किया था। गुसाईं श्री विट्ठलनाथजी के समय उनकी बेगम बीबी ताज श्रीनाथजी की परम भक्त थी। इसके अलावा तानसेन, बीरबल, टोडरमल तक पुष्टि भक्ति मार्ग के उपासक रहे थे। इसी काल में रसखान, मीर अहमद आदि ब्रज साहित्य और श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त के रूप में गहरी छाप छोड़कर गए। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने कहा है- 'इन मुसलमान कवियन पर 'कोटिक हिन्दु वारिये' लेकिन मुगल शासन के पतनोन्मुखी शासकों में औरंगजेब अत्यन्त क्रूर एवं असहिष्णु शासक माना जाता है। धर्म के नाम पर जजिया कर, मृत्युदंड का सिद्धान्त, धर्म परिवर्तन और हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों को तोड़ना उसके लिए खेल बन गया। वो अपनी सेना को मूर्तियां तोड़ने का कठोर आदेश आए दिन दिया करता था। उसकी आज्ञा से

हिन्दुओं के सेव्य विग्रहों को खण्डित किया जाने लगा। मूर्ति पूजा के विरोध में इस दुष्ट शासक की गिद्ध दृष्टि ब्रज में विराजमान श्रीगोवर्धनगिरि पर स्थित श्रीनाथजी पर भी पड़ी। महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य के परम आराध्य ब्रजजनों के प्रिय श्रीनाथजी के विग्रह की सुरक्षा करना उनके वंशज गोस्वामी बालकों का प्रथम कर्तव्य था। इस कारण से श्री विट्ठलनाथजी के पौत्र श्री दामोदर जी एवं उनके काका श्री गोविंद जी, श्री बालकृष्ण जी एवं श्री वल्लभजी ने श्रीनाथजी के विग्रह को लेकर प्रभु आज्ञा से ब्रज छोड़ना ही उचित समझा। सब कुछ वहीं छोड़ कर एक मात्र श्रीनाथजी को लेकर वि.स. 1726आश्विन शुक्ल 15 शुक्रवार की रात्रि के पिछले पहर में रथ में पधराकर ब्रज से प्रस्थान किया। यह तिथि ज्योतिष गणना से ठीक सिद्ध हुई। 'श्रीनाथजी' का स्वरूप ब्रज में 177 वर्ष तक रहा था। श्रीनाथजी अपने प्राकट्य संवत 1549 से लेकर सं. 1726 तक ब्रज में सेवा स्वीकारते रहे। 'वार्ता' साहित्य में लिखा है श्रीनाथजी जाने के बाद औरंगजेब की सेना मंदिर को नष्ट करने के लिए गिरिराज पर्वत पर चढ़ रही थी। उस समय मंदिर की रक्षा के लिए कुछ ब्रजवासी सेवक तैनात थे। उन्होंने वीरता पूर्वक आक्रमणकारियों का सामना किया, किन्तु वे सब मारे गए। मन्दिर के दो जलघरियों ने जिस वीरता का परिचय दिया था उसका सांप्रदायिक ढंग से वर्णन 'वार्ता' में हुआ है। कहते है आक्रमणकारियों ने मंदिर को नष्ट कर वहां एक मस्जिद बनवा दी। 'म्ले%छों के विषय व्यवहारों व अत्याचारों के कारण श्रीनाथजी को लेकर मेवाड़ की ओर प्रस्थान करना पड़ा। गोवर्धन से श्रीनाथजी के विग्रह को लेकर रथ के साथ सभी आगरे की ओर चल पड़े। बूढ़े बाबा महादेव आगे प्रकाश करते हुए चल रहे थे। आगरा हवेली में अज्ञात रूप से पहुंचे, यहां से कार्तिक शुक्ला 2 को पुन: लक्ष्य विहीन यात्रा पर निकल पड़े। श्रीनाथजी के साथ-साथ रथ में परम भक्त गंगाबाई रहती थीं। तीनों भाइयों में एक श्री वल्लभजी डेरा (तंबू) लेकर आगामी निवास की व्यवस्था के लिए चलते। साथ में रसोइयां, बाल भोगियां, जलधरियां आदि रहते थे। श्री गोविंद जी, श्रीनाथजी के साथ रथ के आगे घोड़े पर चलते और श्रीबालकृष्णजी रथ के पीछे जबकि बहू-बेटी परिवार दूसरे रथ में पीछे चलते थे। सभी परिवार मिलकर श्रीनाथजी के लिए सामग्री बनाते व भोग धराते। रास्ते में संक्षिप्त रूप से अष्ट प्रहर की सेवा चलती थी।

यहां-यहां से चलकर आया श्रीरथ

आगरा से निकलकर श्रीरथ ने ग्वालियर में चंबल नदी के तटवर्तीय दंडोतीधार नामक स्थान पर मुकाम किया। कृष्णपुरी में श्रीनाथजी बिराजे। यहां से चलकर कोटा कृष्णविलास की पद्मशीला पर श्रीनाथजी पूरे 4 महीने तक विराजमान रहे। कोटा से चलकर पुष्कर होते हुए कृष्णगढ़ पधराए गए। वहां नगर से 2 मील दूर पहाड़ी पर पीतांबर बरजी की गाल में बिराजे। कृष्णगढ़ से चलकर जोधपुर राज्य में बंबाल और बीसलपुर स्थानों से होते हुए चांपासनी पहुंचे। जहां श्रीनाथजी चार-पांच माह तक बिराजे तथा संवत 1727 के कार्तिक माह में अन्नकूट उत्सव आयोजित हुआ। अंत में मेवाड़ राज्य के सिहाड़ नामक स्थान में पहुंचकर स्थायी रूप से बिराजमान हुए। उस काल में मेवाड़ के राणा श्रीराजसिंह सर्व शक्तिशाली हिन्दू नरेश थे। उन्होंने औरंगजेब की उपेक्षा कर पुष्टिमार्गीय संप्रदाय के गोस्वामियों को आश्रय और संरक्षण प्रदान किया। संवत 1728कार्तिक माह में श्रीनाथजी सिहाड़ पहुंचे, वहां मंदिर बन जाने पर फाल्गुन कृष्ण सप्तमी शनिवार को उनका पाटोत्सव मनाया गया। इस प्रकार श्रीनाथजी को गिरिराज के मंदिर से पधराकर सिहाड़ के मंदिर में बिराजमान करने तक 2 वर्ष 4 माह 7 दिन का समय लगा। श्रीनाथजी के नाम के कारण ही मेवाड़ का वह अप्रसिद्ध सिहाड़ ग्राम अब नाथद्वारा के नाम से भारत में जगत विख्यात है।

पहले ही हो गई थी मेवाड़ पधारने की भविष्यवाणी

श्रीजी मेवाड़ पधारेंगे की भविष्यवाणी श्री गुसांई विट्ठलनाथजी ने पहले ही कर दी थी। यह बात तब की है जब श्री गुसांई विट्ठलनाथजी द्वारिका यात्रा जा रहे थे। वीरभूमि मेवाड़ के सिहाड़ नामक स्थान को देखकर उन्होंने अपने शिष्य बाबा हरिवंश के सामने कहा कि इस स्थल पर विशेष कोई एक काल पीछे श्रीनाथजी बिराजेंगे। नाथद्वारा को मेवाड़ के कई महाराणाओं की ओर से समय-समय पर विशेष राजाश्रय मिलता रहा। उनके अगाध विश्वास ने इस नगर के विकास में अतुल्यनीय योगदान दिया। राजसिंह के पुत्र जयसिंह नाथद्वारा को कामलिभावास नामक गांव भेंट किया। वहीं उनके पुत्र महाराणा अमरसिंह ने उपली ओड़न व बागोल गांव भेंट किया। इसके बाद संग्रामसिंह, प्रतापसिंह, राजसिंह (द्वितीय), अरिसिंह तथा हमीरसिंह आदि महाराणा ने श्रीनाथजी को समय-समय पर प्रभूत सेवाएं अर्पित की।

भागवत कथा सुनने उमड़े श्रद्धालु

उदयपुर। उदयपुर जिला वैश्य महासम्मेलन की ओर से आरएमवी ग्राउंड में बनाए श्रीमयी कृष्णधाम में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में अंतिम दिन जनसैलाब उमड़ा। सात दिवसीय महोत्सव के समापन पर सहयोगियों का सम्मान किया गया। इस दौरान कथावाचक घनश्याम शास्त्री ने कथा का माहात्म्य सुनाया। उन्होंने कृष्ण की ओर से सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध, गुरु भक्त सुदामा और कृष्ण का द्वारिका में स्नेही मिलन, कृष्ण का स्वधाम गमन और अंत में ऋषि के श्राप से तक्षक नाग का राजा परिक्षित को डसने एवं श्रीमद् भागवत के प्रभाव से राजा को मोक्ष प्राप्त होने के प्रसंग सुनाए। पांडाल में भजनों की मोहक तान पर श्रद्धालु झूम उठे। महासम्मेलन के अध्यक्ष अनिल नाहर ने बताया कि कथा महोत्सव के दौरान सहयोग करने वालों को सम्मानित किया गया। सम्मान ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, उपमहापौर लोकेश द्विवेदी, किरणमल सावनसुखा ने किया। इस दौरान आरपी मेहता, धीरेंद्र सिंह सचान, बाबूलाल सुहालका, जयंतीलाल पारख आदि मौजूद थे।

भागवत कथा के समापन पर सहयोगकर्ताओं को सम्मानित करते विधायक फूलसिंह मीणा, महासम्मेलन अध्यक्ष अनिल नाहर एवं अन्य।

नहीं रहे गीता का उर्दू में तर्जुमा करने वाले शायर जलालपुरी

जलालपुरी को उर्दू शायरी में गीतांजलि व भगवदगीता के उर्दू संस्करण उर्दू शायरी में गीता के अलावा राहरौ से रहनुमा तक पुस्तकों के लिए जाना और सराहा जाता है

कोई पूछेगा जिस दिन वाकई ये जिंदगी क्या है
जमीं से एक मुट्ठी खाक ले कर हम उड़ा देंगे...
तुम अपने सामने की भीड़ से हो कर गुजर जाओ कि
आगे वाले तो हरगिज न तुम को रास्ता देंगे...

ये चंद शब्द कहने वाले मशहूर शायर अनवर जलालपुरी का 70 साल की उम्र में 2 जनवरी को लखनऊ में इंतकाल हो गया। जलालपुरी ने हिंदू धर्मग्रंथ श्रीमद्भगवद गीता और उर्दू भाषा के मेल का ऐसा अनोखा कारनामा कर दिखाया, जिसे दुनिया टकटकी लगाए देखती रह गई। उनके परिवार में पत्नी और तीन बेटे हैं। जलालपुरी को बीते 28दिसंबर को ब्रेन स्ट्रोक के बाद किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया था। उन्हें 3 जनवरी को बाद नमाज जोहर अंबेडकर नगर स्थित उनके पैतृक स्थान जलालपुर में सुपुर्द-ए-खाक किया गया।

जलालपुरी को उर्दू शायरी में गीतांजलि व भगवदगीता के उर्दू संस्करण उर्दू शायरी में गीता के अलावा राहरौ से रहनुमा तक पुस्तकों के लिए खूब प्रसिद्धि मिली। उत्तर प्रदेश के सर्वोच्च सम्मान-यश भारती से नवाजे जा चुके जलालपुरी ने 'अकबर द ग्रेट' धारावाहिक के डायलॉग भी लिखे थे। उनकी एक किताब उर्दू शायरी में गीता का 2014 में लोकार्पण मुरारी बापू और यूपी के तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने किया था। उनके द्वारा किया गया श्रीमद्भागवत गीता का उर्दू तर्जुमा (अनुवाद) काफी चर्चित रहा है। खास बात यह है कि ये संस्कृत-टू-उर्दू में किया गया अनुवाद ही नहीं बल्कि मुकम्मिल शेरो की शक्ल में किया गया अद्भुत प्रयोग है। गीता को उर्दू शायरी की शक्ल देने के लिए उन्हें कई कठिनाइयों से होकर गुजरना पड़ा। उनके दिमाग में 1983 के आसपास ये बात आई कि वे गीता पर रिसर्च करे लेकिन जब उन्होंने काम शुरू किया तो यह इतना विस्तृत विषय हो गया कि उन्हें लगा कि वे इस काम को नहीं कर पाएंगे।

फिर बदला रुख

इसके बाद अनवर ने इसका रुख बदल दिया। चूंकि वे शायर थे इसलिए उन्होंने सोचा कि अगर मैं पूरी गीता को शायरी बना दूंगा, तो यह ज़्यादा अहम काम होगा। अनवर की शायरी उनकी अपनी भाषा उर्दू में है लेकिन ये किताब उन्होंने अरबी-फारसी लिपि के साथ ही देवनागरी लिपि में भी छपवाई है। उन्होंने जिन लोगों की टीका पढ़ी उनमें ओशो रजनीश, महात्मा गांधी, विनोबा भावे और बाल गंगाधर तिलक शामिल हैं। गीता के कर्मयोग को

अदब के इस सितारे से रोशन होंगी कई कई सदियां

हम काशी काबा के राही, हम क्या जाने झगड़ा बाबा... अनवर जलालपुरी के इस शेर से उनके अंतर्मन में प्रज्ञवलित 'सांप्रदायिक सौहार्द की लौ' की अनुभूति की जा सकती है। अध्योध्या से महज 50 मील दूर जलालपुर के वाशिंदे अनवर जलालपुरी गीता की रूमानियत पर कुछ ऐसे रीझे कि उन्होंने जाते-जाते उसका तर्जुमा कर किताब की शक्ल में हमको तौहफे के रूप में दे गए। जलालपुर की माटी को गोविंद साहब और संत पल्टूदास को जन्म देने का गौरव हासिल है। गोविंद साहब को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास में कबीर की निर्गुण परंपरा का बड़ा संत बताया है। जबकि पल्टूदास के साहित्य पर आचार्य रजनीश 'ओशो' इस कदर फिदा हुए कि अमेरिका में उन्होंने पल्टूदास पर कई माह तक प्रवचन किया। जलालपुर कस्बे में हाफिज मोहम्मद हारुन के पुत्र के रूप में 6जुलाई 1947 को जन्मे अनवर जलालपुरी वास्तव में विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। प्राथमिक शिक्षा स्थानीय स्तर पर ग्रहण करने के बाद उन्होंने गोरखपुर विश्वविद्यालय से स्नातक और अलीगढ़ मुस्लिम विवि से अंग्रेजी साहित्य में एमए किया। आचार्य नरेंद्र देवे इंटर कॉलेज जलालपुर में अंग्रेजी प्रवक्ता नियुक्त हुए। वे अंग्रेजी, उर्दू और अरबी के ज्ञाता थे। यहीं से उनके अंदर पैदा हुए अदब के बिरवा ने विशाल वटवृक्ष का रूप ले लिया। उनके भीतर का साहित्य मेगा सीरियल 'अकबर द ग्रेट' में उभरकर सामने आया। उन्होंने इसके लिए गीत और संवाद लेखन का कार्य बखूबी किया। फिल्म डेढ़ इश्किया में नसीरुद्दीन शाह और माधुरी दीक्षित के साथ शायर और मंच संचालक की भूमिका निभाकर शोहरत बटोरी। 2 जनवरी की सुबह अदब के इस सितारे की रोशनी भले ही बुझ गई हो लेकिन उनके शब्द सदियों तक हमको रोशन करते रहेंगे।

अनवर ने अपनी शायरी में कुछ यूं पेश किया है-

नहीं तेरा जग में कोई कारोबार, अमल के ही ऊपर तेरा अख्तियार। अमल
जिसमें फल की भी ख्वाहिश न हो, अमल जिसकी कोई नुमाइश न हो।
अमल छोड़ देने की जिद भी न कर, तू इस रास्ते से कभी मत गुजर। धनंजय
तू रिश्तों से मुंह मोड़ ले, है जो भी ताल्लुक उसे तोड़ ले।
फ़रायज़ और आमाल में रब्त रख, सदा सब्र कर और सदा ज़ब्त रख।
तवाजुन का ही नाम तो योग है, यही तो खुद अपना भी सहयोग है।

- सुधीर जोशी

PACIFIC UNIVERSITY

20 Years of Excellence | **100** Acre Campus | **500** Faculty | **15,000** Students

Record Placements in 2016-17

Placements : 2460

No. Of Companies : 87

Highest Package 6.6 Lakh P.A.

amazon | MARCO POLO

oppo

3T

AVILLION | Atos | metacube

& Many More ...

Best Engineering Campus award - 2016 "Awarded by Edu Destination, New Delhi".

Times Education Achievers Award - 2016-17 (Dental, Commerce, Management, Pharmacy, Education)

Workshop on Remote Controlled Aircraft Modelling 2016-17

Consecutive Winner (6times) in Simulated Management Games Contest of AIMA, New Delhi held among top 270 Management Institute of the Country.

Pacificians at yet another milestone by achieving 1st Prize in Audacity - 2017 "Conducted by IIM, Udaipur".

4th place in west zone inter university Hockey Tournament 2013 - 14

ADMISSION OPEN 2017-18

ENGINEERING (AICTE Approved)
B.Tech. : Civil / Mechanical / Electrical / ECE / CSE / Mining
M.Tech.
Mob. : 766 501 7791

POLYTECHNIC DIPLOMA (AICTE Approved)
Diploma : Civil / Mechanical / Electrical / Mining / CSE
Mob.: 953 036 0191

HOTEL MANAGEMENT (AICTE Approved)
Trade Diploma in Hotel Management
Diploma: Diploma in Hotel Management
B.Sc. Hotel Management
Bachelor of Hotel Management & Catering Technology (BHMCT)
Master of Tourism and Hotel Management (MTHM)
Mob.: 967 297 8016

COMPUTER APPLICATION
BCA / BCA+MCA / PGDCA
MCA / M.Sc. IT / MCA in 2 Yrs. (Eligibility: BCA with Maths)
Mob.: 958 789 2884

AGRICULTURE
B.Sc. (Hons.) Agriculture
M.Sc. Agriculture
Mob.: 766 501 7854

EDUCATION & PHYSICAL EDUCATION
D.El.Ed., B.Ed.,
B.P.Ed., M.P.Ed.
Mob.: 967 297 8055

MANAGEMENT (AICTE Approved)
MBA (Dual Specialization) I **MBA** (Executive)
MBA : Hospital and Healthcare Management
MBA (International Business Management)
Mob.: 967 297 8034

DAIRY TECHNOLOGY & FOOD TECHNOLOGY
B.Tech. Dairy Technology
B.Tech. Food Technology
B.Sc. Nutrition & Dietetics
Diploma Clinical Nutrition & Dietetics
Certificate Nutrition & Fitness
Mob.: 967 291 7869

LAW (BCI Approved)
L.L.B.
B.A.+L.L.B.
B.Com.+L.L.B.
L.L.M. (1 Yr.)
L.L.M. (2 Yrs.)
Free R.J.S coaching & other tutorial classes
Mob.: 982 985 5566

YOGA
Certificate, Diploma, PG Diploma & M.Sc. in Yoga
Mob.: 766 501 7752

GYM TRAINING & MANAGEMENT
Certificate, Diploma, PG Diploma (Personal Trainer & Gym Management)
Mob.: 823 911 0077

DENTAL (DCI Approved)
B.D.S., M.D.S.
Mob.: 766 501 7760

SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES
B.A. / B.A. (Hons.)
(Free Coaching for Competitive Exams like IAS, RAS, RPSC, SSC, BANK, PO, CDS, PSI, CONSTABLE, PATWARI & CLERICAL EXAMS)
M.A. / M.S.W.
Mob.: 967 297 0962

COMMERCE
BBA: Global Business Management
(Free Educational foreign tour every year)
B.Com. (Synchronised with competitive exams)
BBA (Synchronised with competitive exams)
B.Com. (Hons.) (Synchronised with CA / CS)
M.Com.
Mob.: 988 726 2020

MASS COMMUNICATION
Diploma Journalism and Mass Communication (DJMC)
BA (Journalism and Mass Communication)
MA (Journalism and Mass Communication)
Mob.: 988 726 2020

BASIC SCIENCE
B.Sc. (Both Maths & Bio Group)
B.Sc. (Hons.) (Physics / Chemistry / Maths / Computer Science / Statistics / Botany / Zoology)
M.Sc. (Physics/Chemistry/Maths/Computer Science/Statistics)
Mob.: 766 501 7783

PHARMACY (PCI Approved)
B.Pharma
M.Pharma
Mob.: 766 501 7717

FIRE AND SAFETY MANAGEMENT
B.Sc.: Fire & Industrial Safety Management
Diploma: Fire & Safety Management / Industrial Safety & Disaster Mgmt. / Health Safety & Environment
PG Diploma: Industrial Safety Management / Fire & Safety Management / Health, Safety & Environment
Mob.: 967 297 0953

FASHION TECHNOLOGY
Diploma: Fashion Designing / Jewellery Designing / Textile Designing / Fine Arts & Graphics
Interior Designing
Drama / Acting / Graphic Web Designing / Modelling / Animation / Accessory Designing / Event Management / Architecture
B.Sc. & M.Sc. : Fashion Designing / Interior Designing / Jewellery Designing / Textile Designing / Fine Arts & Graphics
MBA : Design Management / Fashion Designing / Textile Designing
Mob.: 967 297 8017

RESEARCH AND DOCTORATE
M.Phil. & Ph.D. (In all the streams listed above)
Mob.: 967 297 8030

PACIFIC UNIVERSITY | Pacific Hills, Pratapnagar Extension, Airport Road, Debari, Udaipur - 313024 | Email : info@pacific-university.ac.in | Ph : 0294-3065000, 9672970940, 7665017787, 9672927863

www.pacific-university.ac.in

बर्फ का दुशाला ओढ़े खड़ी

शिवलिंग पीक

शिवलिंग शिखर उत्तराखण्ड में गढ़वाल की पश्चिमी पर्वत श्रेणियों में स्थित है। मनमोहक छवि वाली यह माउंटेन पीक गंगोत्री ग्लेशियर के समीप है। ग्लेशियर एक विशाल हिमनद तथा यह गंगा नदी का उद्गम भी है। गंगा नदी की प्रथम धारा भगीरथी नदी के रूप में इस ग्लेशियर के छोर स्थित गोमुख से ही निकलती है। जहां हर वर्ष हजारों सैलानी जाते हैं। उस मार्ग से शिवलिंग शिखर का मनमोहक व चित्ताकर्षक दृश्य देखने को मिलता है। इस शिखर के अभियान पर जाने वाले पर्वतारोही गोमुख से तपोवन एवं नन्दनवन जैसे प्राकृतिक नजारों से भरे-पूरे मनोरम स्थलों से होकर गुजरते हैं। समुद्र तल से 6543 मीटर ऊंची शिवलिंग पीक गंगोत्री शिखर समूह का हिस्सा है। यह शिखर पिरामिड के समान दिखाई पड़ता है। शिखर की चढ़ाई अत्यंत दुर्गम है। इसलिए 1974 तक इस शिखर पर कोई भी पर्वातारोही अभियान सफल नहीं हुआ। 1933 में गंगोत्री ग्लेशियर की खोज के बाद पर्वतारोहियों ने इस पर चढ़ने के प्रयास किये थे। 1938 में जर्मनी के एक पर्वतारोही दल ने इसे एक दुर्गम पीक बताया था।

इस शिखर का ऊपरी भाग हर और से खड़ी चट्टानों से घिरा है, जहां बर्फ भी नहीं ठहरती। केवल पश्चिमी ढलान पर कुछ भाग ऐसा है, जहां बर्फ नजर आती है। इसी दिशा से शिखर पर चढ़ना संभव हो सकता है। इसका पहला सफल अभियान जून 1974 में पश्चिमी रिजन से पूर्ण हुआ था।

टीम का नेतृत्व भारत तिब्बत सीमा पुलिस के हुकुम सिंह ने किया था। उसके बाद शिखर के लिए दस अलग अलग कठिन मार्गों से अभियान पूरे किये जा चुके हैं। इस शिखर के निकट भृगु पर्वत, सुमेरू पर्वत एवं अन्य कई खूबसूरत हिमशिखर हैं। इसके सामने भगीरथी समूह के तीन शिखर भी नजर आते हैं।

-रेणु शर्मा

गंगोत्री

गोमुख की यात्रा पर जाने वाले सैलानी शिवलिंग पीक को आसानी से देख सकते हैं। इसके लिए पहले ऋषिकेश से उत्तरकाशी होकर बस मार्ग द्वारा गंगोत्री पहुंचना होता है। गंगोत्री में प्रसिद्ध गंगा मन्दिर भी है। वहां से चीड़वासा और भोजवासा होकर पदयात्रा करते हुए गोमुख पहुंचना होता है। लगभग 18 किलोमीटर का यह मार्ग मनमोहक प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण है। ट्रैकिंग के शौकीन साहसी लोग गोमुख से तपोवन भी जाते हैं। वहां से यह पीक एकदम निकट दिखाई पड़ता है। इस सुंदर यात्रा पर जाकर बर्फ का दुशाला ओढ़े खड़ी शिवलिंग पीक को देख कर पर्यटक आश्चर्यचकित व भाव-विभोर हो जाते हैं।

Hotel Vijay Deep

Ph. 02951-250043
Mob. 94141-71643

Guest House
Air Conditined Restaurent and Bar

National Highway 8,
BHIM
Distt.- Rajsamand
(Raj.)

Bharat Petroleum

Tel. 02951-280333
Mob. 9950521507

M/s Ratan Trading Company

BHARAT PETROLIUM DEALER

N.H.8, Kundal Ki Guwar Bhim, Distt.-Rajsamand (Raj.)

समंदर जिसमें कोई डूबता नहीं!

दुनिया में एक से बढ़कर एक रहस्य, रोमांच और आश्चर्य चकित करने वाले स्थल हैं, जिनमें से एक है 'डैड सी' यानी 'मृत सागर'। यह एक विशाल झील है। कहा जाता है सैंकड़ों साल पहले इसे 'सी ऑफ साल्ट' (नमक का समुद्र) कहा जाता था।

दुनिया में एक से बढ़कर एक रहस्य, रोमांच और आश्चर्य चकित करने वाले स्थल हैं, जिनमें से एक है 'डैड सी' यानी 'मृत सागर'। यह एक विशाल झील है। कहा जाता है सैंकड़ों साल पहले इसे 'सी ऑफ साल्ट' (नमक का समुद्र) कहा जाता था। इस झील में हुए दुखद हादसे के बाद इसका नाम 'डैड सी' रख दिया गया। कई साल पहले इसाई तीर्थयात्रियों के एक जत्थे में से कुछ यात्रियों की नहाने के दौरान समुद्र का खारा पानी मुंह में जाने से मौत हो गई। इस पानी का उच्च घनत्व होने की वजह से ज्योंहि कोई व्यक्ति तैरने के लिए पानी में गोता लगाता है तो वह स्वत: ही पानी से ऊपर उछल पड़ता है। 'डैड सी' भूमध्यसागरी देश इजराइल और जॉर्डन के बीच है। भौगोलिक दृष्टि से तो 'डैड सी' समुद्र की सतह से लगभग आधा किलोमीटर नीचे है। इसके पानी में जीव-जंतु ही नहीं पौधों-वनस्पति का जीवन-चक्र भी बिल्कुल संभव नहीं है। पानी में मौजूद 20 प्रतिशत नमक का सीधा आशय यह है कि अन्य समुद्रीय क्षेत्रों के पानी की अपेक्षा यहां का पानी 10 गुना ज्यादा लवणीय है। यदि नहाते समय मात्र गिलास भर पानी मुंह में चला जाए तो सिर्फ आधे घंटे के भीतर व्यक्ति की मृत्यु निश्चित है। पानी में लवण की आधिकता के कारण ही इसका इस्तेमाल सौंन्दर्य प्रसाधनों में खूब किया जाता है। यहां पहुंचने वाले सैलानियों को रोगमुक्त करने के नाम पर 'डैड सी' के आसपास मौजूद कीचड़ का शरीर पर लेप कराने वालों का खूब धंधा चलता है। वैसे यहां की रोगमुक्त होने की आशा में अपने पूरे शरीर पर कीचड़ को मलते हैं। कीचड़ सूखने के बाद 'डैड सी' में नहाने का आनंद लिया जाता है। झील के किनारे लगभग हर जगह नमक के बड़े-बड़े सफेद ढेले बिखरे पड़े हैं।

कहा जाता है 'डैड सी' के किनारे बसने वाले लोग दुनिया में सबसे शरारती माने जाते थे। यहां के पानी में बार-बार नहाने से उनके सारे दुर्गुण धो कर बह गए और शेष रह गई विनोदशीलता, सहजता, सरलता और आतिथ्य भावना। इजराइल और जॉर्डन दोनों ही देशों से यहां सैलानी पहुंचते हैं। आसपास मौजूद मरुस्थलीय भूभाग, तेज हवा के झोंके से फिसलती रेत, मनमोहक पहाड़ियां, वर्तुलाकार सड़कें और प्रकृति की अनमोल सुनहरी किरणों से सैलानी अलग ही दुनिया से रूबरू होते हैं।

यहां के पानी के औषधीय गुणों की चर्चा सुनकर ग्रीस का राजा हेरोल्ड भी पहुंचा। वह अपनी गंभीर बीमारी से निजात पाने के लिए कई दिन तक 'डैड सी' में नहाया और रोगमुक्त हो गया। इस स्थान के आसपास पहाड़ों में कई गुफाएं हैं जो 10 किलोमीटर से भी अधिक लम्बी हैं। यहां एक आटे की गुफा है, जिसमें आटे के समान सफेद पाउडर भारी मात्रा में बिखरा पड़ा है। कई भौगोलिक विशेषताओं को समेटे यह स्थान दुनिया भर में सबसे नीचे यानी 400 मीटर तक समुद्रतल से नीचे है। पृथ्वी के सबसे लोअर पॉइंट पर पहुंचना भी अपने आप में रोमांचकारी अनुभव है।

- प्रकाश जोशी

पी.आई.एम.एस. हॉस्पिटल, उमरड़ा, उदयपुर

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

बाल एवं शिशु शल्य रोग विभाग

डॉ. प्रवीण झंवर

एम.एस. (जनरल सर्जरी)
एम.सी.एच. (पिडियाट्रिक सर्जरी)
From Lady Harding Medical College &
Kalawati Saran Children Hospital, New Delhi
बाल शल्य चिकित्सक

नवजात शिशु के ऑपरेशन

+ भोजन नली व श्वास नली का जुड़ा होना (TEF)
+ पेशाब के रास्ते जन्म से रूकावट (PUV)
+ आँतो का पूरा ना बनना (Intestinal Atresia)
+ लेट्रिंग का रास्ता नहीं बनना (Imperforate Anus/Anorectal Malformation)
+ लीवर, पेट व पेशाब संबंधी
+ गर्भ में बच्चे के विकार सम्बंधी काउंसलिंग (Fetal Counseling)

बच्चों के पेट के ऑपरेशन

+ अंपेडिक्स
+ आँतो में रूकावट
+ हर्निया, हाइड्रोसील
+ अण्डकोषो का नीचे ना होना
+ पीलिया के सर्जिकल कारण (Choledochal Cyst, EHBA)

बच्चों के गुर्दे/पेशाब संबधी इलाज

+ गुर्दो में रूकावट + पाइलोप्लास्टी + पेशाब में रूकावट + पथरी + हाइपोस्पेडियास, एपीस्पेडियास (लिंग में विकार)

ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का नि:शुल्क उपचार

कैशलेस सुविधा | तुरन्त भर्ती एवं जाँच | तुरन्त उपचार | नि:शुल्क दवाईयाँ

सेवाओं में विस्तार के साथ निम्न इंश्योरेन्स कम्पनियों हेतू टी.पी.ए. विपुल मेड कोर्प द्वारा अधिकृत संस्थान

National Insurance | United India | IFFCO-TOKIO GENERAL INSURANCE | Apollo Munich | bharti AXA general insurance | Universal Sompo General Insurance Co. Ltd. | RELIANCE General Insurance | HDFC ERGO | Max Bupa Health Insurance | ICICI Lombard

साई तिरूपति यूनिवर्सिटी
उदयपुर

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज	MBBS	0294-3010000, 9587890082
वेन्केटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग	B.Sc., M.Sc.	0294-3010015, 9587890063
वेन्केटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग	GNM	0294-3010015, 9587890063
वेन्केटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी	D.Pharma	0294-3010015, 9587890082

अम्बुआ रोड, ग्राम-उमरड़ा, तहसीलः गीर्वा, उदयपुर (राज.)
+91-294-3010000, +91-9587890122, +91-8696440666

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

क्रोध की अधिकता होने से अपने भी पराये बन सकते एवं स्वास्थ्य को नुकसान हो सकता है, किसी भी कार्य को दूसरों पर न छोड़ें, प्रोपर्टी सम्बन्धी विवाद सम्भव, शासकीय एवं न्यायिक मामले पेचीदा बने, नया काम टालने में हितकर रहे, सन्तान की सभी चिन्ताएं दूर होवे।

वृषभ

व्यक्तिगत कार्यों को लेकर दौड़धूप, किसी विशेष व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित होने एवं लाभप्रद रहे, शासकीय एवं राजकीय मामले पक्ष में बने, जीवन साथी से मनमुटाव, कारोबारी लाभ मिले, किसी निकटतम व्यक्ति से आहत हो सकते, वाद-विवाद एवं आपसी मंत्रणा से विचार बदल सकते हैं।

मिथुन

व्यर्थ के खर्चों से परेशानियां बढ़ेगी, साझेदारी लाभ देगी, अपने से बड़ों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, अनचाहे परिवर्तन से दुखी हो सकते, परन्तु परिवर्तन लाभप्रद रहेगा, विरोधी परास्त होंगे, स्वास्थ्य में भी परिवर्तन का अनुभव करेंगे, आय प्रभावित होगी, कार्य क्षेत्र से लाभ मिल सकता है।

कर्क

प्रतियोगियों को सफलता मिले, महत्वपूर्ण मसलों में असावधानियां परेशानी पैदा कर सकती। वित्त सम्बन्धी मामलों में सजग रहें, सेहत में उतार-चढ़ाव, मित्रों एवं प्रियजनों से दूरियां बढ़ सकती, स्थान परिवर्तन सम्भव, मान-सम्मान में वृद्धि होने एवं सार्वजनिक सम्मान भी हो सकता है।

सिंह

आपके प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि एवं किसी महत्वपूर्ण पद पर सुशोभित हो सकते हैं, वर्तमान घटनाओं को पक्ष में कर भावी योजनाओं को दिशा प्रदान करेंगे। किसी जटिल समस्या का निदान होगा, स्वास्थ्य में सुधार रहे, आर्थिक लाभ की प्रबल सम्भावनाएँ, व्यय की अधिकता बने।

कन्या

माह का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ परिणाम देगा, जिससे परेशानी चल रही थी उसका हल निकलेगा, किसी भी कार्य में जल्दबाजी न करे, विरोधियों से परेशानी सम्भव, बन्धुजनों से सहयोग, अध्ययन के क्षेत्र एवं विद्यार्थी वर्ग को परेशानी, आय पक्ष प्रभावित रहेगा, पैतृक मामलों का हल प्राप्त होवे।

तुला

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, जिन लोगों से आपके मतभेद चल रहे, उन्हीं से काम निकलवाना पड़ेगा एवं दोस्ती करनी पड़ेगी, वरना कारोबारी नुकसान से परेशानियाँ बनी रहेगी, पारिवारिक मामलों में सुधार, सन्तान पक्ष से श्रेष्ठ परिणाम एवं चिन्ता दूर, अपने अधीनस्थों से समझदारी से काम लेवें।

वृश्चिक

क्रोध पर नियंत्रण रखें, यह माह शुभ सुकून भरा रहेगा, राजकीय एवं शासकीय लाभ मिलेगा। यात्राओं की अधिकता, व्यवसाय से जुड़े लोगों को नई ऊर्जा प्राप्त होवे एवं नूतन योजनाएं बनेंगी एवं लाभप्रद रहेंगी, मित्रों से निकटता बनाये रखना लाभप्रद, आय पक्ष भी अनुकूल रहे।

धनु

स्थायित्व के कार्यों में ज्यादा ध्यान देवें, भावुकता में कोई फैसले न लेवे, आर्थिक दृष्टि से आ रही परेशानियाँ दूर होंगी, विरोधी एवं शत्रु पक्ष हावी होने का प्रयत्न करेंगे, सन्तान से चिन्ता सताएगी, आय पक्ष पूर्ण रूप से सहयोग करेगा, पैतृक मामले और पेचीदा हो सकते हैं।

मकर

व्यर्थ के कार्यों एवं बातों में समय व्यतीत न करें, स्वास्थ्य से असन्तुष्ट रहेंगे, प्रणय सम्बन्धों में कटुता का आभास, कार्यक्षेत्र में काम के दबाव के कारण दिक्कतें हो सकती है, साझेदारी में मनमुटाव, परिस्थितियों से समझौता कर अपने कार्य को आसान बनाने का प्रयत्न करें।

कुम्भ

यह माह मानसिक तनाव भरा रहेगा, स्वास्थ्य में गिरावट, परन्तु आर्थिक लाभ की पूर्ण सम्भावनाएँ, परिचितों एवं मित्रों की मदद से ही कार्य करें, किसी पर अत्यधिक विश्वास न करे, माह का उत्तरार्द्ध नई योजनाओं की शुरुआत कराएगा, आपके कार्य एवं परिश्रम की शुरुआत होगी।

मीन

आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त होंगे, स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव एवं नये कार्यों की शुरुआत होंगी। भाग्य पूर्ण रूप से सहयोग करेगा। आकस्मिक धन लाभ हो सकता है, संतान की ओर से कष्ट, अधूरे कार्यों को पुनः संचालित करने के योग, चुनौतीपूर्ण कार्यों में वर्चस्व बढ़ेगा।

शुद्ध शाकाहारी भोजन

रोशनलाल पालीवाल

हमारे यहां सभी तरह के शाकाहारी भोजन
व्यवस्था के ऑर्डर लिए जाते हैं।

पालीवाल शिव भोजनालय

3, चेतक मार्ग, उदयपुर - 313001 (राज.)

Phone : 0294-2429014, Mobile : 94603-24836

जयपुर के श्याम क्रिकेट क्लब ने जीता खिताब

विजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान करते पूर्व कप्तान कपिल देव, निदेशक विवेक पाटनी व अन्य।

उदयपुर। वंडर सीमेंट साथ : 7 क्रिकेट महोत्सव के द्वितीय संस्करण का समापन रोमांचक मुकाबलों के साथ दिल्ली पब्लिक स्कूल ग्राउंड पर हुआ। पुरुष वर्ग में जयपुर के श्री श्याम क्रिकेट क्लब ने पीसीए इलेवन, अहमदाबाद को 23 रन से शिकस्त देकर चैंपियन ट्रॉफी अपने नाम की। महिला वर्ग में पेसमेकर, उदयपुर ने एसएस जैन सुबोध गर्ल्स पीजी कॉलेज को 5 विकेट से परास्त कर खिताब जीता। वंडर सीमेंट के निदेशक विवेक पाटनी ने बताया कि समापन समारोह में भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान-क्रिकेटर कपिल देव ने 40 लाख रुपए के इनाम खिलाड़ियों में वितरित किए। कपिल देव ने श्याम क्रिकेट क्लब के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी सुशील मीणा को अपनी ओर से बतौर पुरस्कार एक लाख रुपए और वंडर सीमेंट की ओर से 35 हजार रुपए प्रदान किए। इस दौरान यूडीएच मंत्री श्रीचंद कृपलानी, सांसद अर्जुनलाल मीणा, मेयर चंद्रसिंह कोठारी, वंडर सीमेंट के उपाध्यक्ष विमल पाटनी, निदेशक विवेक पाटनी, संयुक्त निदेशक विकास पाटनी, एचआरएच ग्रुप के लक्ष्यराज सिंह मेवाड़, एसपी राजेंद्र प्रसाद गोयल आदि ने भी फाइनल मुकाबले का लुत्फ उठाया।

पूर्व राज्यमंत्री गरासिया को पीएचडी की उपाधि

उदयपुर। सुखाड़िया विश्वविद्यालय का 25 वां दीक्षांत समारोह 23 दिसंबर को आयोजित हुआ। समारोह में पूर्व खेल राज्यमंत्री मांगीलाल गरासिया को राज्यपाल एवं उच्च शिक्षामंत्री ने संयुक्त रूप से पीएचडी की उपाधि प्रदान की। गरासिया ने अपना शोध कार्य सामाजिक विज्ञान में पूरा किया है।

मनोज जोशी संभाग सहप्रभारी

उदयपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से शुरू किए गए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ प्रकल्प की प्रदेश संयोजक मीना आसोपा ने भाजपा जिला मंत्री मनोज जोशी को उदयपुर संभाग का सहप्रभारी मनोनीत किया। इससे पूर्व जोशी भाजपा आईटी प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक रह चुके हैं तथा भाजपा झामेश्वर मंडल के भी वर्तमान में प्रभारी हैं।

भंवरलाल गुर्जर विद्यापीठ के कुल प्रमुख नियुक्त

कुल प्रमुख पद पर नियुक्त होने पर भंवरलाल गुर्जर का स्वागत करते कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस सारंगदेवोत व अन्य।

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ कुल की मातृ संस्था व्यवस्थापिका की बैठक कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस सारंगदेवोत की अध्यक्षता में हुई। इसमें भंवरलाल गुर्जर को अगले पांच वर्ष के लिए सर्वसहमति से कुल प्रमुख के पद पर नियुक्त किया गया। गुर्जर ने जनुभाई के सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया। सचिव भेरूलाल लोहार, रजिस्ट्रार प्रो. सी.पी अग्रवाल, प्रो. मंजू मांडोत, विशेषाधिकारी डॉ. हेमशंकर दाधीच, डॉ. भवानीपाल सिंह राठौड़ आदि मौजूद थे।

दीया मेहता राष्ट्रीय स्तर पर चयनित

उदयपुर। राजस्थान युवा बोर्ड की ओर से आयोजित राज्य युवा सांस्कृतिक प्रतिभा खोज महोत्सव में सेंट एंथोनीज की छात्रा दीया मेहता ने राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य विलियम डीसूजा ने बताया कि दीया का चयन राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए हुआ।

डॉ. अरविंदर की पुस्तक का विमोचन

डॉ. अरविंदर सिंह की पुस्तक का विमोचन करतीं उच्च शिक्षामंत्री।

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक के डॉ. अरविंदर सिंह की पुस्तक टेन टूल्स टू क्रिएटिव जीनियस का विमोचन सुविवि में आयोजित एक समारोह में उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी ने किया। डॉ. अरविंदर सिंह ने बताया कि पुस्तक में क्रिएटिविटी, इनोवेशन व आइडिया की बढ़ोतरी के लिए 10 सूत्र दिए गए हैं। यह पुस्तक फिलहाल अंग्रेजी भाषा में लॉन्च हुई है, शीघ्र ही विभिन्न भाषाओं में इसका अनुवाद प्रकाशित किया जाएगा। उनकी पुस्तक सरल भाषा में मनुष्य मस्तिष्क की गहराइयों से परिचय के साथ-साथ विभिन्न उदाहरणों द्वारा बुद्धिमता विकास के सूत्र प्रदान करेगी।

डॉ. जोशी आरसीए के नए अधिष्ठाता

उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आणविक जीव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के आचार्य एवं विभागाध्यक्ष डॉ. अरुणाभ जोशी को तीन वर्ष के लिए आरसीएम के अधिष्ठाता के रूप में चुना गया। जोशी ने 31 दिसंबर को दोपहर बाद सेवानिवृत्त अधिष्ठाता डॉ. आर स्वामीनाथन की जगह कार्यभार संभाला।

लोकेश अध्यक्ष, अशोक बने उपाध्यक्ष

निर्वाचित कार्यकारिणी व इकाई अध्यक्ष का स्वागत करते समाजजन।

उदयपुर। चौधरी मेवाड़ा कलाल समाज मेवाड़, गिर्वा, बांरा, चुंडा के चुनाव शांतिलाल चौधरी चुनाव अधिकारी व सह निर्वाचन अधिकारी बंशीलाल चौधरी के निर्देशन में संपन्न हुए। इसमें केंद्रीय अध्यक्ष पद पर लोकेश चौधरी, उपाध्यक्ष- अशोक चौधरी, महामंत्री श्याम सुंदर चौधरी, कोषाध्यक्ष मदनलाल चौधरी, संगठन मंत्री- विकास चौधरी, शहर इकाई अध्यक्ष जसवंत चौधरी, वल्लभनगर अ- अशोक चौधरी, वल्लभनगर ब- रामसुख चौधरी के अलावा मावली इकाई अध्यक्ष पद पर सुंदर चौधरी, बड़ीसादड़ी-भंवरलाल चौधरी, गिर्वा- डालचंद, गिर्वा ब- रोड़ीलाल, लसाड़िया- भगवती लाल चौधरी, डूंगला- रोशनलाल व दिनेश चौधरी गोगुंदा इकाई अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए।

श्री जैन युवा परिषद : सांस्कृतिक संध्या व समारोह

शांतिलाल वेलावत को समाज गौरव अलंकरण से सम्मानित करते अतिथि।

उदयपुर। श्री जैन युवा परिषद का ऑडिटोरियम में भव्य सांस्कृतिक संध्या, नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें नागदा समाज के शिक्षा में अव्वल रहे मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया। सकल दिगंबर जैन समाज के विभिन्न महिला मंडलों के लेडिज ग्रुप व बच्चों ने मनमोहक नृत्य की प्रस्तुतियां दी। अध्यक्ष विक्रम देवड़ा ने बताया कि शांतिलाल वेलावत, राजेश गदावत, मंजू गदावत, डॉ. प्रकाश वेलावत व डॉ. निलाक्षी पंचोली को समाज गौरव के अलंकरण से सम्मानित किया गया। सचिव दिनेश वेलावत ने बताया कि कार्यक्रम में पारस सिंघवी, चंद्रसिंह कोठारी बतौर अतिथि उपस्थित थे।

कुंतीलाल राष्ट्रीय गौरव अलंकरण से सम्मानित

कुंतीलाल जैन को राष्ट्र गौरव अलंकरण से सम्मानित करते अशोक वोरा, प्रदीप कासलीवाल, राजेश जैन एवं अन्य।

उदयपुर। अखिल भारतीय दिगंबर जैन दसा नरसिंहपुरा संस्थान का महाअधिवेशन इंदौर के 7 स्टेप मेरिज गार्डन में हुआ। मुख्य अतिथि इंदौर सकल दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद के चेयरपर्सन प्रदीप कासलीवाल, विशिष्ट अतिथि रतलाम के उद्योगपति व समाजसेवी राजेश जैन थे। अध्यक्षता वागड़ प्रोजेक्ट चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर अशोक वोरा ने की। देशभर के 9 डॉक्टर्स, 8 दिव्यांग व 8 विधवाओं को मातृशक्ति सम्मान के तहत आर्थिक सहायता दी। इस दौरान सकल दिगंबर नरसिंहपुरा समाज इंदौर एवं सामाजिक संसद इंदौर की ओर से उदयपुर के कुंतीलाल जैन को राष्ट्र गौरव अलंकरण से सम्मानित किया गया।

मिरेकल्स वर्ल्ड रिकॉर्ड इंग्लैंड में भाणावत का नाम दर्ज

उदयपुर। टॉप 100 वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर की सूची में अपना नाम दर्ज करवाने वाले लेकसिटी के विनय भाणावत का नाम मिरेकल्स वर्ल्ड रिकॉर्ड इंग्लैंड में दर्ज किया गया। उन्होंने 786संख्या वाले 92 हजार नोटों का संग्रह कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। इसके लिए मिरेकल्स वर्ल्ड के हिन्दुस्तान के प्रमुख थिम्मिरी रविंद्र ने भाणावत को स्वर्ण पदक और प्रमाण पत्र प्रेषित किया है।

पंड्या को प्लेयर ऑफ द मीट का खिताब

हरीश पंड्या को गोल्ड मेडल एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान करते बैंक चेयरमेन बद्रीनारायण शर्मा, एमडी एच.एच. यादव, सुधीर पंड्या, ओमप्रकाश व अतिथि।

उदयपुर। स्पेक्ट्रम एवं दी सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड खेलकूद एवं सांस्कृतिक समिति भीलवाड़ा के साझे में आयोजित भीलवाड़ा में राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में सीसीबी डूंगरपुर के हरीश पंड्या को प्लेयर ऑफ द मीट का खिताब दिया गया। अतिथियों ने गोल्ड मेडल एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर उनका सम्मान किया। बेडमिंटन प्रतियोगिता में सीसीबी डूंगरपुर की टीम के हरीश पंड्या, प्रशांत मेहता व सुशील शर्मा उप विजेता रहे। साथ ही बेडमिंटन में 55 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में हरीश पंड्या विजेता रहे। बैंक अध्यक्ष बद्रीनारायण शर्मा, प्रबंध निदेशक हीरालाल यादव ने खिलाड़ियों को प्रधान कार्यालय डूंगरपुर में सम्मानित किया। बैंक अधिकारी राजसिंह, सुधीर पंड्या, हनुमंत सिंह सहित कई गणमान्य मौजूद थे।

पारस सिंघवी पांचवीं बार निर्विरोध चैम्बर अध्यक्ष

उदयपुर। चैम्बर ऑफ कॉमर्स उदयपुर डिवीजन के चुनाव में पारस सिंघवी लगातार पांचवीं बार निर्विरोध अध्यक्ष बने। सिंघवी ने संरक्षक पद पर गणेश डागलिया के नाम की घोषणा की। इसके बाद डागलिया व अध्यक्ष सिंघवी ने सलाहकार मंडल की घोषणा करते हुए परम संरक्षक-किरणमल सावनसुखा, धीरेंद्र सचान, शब्बीर मुस्तफा तथा सलाहकार-जानकीलाल मूंदड़ा, अंबालाल बोहरा, शिवकुमार बाफना, सुखचैन सिंह कंडा व मुख्य सलाहकार के पद पर फतहलाल जैन के मनोनयन की घोषणा की।

खबर सम्राट के कैलेंडर का विमोचन

उदयपुर। खबर सम्राट के वार्षिक कैलेंडर का लोकार्पण भगवान बोहरा गणेशजी के वंदन के साथ सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, नई दिल्ली के अतिरिक्त निदेशक गोपेंद्रनाथ भट्ट ने किया। इसके बाद कैलेंडर पाठकों को समर्पित किया। भट्ट ने कहा कि समाचार पत्र समाज का आइना होता है। उसे ईमानदारी और संवेदनशीलता से अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। इस मौके पर खबर सम्राट के संपादक शांतिलाल सिरोया ने गोपेंद्र नाथ भट्ट, राजसमंद सूचना-जनसंपर्क सहायक निदेशक दीपक आचार्य, उदयपुर सूचना-जनसंपर्क उपनिदेशक गौरीकांत शर्मा एवं सहायक जनसंपर्क अधिकारी पवन शर्मा का आभार जताया। सिरोया ने कैलेंडर प्रकाशन में योगदान के लिए एमडीएस सीनियर सैकंडरी स्कूल प्रमुख शैलेंद्र सोमानी, सर्वेश कृष्ण कम्प्यूटर एड एजुकेशन सेंटर के निलय माथुर, ग्रीन चिली रेस्टोरेंट एवं पंजाबी लजीज के नीलेश पाटीदार, हिरक इंडस्ट्रीज के पुनीत अग्रवाल, अथर्वा कन्सलटेंसी के अशोक कुमार डोडिया, शूलधारिणी सेना प्रदेश प्रमुख एवं स्टर्लिंग सेल्स के अशोक कुमार जैन, विश्वेश्वरैया फाउंडेशन के प्रदीप नागदा, आनंद फूड के ओम लालवानी, इनफिनिटी रियल स्टेट के प्रवीण शर्मा, द प्राइम एग्रो के असलम हुसैन, होटल राधाकृष्णा के रमेश पालीवाल, जोधपुर मिष्ठान के आनंद परिहार तथा प्रसिद्ध ज्योतिषविद् प्रभु प्रजापत का भी आभार जताया।

सीएम को दिया प्रतिष्ठा महोत्सव का निमंत्रण

वसुंधरा राजे को निमंत्रण देते गुलाबचंद कटारिया, विधायक फूलसिंह मीणा, सुशील बांठिया, श्याम सिरोया एवं अन्य।

उदयपुर। देलवाड़ा जैन तीर्थ मंदिरों के जीर्णोद्धार के बाद 3 व 4 फरवरी को होने वाले अंजन शलाका प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए सीएम वसुंधरा राजे को जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ के सुशील बांठिया के नेतृत्व में गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया के जरिये निमंत्रण दिया गया। देलवाड़ा जैन सोसायटी के डॉ. अनिल कुमार कटारिया ने बताया कि गृहमंत्री के प्रयास एवं आचार्य सोम सुंदर की निश्रा में अति प्राचीन जैन मंदिरों का दशक से काम चल रहा था। सीएम राजे ने आगामी माह में होने वाले कार्यक्रम में 4 फरवरी को आने की स्वीकृति प्रदान की है। इस दौरान प्रकाश सिंघवी, मांगीलाल कटारिया, अनिल लोढ़ा, गणेश चौहान, अनिल कटारिया, वीरेंद्र सिरोया, दिनेश पामेचा, जगदीश कटारिया आदि मौजूद थे।

डॉ. कुमावत विहिप में न्यासी नियुक्त

उदयपुर। विश्व हिन्दू परिषद ने डॉ. प्रदीप कुमावत को विहिप की केन्द्रीय प्रन्यास मण्डल में प्रबंधन समिति में न्यासी/ट्रस्टी नियुक्त किया हैं। न्यासी बनने पर डॉ. कुमावत का विभिन्न संगठनों ने जगदीश चौक पर अभिनंदन किया। इस कार्यक्रम में कमलेंद्र सिंह पंवार, शिवसिंह सोलंकी आदि मौजूद थे।

डॉ. मुर्डिया को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर। स्वस्थ हिन्दुस्तान कॉन्क्लेव में इंदिरा आईवीएफ ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया को हाल ही दिल्ली में आयोजित एक समारोह में लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान स्वास्थ्य क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया गया। मुख्य अतिथि केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री ने उन्हें प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह

उदयपुर। दी यूनिवर्सल सीनियर सैकंडरी स्कूल द्वारा गठित क्रिएटिव कैमरा इंटरनेशल क्लब की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह हुआ। प्रबंध निदेशक संदीप सिंघटवाड़िया ने बताया कि इस क्लब के द्वारा बच्चों को फोटाग्राफी का प्रशिक्षण देने के साथ कैमरे से संबंधित जानकारियां, फोटाग्राफी की तकनीकी बारीकियां सिखाई जाएगी। प्रधानाचार्य डॉ. मधु योगी के निर्देशन में नवगठित कार्यकारिणी कार्य करेगी। राकेश राजदीप व विष्णु पालीवाल प्रशिक्षण देंगे व उप प्रधानाचार्य शमशाद खान सहयोग करेंगी। क्लब के अध्यक्ष-राहुल पांडे, उपाध्यक्ष-छवि चित्रोल, समिति समन्वयक-पुष्पेंद्र राठौड़, थीम विषक समन्वयक-हर्षवर्धन, वित्त समन्वयक रूचि राजपूत, तकनीकी समन्वयक-पवन सुथार, प्रभारी जितेंद्र राव, सचिव-हर्ष प्रताप को शपथ दिलाई गई।

विदेशों में भी व्यापारियों की आवाज बना फोर्टी : अग्रवाल

उदयपुर। फैडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एंड इंडस्ट्री (फोर्टी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश अग्रवाल के मुख्य आतिथ्य में संगठन की संभागीय कार्यकारिणी की बैठक मंगलम फन स्क्वेयर स्थित लजिज अफेयर्स में संपन्न हुई। अग्रवाल ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि व्यापारियों के हितों की आवाजें उठाने के परिणाम स्वरूप फोर्टी ने विदेशों में भी अपनी शाखाएं खोलकर व्यापारियों की आवाज बना। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में फोर्टी फोर्टी विदेशों में 50 से अधिक शाखाएं खोलेगा। संभागीय अध्यक्ष प्रवीण सुथार ने बताया कि फोर्टी की उदयपुर शाखा शीघ्र ही अलग-अलग क्षेत्रों में सराहनीय योगदान देने वाली संभाग की प्रतिभाओं, छोटे-मझले व्यापारियों को सम्मानित किया जाएगा। सुथार ने राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश अग्रवाल से फोर्टी राजस्थान द्वारा आयोजित किए जाने वाले राज्य स्तरीय सम्मान समारोह की उदयपुर को मेजबानी करने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने कहा कि ई-वे बिल एक अच्छा कदम है, लेकिन कुछ प्रावधान अव्यवहारिक हैं। संभागीय अध्यक्ष प्रवीण सुथार, महासचिव शरद आचार्य, अतिरिक्त महासचिव पलाश वैश्य, सचिव अरविन्द अग्रवाल सहित कई सदस्यों ने उपरणा एवं शॉल ओढ़ाकर अग्रवाल का सम्मान किया और भागवत गीता भेंट की। यह जानकारी महासचिव शरद आचार्य ने दी।

सिंघवी विधि प्रकोष्ठ के प्रदेश सह संयोजक मनोनीत

उदयपुर। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी के निर्देशानुसार विधि प्रकोष्ठ राजस्थान के संयोजक सुरेंद्र सिंह नरूका ने अपनी कार्यकारिणी में उदयपुर के एडवोकेट अशोक सिंघवी व पुखराज कोठारी को सदस्य मनोनीत किया। सिंघवी पूर्व में एबीवीपी के प्रदेश सहमंत्री भी रह चुके हैं। यह जानकारी विधि प्रकोष्ठ शहर जिला उदयपुर के जिला संयोजक भानु भटनागर ने दी।

400 ग्राम के शिशु को मिला जीवन

उदयपुर। जीवंता हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने महज 400 ग्राम की नवजात को बचाकर रिकॉर्ड बनाया। दावा है कि यह दक्षिण एशिया का पहला केस है, जिसमें न्यूनतम वजनी नवजात को बचाया गया। 7 माह तक जिंदगी और मौत से संघर्ष करने वाले नवजात को आखिर जीवन मिला।

डायरेक्टर डॉ. सुनील जांगिड़ ने बताया कि कोटा निवासी दंपती सीमा-गिरीराज को शादी के 35 साल बाद संतान मिली। पूर्व आपात ऑपरेशन कर नवजात का जन्म करवाया गया। डॉ. जांगिड़, डॉ. निखिलेश जैन ने इलाज कर सबसे कम वजन की नवजात को बचाया। इससे पहले 450 ग्राम वजनी शिशु का उपचार चंडीगढ़ में हुआ। शिशु को 210 दिन तक गहन चिकित्सा में रखा गया। सात महीने बाद इसका वजन 2400 ग्राम हो गया है। पूरी तरह से स्वस्थ होने पर बालिका का नाम मानुषी रखा गया। डॉ. एसके टाक ने बताया कि

आधुनिक तकनीकों से कम वजन के 500 ग्राम के बच्चों को बचाना संभव हो रहा है।

'बस मैं और तुम' काव्य संग्रह का विमोचन

उदयपुर। इंद्रलोक गार्डन में केआरसी डिजिटल इंडिया की ओर से आयोजित 'एक शाम अमन के नाम' कवि सम्मेलन में देश के प्रख्यात गीतकार व कवि डॉ. कुमार विश्वास ने उदयपुर के कवि डॉ. लोकेश जैन के काव्य संग्रह 'बस मैं और तुम' का विमोचन किया। काव्य संग्रह को डॉ. जैन ने दो भागों में लिखा है। पहले भाग में 'बस मैं और तुम' में शृंगार की सशक्त रचनाएं है। वहीं दूसरे भाग में 'तब और अब' समसामयिक विषयों से संबंधित एवं देशभक्तिपरक रचनाएं है। कवि सम्मेलन के मुख्य अतिथि राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल(प्रो.)एस.एस सारंगदेवोत थे।

स्वर्ण पदक विजेता लक्षित का सम्मान

लक्षित को सम्मानित करते निदेशक दिलीप सिंह यादव एवं मोना पालीवाल

उदयपुर। महाराष्ट्र में हुई राष्ट्रीय जूनियर और फैडरेशन कप स्ट्रैंथ लिफ्टिंग प्रतियोगिता में राजस्थान की टीम ने शानदार प्रदर्शन कर दो स्वर्ण, एक रजत और तीन कांस्य पदक जीते। राजस्थान स्ट्रैंथ लिफ्टिंग के सचिव चंद्रेश सोनी ने बताया कि राजस्थान को पहला स्वर्ण उदयपुर के लक्षित पालीवाल ने 52 किलो भारवर्ग में दिलाया। लक्षित के उदयपुर पहुंचने पर राज्य स्ट्रैंथ लिफ्टिंग संघ के चेयरमैन प्रमोद सामर, सचिव चंद्रेश सोनी और कोच अनिल पंचारिया ने स्वागत किया। लक्षित का चयन इंडोनेशिया में होने वाली अंतरराष्ट्रीय स्ट्रैंथ लिफ्टिंग की भारतीय टीम में हुआ है।

डॉ. गीता पटेल केन्द्रीय डेयरी कार्यकारी समिति में निर्वाचित

उदयपुर। उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ की अध्यक्ष डॉ. गीता पटेल इंडियन डेयरी एसोसिएशन की केंद्रीय कार्यकारी समिति में निर्वाचित हुई हैं। डॉ. पटेल ने एसोसिएशन की केंद्रीय समिति में सामान्य सदस्य के लिए एक मात्र महिला उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा। इसमें द्वितीय स्थान पर उनको सर्वाधिक मत मिले।

रॉकवुड ने जीते छह स्वर्ण पदक

उदयपुर। राजस्थान रोलर स्पॉर्ट्स एसोसिएशन और श्रीराम स्केटिंग क्लब के साझे में सीपीएस स्कूल में आयोजित स्टेट स्पीड स्केटिंग चैम्पियनशिप में रॉकवुडस ने 6स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीते। प्राचार्य नीरू ने बताया कि कर्तिकेय पंडित ने 2 गोल्ड, लब्धि सुराणा ने 2 गोल्ड, जगत प्रताप सिंह गहलोत ने 2 गोल्ड, दर्शनराज सिंह राणावत ने 2 गोल्ड और कृपा वर्मा ने एक ब्रॉच मेडल हासिल किया। विद्यालय में बच्चों के साथ कोच मनजीत सिंह का स्वागत किया गया।

शिविर में 62 कर्मचारियों की जांच

उदयपुर। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड एवं जिला तंबाकू नियंत्रण प्रकोष्ठ (स्वास्थ्य विभाग) द्वारा तंबाकू मुक्ति के साझे में स्वस्थ व स्वच्छ अभियान के तहत धूम्रपान नियंत्रण व रोकथाम को लेकर एक मेडिकल कैम्प एचआर विभाग में जेके टायर के कर्मचारियों के लिए आयोजित किया गया। आर के हॉस्पिटल के साइकॉलोजिस्ट जमिल अहमद, हार्दिक जोशी, जिला सलाहकार एवं अंकित कुमार, डीईओ के सहयोग से करीब 62 कर्मचारियों की जांच की एवं निशुल्क दवाइयां प्रदान की गई। जेके के वाइस प्रसीडेंट (वर्क्स) आर केडिया ने धूम्रपान के दुष्परिणाम बताए। महाप्रबंधक राकेश प्रसाद श्रीवास्तव ने अपने अनुभव साझा किए।

मयूरी को पीएचडी

उदयपुर। पेसिफिक यूनिवर्सिटी उदयपुर ने मयूरी अग्रवाल को शिक्षा संकाय में 'नैतिक शिक्षा का वैदिक एवं अवैदिक विचारधाराओं में तुलनात्मक' विषय पर शोध करने पर पीएचडी की उपाधि प्रदान की। यह शोध उन्होंने डॉ. मधु शर्मा के निर्देशन में पूरा किया। यह शोध भारतीय दर्शन के संदर्भ में जानने, समझने एवं अनुसरण करने में बहुत ही उपयोगी रहेगा।

समग्र ग्रामीण समुदाय का उत्थान कर रहा है विद्यापीठ : प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर। राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के 31 वें स्थापना दिवस को संकल्प दिवस के रूप में मनाया। स्थापना दिवस समारोह में कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि राजस्थान विद्यापीठ समग्र ग्रामीण समुदाय का उत्थान कर रहा है, जो कि संस्थापक जनुभाई का सपना था। कुल प्रमुख बीएल गुर्जर ने कहा कि जनशिक्षण द्वारा समूचे मेवाड़ के ग्रामीण समुदाय में शिक्षा देने का कार्य हाथ में लिया है। इस मौके पर प्रो. जीएम मेहता, डॉ. हेमशंकर दाधीच, डॉ. मनीष श्रीमाली, प्रो. जीवनसिंह खरकवाल, डॉ. मंजू मांडोत, प्रो. एसके मिश्रा, डॉ. घनश्याम सिंह भींडर, कृष्णकांत नाहर, डॉ. प्रकाश शर्मा, डॉ. युवराज सिंह राठौड़, डॉ. भवानीपाल सिंह, डॉ. धर्मेंद्र राजोरा, डॉ. दिनेश श्रीमाली, डॉ. भारत सिंह देवड़ा, डॉ. सुनील चौधरी सहित कई कार्यकर्ताओं ने प्रतापनगर स्थित संस्थापक जनुभाई की आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

इंदिरा आईवीएफ रोहतक सेंटर का उद्घाटन

उदयपुर। नि:संतानता इलाज के क्षेत्र में कार्यरत इंदिरा आईवीएफ ग्रुप के 32 वें सेंटर का शुभारंभ रोहतक में किया गया। नि:संतान दंपत्तियों को रियायती दर पर इलाज उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से इंदिरा आईवीएफ का हरियाणा में दूसरा सेंटर है। ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने कहा कि यहां विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा आधुनिक तकनीकी से नि:संतानता से जुड़ी समस्याओं का इलाज किया जाएगा। उन्होंने कहा कि नि:संतानता का इलाज संभव है, बस जरूरत है समय पर सही कदम उठाने की। आधुनिक तकनीक ने अब संतान प्राप्ति की राह को आसान कर दिया है। शुभारंभ के मौके पर एवं जागरुकता के उद्देश्य से निशुल्क नि:संतानता जांच शिविर भी लगाया गया।

टेंशन फ्री पॉजिटिव लाइफ स्टाइल अपनाएं

उदयपुर। सोरायसिस पर देश में पहली इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस का समापन कई नव संकल्पों, नवाचारों, भविष्योन्मुखी योजनाओं और शोध आधारित विचारधाराओं के आदान-प्रदान के साथ हुआ। इस दौरान विशेषज्ञ चिकित्सकों ने एकमत से कहा कि सोरायसिस जैसी बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए 'टेंशन फ्री पॉजिटिव लाइफ' को आत्मसात करना होगा। इसके अलावा जंक फूड, स्मोकिंग, एल्कोहल को बाय-बाय कहकर योग-व्यायाम को जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाना होगा। आयोजन सचिव डॉ. प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि डालॉग्स इन क्लिनिकल डर्मेटोलॉजी (डीआईसीडी) के तत्वावधान में सार्क-एएडी की ओर से आयोजित कॉन्फ्रेंस के अंतिम दिन 'ओरल और इंजेक्टेबल मैथड्स' पर पहले इंटरेक्टिव सेशन में एक्सपर्ट्स और डेलिगेट्स के बीच गहन मंथन हुआ। कॉन्फ्रेंस के दौरान चर्म रोग चिकित्सा के क्षेत्र में उपचार संबंधी नवाचारों का सूत्रपात करने व नई अंतदृष्टि प्रदान करने पर उदयपुर के डॉ. प्रशांत अग्रवाल का सार्क-एडी की ओर से स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

दूरबीन से निकाली गर्भाशय में पड़ी एक किलो की गांठ

उदयपुर। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल में वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ एवं लेप्रोस्कॉपिक सर्जन डॉ. मोनिका (शर्मा) खंडेलवाल एवं उनकी टीम ने महिला के गर्भाशय से करीब एक किलो की गांठ बिना चीरफाड़ के दूरबीन से ऑपरेशन कर निकाली। जटिल ऑपरेशन गर्भाशय को सुरक्षित रखते हुए किया गया ताकि महिला भविष्य में गर्भाधान से वंचित न हो। ग्रुप डायरेक्टर डॉ. आनंद झा ने बताया कि दूरबीन से गांठ निकालने का यह संभाग का पहला ऑपरेशन है। कई सालों से फाइब्रोइड एवं नि:संतानता से पीड़ित महिला अब पूरी तरह स्वस्थ है। डॉ. मोनिका ने बताया कि इस तरह के एडवांस ऑपरेशन के लिए मरीज को अहमदाबाद या मुंबई जैसे बड़े शहरों की ओर रूख करना पड़ता है लेकिन अब यह सुविधा जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल में भी उपलब्ध है।

इंटरनेट के उपयोग के साथ बड़ा साइबर क्राइम : प्रो. धर्मसिंह

उदयपुर। सीएसआई की ओर से साइबर क्राइम एवं सिक्योरिटी पर जारी अंतरराष्ट्रीय सेमिनार संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि नामिबिया यूनिवर्सिटी के प्रो. धर्मसिंह ने कहा कि इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के साथ ही साइबर क्राइम भी बढ़ गए है। उन्होंने क्लाउड कम्प्यूटिंग, फोग कम्प्यूटिंग एवं रूफ कम्प्यूटिंग जैसी तकनीकी को भविष्य के लिए उपयोगी बताया। विशिष्ट अतिथि सहायक पुलिस अधीक्षक ब्रजेश सोनी ने साइबर क्राइम से जुड़ी वास्तविक घटनाओं की जानकारी एवं उदाहरण देकर विद्यार्थियों को सावधानी से सोश्यल मीडिया नेटवर्किंग का उपयोग करने की हिदायत दी। उन्होंने जहां एक तरफ इंटरनेट व स्मार्ट फोन को आवश्यक बताया वहीं दूसरी ओर इस तकनीक के गलत उपयोग से बढ़ते आपराधिक मामलों पर भी चिंता व्यक्त की। सोनी ने यह भी बताया कि 90 फीसदी मामले कानूनी तौर पर दर्ज ही नहीं होते है।

शोक समाचार

उदयपुर। श्रीमान रोशनलाल साहू (जरवार) पूर्व पार्षद वार्ड 49 का स्वर्गवास 13 जनवरी को हो गया। वे वर्तमान में फतहसागर स्थित मुंबइया बाजार के अध्यक्ष और पूर्व में शहर कांग्रेस में सचिव भी रहे है। उनके निधन पर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, डॉ. सी. पी. जोशी, डॉ. गिरिजा व्यास, रघुवीर मीणा ने भी शोक प्रकट किया। साहू के निधन पर बाजार के व्यापारियों ने शोक जताया और मुंबइया बाजार बंद रखा। वे अपने पीछे पुत्र राजेश व मनोज के अलावा भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमति सूरजदेवी धर्मपत्नी स्व. मदनमोहन जी शर्मा (वार्डन साहब) का देवलोकगमन 11 जनवरी को हो गया। वे अपने पीछे पुत्र डॉ. रमेश चंद्र शर्मा, महेश चंद्र, सुरेश चंद्र, डॉ. डी.सी शर्मा सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों से भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमति कमला देवी धर्मपत्नी राजमल जी मुंदड़ा का 24 दिसंबर को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे पुत्र कुंज बिहारी, दिलीप, दाऊ, मोती, रमेश सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों से भरापूरा परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। बसंतीलाल जी सिंघवी (सुपुत्र-स्व. सोहनलाल जी सिंघवी) का 3 जनवरी को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र नरेंद्र, सुभाष, संजय सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों से भरापूरा परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। श्रीमति सुधा गर्ग धर्मपत्नी श्री भवानीशंकर गर्ग (पूर्व चांसलर, राजस्थान विद्यापीठ) का आकस्मिक स्वर्गवास 28दिसंबर को गया। वे अपने पीछे पुत्र राजीव सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। श्री लक्ष्मीकांत जानी सुपुत्र स्व. मगनलाल औदीच्य (वकील सा.) देलवाड़ा का 27 दिसंबर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी विमला जानी, पुत्र आशिष, पुत्री शालिनी, मालिनी सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों का संपन्न परिवार छोड़कर गए है।

उदयपुर। श्रीमति मोहन देवी धर्मपत्नी स्व. रोशनलाल जी मेड़तवाल (करेड़ा वाले) का आकस्मिक निधन 23 दिसंबर को हो गया। वे अपने पीछे पुत्र लादूलाल, भगवतीलाल, शुभकरण सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों से भरापूरा परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। श्रीमान मदनलाल जी चैचाणी का देवलोकगमन 8जनवरी को हो गया। वे अपने पीछे पुत्र कमलेश, चंद्रप्रकाश, श्यामसुंदर सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों से भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमति सुन्दर देवी धर्मपत्नी स्व. किशनलाल जी बोल्या का आकस्मिक निधन 12 जनवरी को हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी कमला पानेरी, पुत्र अंबिकेश, विनोद सहित पौत्र-पौत्रियों से भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमान भंवरलाल जी पानेरी (गुर्जर गौड़) का स्वर्गवास 14 जनवरी को हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी कमला पानेरी, पुत्र अंबिकेश, विनोद के अलावा भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

अलख

अलख नयन

आई हॉस्पिटल

Pratap Nagar centre

आँखों से
सम्बन्धित रोगों के
निदान का विश्वस्तरीय केन्द्र

विश्वस्तरीय
सम्पूर्ण
नेत्र चिकित्सा

- मोतियाबिन्द
- कॉर्निया
- नेत्र प्रत्यारोपण
- कालापानी
- बच्चों के नेत्र रोग
- रेटिना
- डायबिटीक रेटिनोपैथी

सुपर स्पेशलाइज्ड एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ

डॉ. एल एस. झाला
मेडिकल डायरेक्टर
कैटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जन

डॉ. नितिश खतुरिया
कॉर्निया विशेषज्ञ

डॉ. शिवानी चौहान
नेत्र विशेषज्ञ

डॉ. साकेत आर्य
रेटिना विशेषज्ञ

डॉ. सुमित वार्ष्णेय
ग्लूकोमा विशेषज्ञ

डॉ. गर्व बिश्नाई
नेत्र विशेषज्ञ

'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, ट्रांसपोर्ट नगर के पास, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

★★★★
AMANTRA
GROUP OF HOTELS
Udaipur -Rajasthan

Amantra now serves the authentic

Taste of China

Welcome to your favourite Dine..

M +91 8003331188/77/55
reservation@amantrahotel.com
reservation@amantraresorts.in
www.amantrahotels.in

AMANTRA COMFORT HOTEL, Udaipur
AMANTRA SHILPI RESORT, Udaipur
AMANTRA TIGER VALLEY RESORT, Kumbhalgarh
HOTEL LANDMARK , Udaipur
HOTEL DAYAL, Udaipur

Director
Dr. D.C. Sharma
MD (Medicine)
DM (Endocrinology) AIIMS, Delhi
Former Prof. & Head Endocrinology,
RNT Medical College, Udaipur

डॉ.डी.सी.शर्मा

डायबिटीज़, थायरॉइड व हॉर्मोन्स हॉस्पिटल

सृजन हॉस्पिटल

- डायबिटीज़ क्लिनिक
- थायरॉइड रोग
- मोटापा Obesity
- अनचाहे बाल
- ठिगनापन व विकास
- सेक्स व यौन हॉर्मोन्स
  सम्पर्क: 09468707189
- गर्भावस्था में डायबिटीज़ व थायरॉइड रोग
- डायबिटीज़ फुट (पाँव) थायरॉइड व अन्य ऑपरेशन
- ब्लड प्रेशर क्लिनिक

नवीनतम उपचार व तकनीक

डायबिटीज़ चेकअप पैकेज, डायबिटीज़ एक्जीक्यूटीव चेकअप पैकेज
थायरॉइड पैकेज, सेक्स हॉर्मोन्स चेकअप पैकेज
सामान्य हेल्थ चेकअप पैकेज

उत्तरी भारत का सर्वश्रेष्ठ डायबिटीज़, थायरॉइड, सेक्स व हॉर्मोन्स हॉस्पिटल

111, आनन्द नगर, आयड़, लेकसिटी मॉल के सामने, उदयपुर (राज.)
फोन : 0294-2429690, 2429850, M.: 09468707189, 08949068184
www.drdcsharma.in srajanhospitalidth@gmail.com

VERONA
THE POWER OF STYLE BY MAYUR
TRW
FABRICS
THAT SUIT EVERY OCCASION FROM
THE BOARDROOM TO THE BANQUET.
MAYUR
STARS KI PASAND
RSWM Ltd. (Fabric Division), an LNJ Bhilwara Group Company
LNJ Nagar, Mordi, District - Banswara - 327001, Rajasthan, INDIA
Tel. No. +91-2961-231230, 231630, 231316
Fax No. +91-2961-231250 | Website: www.mayurfabrics.in